R.N.I. No. 56386/92 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल सं. /316/2022/2024

लघु उद्योग, स्वरोजगार व प्रबन्ध क्षेत्रों में मार्गदर्शक

उद्यमिता

ISSN : 0971-6211
वर्ष : 01 अंक : 02

मार्च 2022
मूल्य 25/- मात्र

महिला उद्यमी विशेषांक

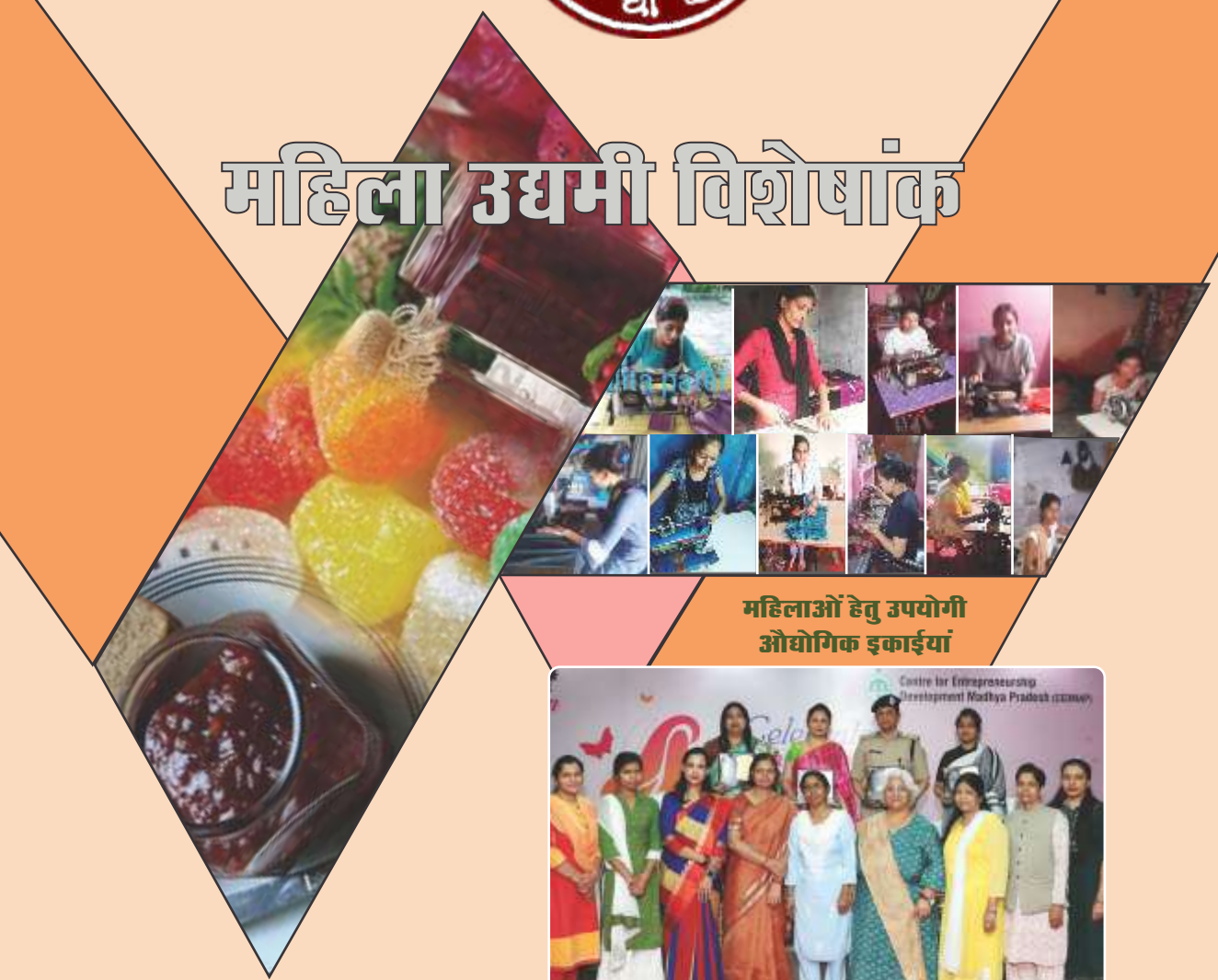

महिलाओं हेतु उपयोगी
औद्योगिक इकाईयां

ब्यूटी पार्लर की इकाई की योजना

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर
महिलाओं को मिली कई सौगातें

A MONTHLY PUBLICATION ON SMALL INDUSTRY, SELF EMPLOYMENT AND ENTREPRENEURSHIP

महत्वपूर्ण मंचों पर सेडमैप की मौजूदगी

सेडमैप इनोवेटिव ट्रेनर अवार्ड से सम्मानित

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने सेडमैप को इनोवेटिव ट्रेनर अवार्ड 2021 से सम्मानित किए जाने पर इंडियन सोसायटी फॉर ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट (आईएसटीडी) एवं डॉ. आर.जी. द्विवेदी,चेयरमेन, आईएसटीडी, भोपाल चेप्टर का धन्यवाद ज्ञापित किया।

वीएएसपीएल, भोपाल मैनेजमेंट एसोसिएशन में मुख्य आतिथ्य

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में वीएएसपीएल, भोपाल मैनेजमेंट एसोसिएशन के द्वारा आयोजित समारोह में उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

ब्रह्माकुमारी ध्यान केंद्र में विशिष्ट आतिथ्य

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई को 6 मार्च 2022 को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नीलबड़ ध्यान केंद्र में आयोजित एक अद्भुत कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

R.N.I. No. 56386/22 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल सं. /316/2022/2024

वर्ष : 01 अंक : 02

विवरणिका

मार्च 2022

- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को मिलीं कई सौगातें 06-10

- सेडमैप ने संवारी महिलाओं की जिंदगी 11-17
- महिलाओं के लिए उपयोगी औद्योगिक इकाईयों हेतु मार्गदर्शक जानकारियां 18-28

- ब्यूटी पार्लर की इकाई की योजना 29-31
- आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर मप्र की ग्रामीण महिलाएं 32-34
- जनजातीय बाचा गांव की महिलाओं ने बनाया ऊर्जा समृद्ध गांव 35-37

स्थायी स्तंभ

- सेडमैप समाचार 38-43

- सदस्यता फार्म एवं विज्ञापन दर 45
- लेखकों के लिए दिशा निर्देश 46
- रक्तदान कर कार्यकारी संचालक ने की सराहनीय पहल 47

- राष्ट्रीय औद्योगिक परिदृश्य 49-56
- कॉर्पोरेट जगत 57-60
- मध्यप्रदेश का औद्योगिक परिदृश्य 61-64

प्रधान संपादक

अनुराधा सिंघई

कार्यकारी संचालक

संपादक एवं प्रकाशन प्रमुख

उमाशंकर दुबे

आकल्पन एवं अक्षर संयोजन

दिनेश कुमार मधुकर राव गावड़े

प्रकाशन सहायक

राधा शर्मा

वितरण सहायक

संतोष सिंह

उद्यमिता समाचार पत्र में प्रकाशित लेख, सूचनाएं, विचार लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं तथा विभिन्न स्त्रोतों से लिये जाते हैं। इनमें किसी प्रकार की विसंगति अथवा त्रुटि हेतु उद्यमिता समाचार पत्र जिम्मेदार नहीं हैं।

उद्यमिता समाचार पत्र

सदस्यता शुल्क

अवधि	रूपये
एक वर्ष हेतु	250/-
दो वर्ष हेतु	495/-
तीन वर्ष हेतु	740/-
आजीवन सदस्यता	3300/-

नोट : पत्रिका के लिए मनी आर्डर, डिमांड ड्राफ्ट भेजते समय कृपया पत्रिका का नाम, अपना पूर्ण पता, मोबाईल नम्बर एवं ईमेल आईडी अवश्य लिखें।

संपादकीय एवं व्यावसायिक संपर्क

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप)

(सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विभाग, मध्य प्रदेश शासन के अधीन)

16-ए, अरेरा हिल्स, भोपाल- 462 011 म.प्र.

फोन : 0755 - 4000914 **ई-मेल :** cedmapusp@rediffmail.com

वेबसाइट : www.cedmapindia.mp.gov.in

स्वरोजगार स्थापना में बनें सहभागी

वर्तमान समय में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या और स्वरोजगार उसका सर्वश्रेष्ठ समाधान है। लोगों को स्वरोजगार स्थापना से संबंधित जानकारियां उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मासिक पत्रिका **उद्यमिता समाचार पत्र** का प्रकाशन किया जाता है। ऐसे सभी विशेषज्ञ जो इस क्षेत्र में मार्गदर्शक जानकारियां प्रदान कर सकते हैं, उनके लेखों, जानकारियों का उद्यमिता समाचार पत्र में सादर स्वागत है। उद्यमिता समाचार पत्र में लेख, सूचना, समाचार, विज्ञापन एवं प्रकाशन योग्य अन्य सामग्रियां उपरोक्त पते पर प्रेषित की जा सकती हैं.

पत्रिका के आगामी विशेषांकों की सूची

अप्रैल 2022 अंक **स्टार्ट अप विशेषांक**

के रूप में प्रकाशित किया जाएगा

आगामी अंक निम्न विषयों पर प्रकाशित किए जाएंगे

- पर्यटन उद्योग
- सूचना प्रौद्योगिकी
- चर्म उद्योग
- खादी एवं ग्रामोद्योग
- भवन निर्माण उद्योग
- ऑटोमोबाइल
- लौह एवं इस्पात उद्योग
- कृषि उद्योग
- नवकरणीय ऊर्जा उद्योग
- मत्स्योद्योग
- वस्त्रोद्योग
- ज्वैलरी उद्योग
- सेवा उद्योग
- प्लास्टिक उद्योग

सूचना : उद्यमिता समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री पर सर्वाधिकार प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशन की अनुमति लेना आवश्यक है तथा ऐसे लेखों के अंत में पत्रिका से संबंधित अंक का विवरण देते हुए उद्यमिता समाचार पत्र से साभार लिखना अनिवार्य होगा। ऐसा न किये जाने पर उद्यमिता समाचार पत्र द्वारा नियमानुसार कार्यवाही की जा सकती है।

महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए उनका सशक्तिकरण जरूरी

इंडियन होममेकर्स आंट्रप्रेन्योरशिप की रिपोर्ट 2021 के अनुसार ज्यादातर (62 प्रतिशत) गृहणियां खुद का व्यवसाय शुरू करने की इच्छा रखती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक गृहणियों द्वारा अपना व्यवसाय शुरू करने का सबसे बड़ा कारण आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की इच्छा और परिवार में आर्थिक रूप से योगदान करने की क्षमता है। रिपोर्ट में कहा गया है, 81 प्रतिशत गृहिणियों ने कहा कि खुद का व्यवसाय शुरू करने से वे अधिक आत्मविश्वास से आगे बढ़ सकेंगी। 78 प्रतिशत ने कहा कि इससे वे सशक्त हो सकेंगी जबकि 63 प्रतिशत ने कहा कि इससे वे समाज में अधिक सम्मानित महसूस करेंगी। यह रिपोर्ट एक सर्वेक्षण के आधार पर जारी की गई है, जिसमें देश के 13 अलग-अलग शहरों में 1,818 गृहणियों से उनकी आकांक्षाओं के बारे में पूछा गया। रिपोर्ट के अनुसार 73 प्रतिशत गृहणियां घर की जिम्मेदारियों के कारण समय की कमी से खुद का कारोबार शुरू नहीं कर पाती हैं, जबकि मार्गदर्शन की कमी के कारण 53 प्रतिशत और वित्तपोषण की कमी की वजह से 50 प्रतिशत गृहणियां अपने व्यवसाय शुरू नहीं कर पाती हैं।

महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए उनका सशक्तिकरण जरूरी है और यह उन्हें अपने दायित्वों को निभाते हुए अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने में समर्थ बनाएगा। जहां तक समाज व सरकारों का सवाल है तो स्थितियां अब तेजी से बदल रही हैं और आरक्षण एवं विशेष सुविधाएं उपलब्ध करा कर महिलाओं के आगे बढ़ने की राह निरंतर प्रशस्त की जा रही है। महिलाएं भी पीछे नहीं हैं और हर प्राप्त अवसर में अपनी काबिलियत सिद्ध करने में पीछे नहीं रही हैं। फिर भी आधी आबादी को अभी भी वो स्थान नहीं मिल पाया है, जिसकी वे हकदार हैं। लेकिन मंजिल अब ज्यादा दूर भी नहीं है महिलाओं ने बहुत कुछ हासिल कर लिया है बस सफलता अब उनसे चंद कदम ही दूर है।

अनुराधा सिंघई

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर

महिलाओं को मिलीं कई सौगातें

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के अवसर पर महिलाओं को कई सौगातें मिली हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने जहां महिला उद्यमियों के लिए अवसरों के नए द्वार खोलने के साथ ही मुख्यमंत्री महिला उद्यम शक्ति योजना प्रारंभ करने की घोषणा की है। केंद्रीय स्तर पर भी एक विशेष उद्यमिता प्रोत्साहन अभियान - समर्थ का शुभारंभ किया गया है वहीं सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) ने ऊषा इंटरनेशनल लिमिटेड की साझीदारी में अपने पोर्टल पर एक नई सेवा वर्टिकल स्टिचिंग और टेलरिंग सेवाएं लांच की हैं।

मप्र की सभी शासकीय कैंटीन का संचालन महिलाएं करेंगी

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि प्रदेश की सभी शासकीय कैंटीन का संचालन स्व-सहायता समूहों द्वारा किया जायेगा। इस ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रदेश में 127 दीदी कैफे का शुभारंभ किया गया है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने 9 मार्च 2022 को मंत्रालय में मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन में निर्मित दीदी कैफे का शुभारंभ करने के दौरान यह बात कही है। उन्होंने दीदी कैफे का अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि यह आनंद और गौरव का क्षण है कि हमारी बहनें स्वयं आत्म-निर्भर बनने के साथ आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दे रही हैं। स्व-सहायता समूह की बहनों की सफलता में मध्यप्रदेश की भी उन्नति और प्रगति निहित है। उन्होंने कहा कि आप ऐसे ही आगे बढ़ती रहें, सरकार सदैव हर संभव मदद के लिए तैयार है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्व-सहायता समूह की बहनों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि बहनें इतनी आत्मीयता और प्रेम से चाय और नाश्ता बनाती हैं कि इसका स्वाद स्वमेव ही बढ़ जाता है। इस कैफे के साथ हमारी बहनें भी सफलता के नये शिखर पर पहुंचें, यही कामना है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि हमारी सरकार ने संकल्प लिया है कि हर स्व-सहायता समूह की बहन की मासिक आमदनी कम से कम 10 हजार रुपए हो। उन्होंने कहा कि आनंद की बात है कि 127 दीदी कैफे खुलने से एक ही दिन में हमारी हजारों बहनें रोजगार से जुड़ गई हैं। स्व-सहायता समूह की बहनों की खुशी हमारे लिए सच्चा सुख है।

मुख्यमंत्री महिला उद्यम शक्ति योजना होगी प्रारंभ

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा है कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिये 4 महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये हैं। प्रदेश में महिला वित्त विकास निगम का सुदृढ़ीकरण किया जायेगा, दूसरा-प्रदेश में 100 करोड़ रुपए की लागत से मुख्यमंत्री नारी सम्मान कोष स्थापित होगा, तीसरा-मुख्यमंत्री महिला उद्यम शक्ति योजना प्रारंभ होगी और चौथा-इंदौर एवं भोपाल में महिला उद्यम प्रोत्साहन के लिये इंडस्ट्रियल पार्क बनाये जायेंगे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान एवं सांसद श्री जे.पी. नड्डा ने देवास में 8 मार्च 2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला स्व-सहायता समूहों को पोषण आहार संयंत्र की चाबी सौंपी। उन्होंने महिला स्व-सहायता समूहों को बैंक लिंकेज के माध्यम से 300 करोड़ रुपए का ऋण वितरित किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने महिला सशक्तिकरण में नया इतिहास रचा है। मध्यप्रदेश में आजीविका मिशन में महिलाओं के स्व-सहायता समूहों ने महिलाओं के सशक्तिकरण में क्रांति की है। आज महिला स्व-सहायता समूह पोषण आहार निर्माण, गणवेश निर्माण, फ्लाई एश से ईंट निर्माण, समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी, राशन दुकानों का संचालन आदि अनेक कार्य कर रहे हैं। देवास में प्रारंभ किये जा रहे पोषण आहार संयंत्र में महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा पोषण आहार बनाया जायेगा।

महिला स्वसहायता समूह बनाएंगी पोषण आहार

सांसद श्री जे.पी. नड्डा ने कहा कि महिला सशक्तिकरण में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। पहले ठेकेदारों के माध्यम से पोषण आहार बनता था। अब प्रदेश में महिला स्व-सहायता समूह यह कार्य करेंगे। यह महिला सशक्तिकरण को नई दृष्टि एवं दिशा देगा। महिलाएं यहां प्रतिवर्ष लगभग 800 करोड़ रुपए का कार्य करेंगी। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान इसके लिये बधाई के पात्र हैं। श्री नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महिला सशक्तिकरण के लिये वर्ष 2018 में पोषण अभियान की शुरूआत की थी। इसके माध्यम से बच्चों और महिलाओं को पोषण आहार प्रदान कर सशक्त किया जा रहा है। देश में 74 लाख स्व-सहायता समूह गठित किये गये हैं, जिनमें 8 करोड़ बहनें कार्य कर रही हैं। मध्यप्रदेश में साढ़े तीन लाख स्व-सहायता समूह में 40 लाख बहनें कार्य कर रही हैं। प्रदेश में आगामी 3 वर्षों में 25 लाख बहनें स्व-सहायता समूह से और जुड़ेंगी। महिला समूहों को एक वर्ष में 2525 करोड़ रुपए का ऋण न्यूनतम ब्याज दर पर दिया जायेगा। यह निश्चित रूप से महिला सशक्तिकरण को नये आयाम देगा।

मजदूर से बनी मालिक

प्रारंभ में पोषण आहार संयंत्र की अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा बाई परमार ने कहा कि पहले मैं मजदूर का कार्य करती थी। वर्ष 2017 से आजीविका मिशन में स्व-सहायता समूह बनाकर कार्य प्रारंभ किया। आज मैं मजदूर से मालिक बनी हूं। कार्यक्रम में श्रीमती दुर्गा बाई परमार एवं श्रीमती अंतर बाई चौहान ने संयंत्र में निर्मित पोषण आहार के पैकेट्स अतिथियों को भेंट किये। कार्यक्रम में सामाजिक कार्यकर्ता श्री मुरलीधर राव, प्रभारी मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया, कृषि मंत्री श्री कमल पटेल, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मंत्री श्री रामखेलावन पटेल, सांसद श्री वी.डी. शर्मा, सांसद श्री महेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री ज्ञानेश्वर पाटिल, विधायक श्रीमती गायत्री राजे पवार उपस्थित थीं।

महिलाओं को ऋण उपलब्ध कराने विशेष योजना शुरू

महिला-बाल विकास विभाग द्वारा महिलाओं को बैंको से होने वाली प्रक्रियागत परेशानी को ध्यान में रखते हुए, धनाभाव को दूर करने के लिए पंजाब नेशनल बैंक और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सहयोग से ऋण उपलब्ध कराने की विशेष योजना की शुरूआत की गई। इसके तहत प्रदेश के लगभग 7136 महिला समूहों को 180 करोड़ रुपए का ऋण उपलब्ध कराया गया।

भोपाल के जवाहर बाल भवन में 8 मार्च 2022 को आयोजित कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव श्री अशोक शाह ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर स्व-सहायता समूहों के हितग्राहियों को बैंक के सहयोग से 8 ऑटो और एक ई-रिक्शा की प्रतीकात्मक चाबी का वितरण किया। श्री शाह ने कहा कि जब तक महिला स्वयं अपने हित के लिए नहीं सोचेगी, समाज आगे आकर मदद नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि अपनी बात को स्पष्ट रूप से रखना होगा और अपने अधिकारों की जानकारी होना आवश्यक है।

संचालक महिला-बाल विकास डॉ. राम राव भोसले ने कहा कि वर्तमान में महिलाएं हर क्षेत्र में आगे हैं। कोरोना काल में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं ने अपने परिवार के साथ दूसरे परिवारों का भी हर तरह से ख्याल

रखा है। यह बात सिद्ध करता है कि महिलाएं हर परिस्थिति में काम कर सकती हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में अब तक लगभग 41 लाख से ज्यादा बच्चों को लाडली लक्ष्मी योजना का लाभ मिला है और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। डॉ. भोसले ने बताया कि जो पंचायत बेटियों के जन्म का उत्सव मनायेगी उसे लाडली फ्रेंडली घोषित किया जायेगा।

महिलाओं के लिए विशेष उद्यमिता प्रोत्साहन अभियान - समर्थ का शुभारंभ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2022 के अवसर पर, केंद्रीय एमएसएमई मंत्री श्री नारायण राणे ने एमएसएमई राज्य मंत्री श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा के साथ 07 मार्च 2022 को नई दिल्ली में महिलाओं के लिए एक विशेष उद्यमिता प्रोत्साहन अभियान – समर्थ का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सचिव (एमएसएमई), एएस एंड डीसी (एमएसएमई), अध्यक्ष (केवीआईसी), मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और महिला उद्यमी उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री नारायण राणे ने महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि एमएसएमई क्षेत्र महिलाओं के लिए अधिक अवसर प्रदान करता है। श्री राणे ने कहा कि एमएसएमई मंत्रालय अपनी योजनाओं और पहलों के माध्यम से महिलाओं के लिए कई अतिरिक्त लाभ प्रदान करके महिलाओं के बीच उद्यमिता संस्कृति विकसित करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। श्री राणे ने महिलाओं के लिए एक विशेष उद्यमिता प्रोत्साहन अभियान – समर्थ की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह अभियान मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है ताकि महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर और स्वतंत्र होने का अवसर प्रदान किया जा सके।

श्री भानु प्रताप ने कहा कि एमएसएमई मंत्रालय एमएसएमई क्षेत्र में महिलाओं की अधिक भागीदारी की कल्पना करता है और इसलिए उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत करेगा। महिलाएं आज जीवन के हर क्षेत्र में असाधारण और अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल कर रही हैं और उनका भविष्य क्या होगा, इसके बारे में वे आशावादी हैं। सरकार द्वारा बढ़ी हुई सहायक पहलों के साथ, हम एक साथ भविष्य में भारत के एक नए युग की शुरूआत कर सकते हैं।

समर्थ पहल से मिलने वाले लाभ

मंत्रालय की समर्थ पहल के अंतर्गत, इच्छुक और मौजूदा महिला उद्यमियों को निम्नलिखित लाभ उपलब्ध होंगे :

- मंत्रालय की कौशल विकास योजनाओं के अंतर्गत आयोजित मुफ्त कौशल विकास कार्यक्रमों में 20 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आवंटित की जाएंगी। इससे 7500 से अधिक महिलाएं लाभान्वित होंगी।

- मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित विपणन सहायता के लिए योजनाओं के अंतर्गत घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भेजे गए एमएसएमई व्यापार प्रतिनिधिमंडल का 20 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं के स्वामित्व वाले एमएसएमई को समर्पित होगा।
- एनएसआईसी की वाणिज्यिक योजनाओं पर वार्षिक प्रसंस्करण शुल्क पर 20 प्रतिशत की छूट।
- उद्यम पंजीकरण के अंतर्गत महिलाओं के स्वामित्व वाले एमएसएमई के पंजीकरण के लिए विशेष अभियान

इस पहल के माध्यम से, एमएसएमई मंत्रालय महिलाओं को कौशल विकास और बाजार विकास सहायता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है और ग्रामीण और उप-शहरी क्षेत्रों की 7500 से अधिक महिला उम्मीदवारों को वित्त वर्ष 2022-23 में प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके अलावा, हजारों महिलाओं को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और उनके विपणन के अवसर मिलेंगे।

प्रसंस्करण शुल्क पर 20 प्रतिशत की विशेष छूट

सार्वजनिक खरीद में महिला उद्यमियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए, वर्ष 2022-23 के दौरान एनएसआईसी की निम्नलिखित वाणिज्यिक योजनाओं पर वार्षिक प्रसंस्करण शुल्क पर 20 प्रतिशत की विशेष छूट की पेशकश की जाएगी :

- एकल बिंदु पंजीकरण योजना
- कच्चे माल की सहायता और बिल में छूट
- निविदा विपणन
- बी2बी पोर्टल एमएसएमईमाट.कॉम

जीईएम ने लांच की वर्टिकल स्टिचिंग और टेलरिंग सेवाएं

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, सरकारी ई-मार्केटप्लेस (जीईएम) ने ऊषा इंटरनेशनल लिमिटेड की साझीदारी में उसके सिलाई स्कूल प्रोग्राम के माध्यम से जीईएम पोर्टल पर एक नई सेवा वर्टिकल स्टिचिंग और टेलरिंग सेवाएं लांच की है। यह सेवा महिलाओं तथा महिला स्व सहायता समूहों (एसएचजी) के लिए शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में नए अवसर खोलेगी जिससे कि विभिन्न सरकारी विभागों तथा एजेन्सियों द्वारा दिए जाने वाले सिलाई ऑर्डरों के जरिये उनकी आजीविका आय बढ़ाई जा सके तथा महिला एमएसई उद्यमियों के लिए निर्धारित तीन प्रतिशत की खरीद के लक्ष्य को पूरा किया जा सके।

महिलाओं के लिए फॉरवर्ड मार्केट लिंक होगा सुनिश्चित

इस अवसर पर जीईएम के सीईओ श्री पी के सिंह ने कहा कि सार्वजनिक खरीद में महिला उद्यमियों का सामाजिक समावेशन जीईएम का मूलभूत मूल्य है तथा यह सेवा महिला उद्यमियों के लिए फॉरवर्ड मार्केट लिंकेज सुनिश्चित करेगी। इस पहल के तहत, जीईएम सरकारी खरीदारों के लिए सीवन तथा सिलाई सेवा के विकास में ऊषा सिलाई स्कूल (यूएसएस) के साथ गठबंधन करेगा तथा यूएसएस कार्यक्रम के साथ जुड़ी महिलाओं को सूचीबद्ध करने के लिए प्रक्रिया को सुगम बनाएगा। ऊषा तकनीकी विशेषज्ञ उपलब्ध कराएगी जो सिलाई को लेकर अपने ज्ञान को साझा करेंगे तथा क्षेत्रीय तथा स्थानीय स्तर पर विभिन्न ऑर्डरों को पूरा करने के लिए तकनीकी कौशलों के साथ महिलाओं को कौशल प्रदान करेंगे।

खरीदारों तक बनेगी महिलाओं की सीधी पहुंच

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में सिलाई सेवाएं प्रदान करने वाली महिला टेलर्स को उनकी सिलाई सेवाओं से बिचैलियों को बीच से हटा कर सीधे सरकारी खरीदारों को विपणन करने तथा ऑर्डर प्राप्त करने का शानदार अवसर प्राप्त होगा। संभावित खरीदार खरीद के निर्धारित तरीकों के माध्यम से वर्दी यूनिफॉर्म तथा कार्यालय की सजावट/एसेसरीज के लिए खोज करने, देखने, वहन करने तथा ऑर्डर देने में सक्षम होंगे।

जीईएम महिला उद्यमियों के क्षमता निर्माण तथा प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी सक्रियतापूर्वक काम करेगा। इसके अतिरिक्त, सरकारी खरीदारों को पोर्टल पर सीवन तथा सिलाई सेवाओं की उपलब्धता के बारे में मार्केटप्लेस में प्रणाली सृजित मैसेज/अलर्ट के माध्यम से संवेदनशील बनाया जाएगा। जीईएम महिला उद्यमियों को डैशबोर्ड उपलब्ध कराएगा जो अपलोड किए गए उत्पादों की संख्या, प्राप्त तथा पूरा किए गए ऑर्डर का मूल्य तथा मात्रा के बारे में वास्तविक समय जानकारी प्रदान करेगा। यूएसएस से प्राप्त इनपुट तथा सहायता के साथ, जीईएम महिला उद्यमियों तथा यूएसएस कर्मचारियों के लिए स्थानीय कंटेंट में ऑनलाइन शिक्षण संसाधन विकसित करेगा जिससे कि उपयोगकर्ताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इसके अतिरिक्त, जीईएम महिला उद्यमियों तथा यूएसएस कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन वेबिनार आयोजित करेगा तथा सीखने के निर्बाधित अनुभव के लिए वीडियो, ईबुक्स, मैनुअल तथा अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के भंडार का विकास करेगा।

सीवन और सिलाई सेवाएं

सामाजिक समावेशन के इसके मूलभूत मूल्यों में होने के कारण, सरकारी ई मार्केटप्लेस (जीईएम) उन विक्रेताओं तथा सेवा प्रदाताओं से सहभागिता बढ़ाने पर केंद्रित है जिन्हें सरकारी बाजार में पहुंच प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सीवन और सिलाई सेवाओं की शुरूआत इस दिशा में एक अन्य उल्लेखनीय कदम है। सरकारी ई-मार्केटप्लेस राज्य सरकार तथा केंद्र सरकार के संगठनों द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं की खरीद के लिए वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत स्थापित एक 100 प्रतिशत सरकारी स्वामित्व वाली धारा 8 कंपनी है।

ग्रामीण छात्राओं के लिए दूरसंचार परीक्षण

(ईएमआई/ईएमसी) पर कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

8 मार्च 2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, दूरसंचार इंजीनियरिंग केंद्र (टीईसी) ने उद्योग जगत के सहयोग से ग्रामीण पृष्ठभूमि की छात्राओं के लिए एक कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। ईएमसी परीक्षण और प्रशिक्षण केंद्र ने एक सप्ताह की अवधि के लिए ईएमआई / ईएमसी परीक्षण पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर इस कार्यक्रम की शुरूआत की है। इसके अलावा, कई अन्य प्रयोगशालाओं ने पहले ही दूरसंचार परीक्षण के क्षेत्र में प्रशिक्षण देने की इच्छा

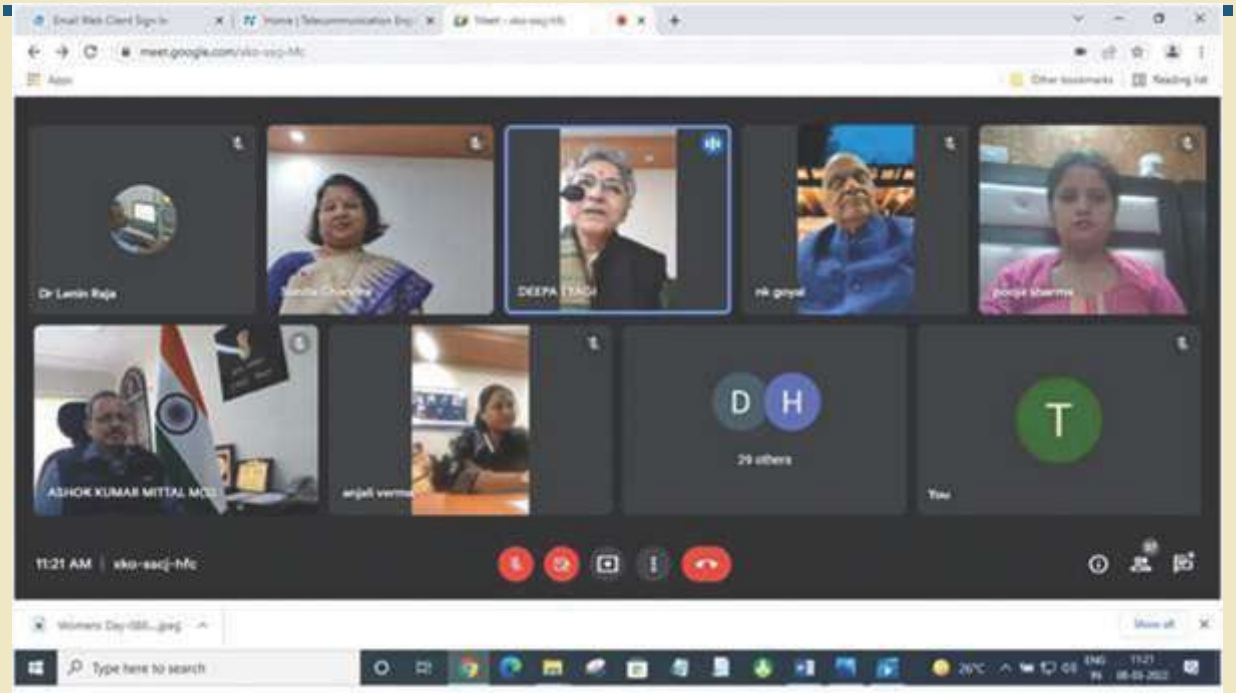

दिखाई है, जिसे बाद में टीईसी द्वारा आगे बढ़ाया जाएगा।

08.03.2022 से शुरू इस एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए विभिन्न राज्यों के दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों की 25 छात्राओं ने नामांकन कराया। भारत सरकार ने दिनांक 5 सितंबर 2017 के अधिसूचना संख्या जीएसआर 1131 (ई) के माध्यम से संचार उपकरण के अनिवार्य परीक्षण और प्रमाणन (एमटीसीटीई) को अधिसूचित किया है। इस योजना के तहत, सभी दूरसंचार उपकरण, चाहे आयातित या स्वदेशी रूप से निर्मित हों, सुरक्षा, ईएमआई/ईएमसी और तकनीकी आवश्यकताओं के लिए भारत में उन्हें शुरू करने/बिक्री से पहले उनका परीक्षण और प्रमाणित किया जाना है। दूरसंचार इंजीनियरिंग केंद्र (टीईसी) इस योजना के कार्यान्वयन के लिए नामित प्राधिकरण है। चरण-तीन और चरण-चार के लिए एमटीसीटीई को 22.09.2021 दिनांक वाले पत्र द्वारा अधिसूचित किया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम में श्री अशोक कुमार मित्तल, सदस्य (सेवाएं), दूरसंचार विभाग (डीओटी), भारत सरकार मुख्य अतिथि के रूप में और श्रीमती दीपा त्यागी, वरिष्ठ डीडीजी टीईसी के प्रमुख के रूप में उपस्थित थे। सत्र का संचालन श्रीमती सुनीता चंद्रा, डीडीजी (कार्मिक), टीईसी और श्री प्रशांत कुमार, डीडीजी (एमटीसीटीई), टीईसी द्वारा किया गया।

महिलाओं के प्रोत्साहित करने के लिए इस तरह का प्रशिक्षण प्रशंसनीय

श्री अशोक कुमार मित्तल, सदस्य (सेवाएं), डीओटी ने उल्लेख किया कि टीईसी द्वारा महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशंसनीय है और टीईसी से भविष्य में इस तरह की नेक पहल करने का आग्रह किया।

श्रीमती दीपा त्यागी, वरिष्ठ डीडीजी (टीईसी) ने अपने संबोधन में उल्लेख किया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य ईएमसी (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक कम्पैटिबिलिटी) के आला क्षेत्र में महिला प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान करना है, जो वर्तमान में भारतीय परिदृश्य में बहुत अधिक आकर्षण और महत्व प्राप्त कर रहा है। एमटीसीटीई पहल की शुरूआत के साथ, ईएमआई/ईएमसी परीक्षण के क्षेत्र में कुशल कर्मियों की मांग में वृद्धि हुई है। टीईसी ने आत्मनिर्भर भारत और लैंगिक समानता के उद्देश्य के लिए अवसर और सकारात्मक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए उद्योग के सहयोग से यह प्रयास शुरू किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य रिकॉर्डेड/लाइव वीडियो सत्रों के माध्यम से परीक्षण उपकरण और परीक्षण पद्धतियों को संभालने पर दृश्य सहायता और व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना है, जो विषय में बेहतर अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। इसके अलावा, यह प्रशिक्षण इच्छुक उम्मीदवारों को दूरसंचार परीक्षण क्षेत्र में अच्छे कैरियर के अवसर प्रदान करने में उपयोगी हो सकता है।

सेडमैप ने संवारी महिलाओं की जिंदगी

उद्यमिता विकास केंद्र मप्र (सेडमैप) के द्वारा पॉवर ग्रिड कार्पोरेशन के सहयोग से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की

महिला प्रतिभागियों की सफलता की कहानी

उद्यमिता विकास केंद्र मप्र (सेडमैप) के द्वारा पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के सहयोग से दमोह जिले में तीन माह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए रेडीमेड गारमेंट्स मेकिंग, ब्यूटी पार्लर, मोबाइल रिपेयरिंग, मोटर वाइंडिंग जैसे स्वरोजगार में सहयोगी विधाओं में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यहां प्रस्तुत है इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की लाभार्थी महिलाओं की जिला समन्वयक श्री पी.एन. तिवारी द्वारा प्रस्तुत सफलता की कहानी :

अनुभव ने बढ़ाई आमदनी

दमोह की रहने वाली डॉली विश्वकर्मा ने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। कहीं अच्छी जॉब नहीं मिल पाने के कारण उन्होंने खुद का

कोई व्यवसाय शुरू करने के बारे में सोचा। इसके बाद उन्होंने छोटे स्तर पर ब्यूटी पार्लर का काम शुरू किया लेकिन अनुभव नहीं होने के कारण उन्हें ज्यादा मुनाफा नहीं हो पा रहा था। इस बीच उन्हें पता चला कि जिले में सेडमैप के द्वारा ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने इस कार्यक्रम में अपना एडमिशन करवाया और तीन माह का प्रशिक्षण प्राप्त किया और घर पर ही ब्यूटी पार्लर प्रारंभ किया और दुल्हन मेकअप, साइड मेकअप जैसे सौंदर्य प्रसाधन के काम शुरू किए। डॉली का कहना है कि प्रशिक्षण के बाद न केवल उनका व्यवसाय व्यवस्थित हुआ है बल्कि पहले की अपेक्षा उनकी आय भी बहुत बढ़ गई है। डॉली ने बताया कि दो भाई, माता-पिता सहित उनके परिवार में पांच सदस्य हैं। पिता फर्नीचर का काम करते हैं और मां सिलाई का काम करती हैं।

दूर हुई बेरोजगारी

एमपी नगर, दमोह की रहने वाली अनुराधा पटेल ने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है। अनुराधा के पति राममनोहर पटेल एमआर का कार्य करते हैं। परिवार में एक बच्चे सहित कुल तीन सदस्य हैं। अनुराधा का कहना है कि मेरे पति जब अपनी जॉब पर चले जाते थे तो मैं अकेली घर में बोर हो जाती थी और सोचती थी कि कुछ ऐसा काम किया जाए कि घर पर ही रह कर कुछ आमदनी भी

हो जाए और टाइम भी निकल जाए। तभी मेरे पति ने मुझे बताया कि पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन एवं सेडमैप के द्वारा नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है तथा यह प्रशिक्षण तीन माह का है, तो मैंने इसमें अपना नाम लिखवाया और प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मैंने घर पर ही सिलाई कर रेडीमेड गारमेंटस बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया। अब रेडीमेड गारमेंटस एवं बेग मेकिंग के जरिए मुझे अच्छी आमदनी होने लगी है तथा मेरी बोरियत भी दूर हो गई है और बेरोजगारी भी।

साकार हुई स्वरोजगार की कल्पना

दमोह के श्रीवास्तव कॉलोनी की रहने वाली कल्पना गोंड के परिवार में पति, दो बच्चों समेत चार सदस्य हैं। पति तहसील कार्यालय में सर्विस करते हैं। कल्पना बी.ए., बी.एड. की पढ़ाई

करने के बाद स्टेनोग्राफी सीख रही हैं। कल्पना आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनना चाहती थीं लेकिन इस दिशा में आगे कैसे बढ़ा जाए इस संबंध में उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं थी। जानकारी की कमी उनके स्वावलंबन की राह में एक बड़ी बाधा थी। फिर एक सहेली से मिली जानकारी के आधार पर उन्होंने सेडमैप एवं पॉवर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होकर तीन माह का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे वे ब्यूटी पार्लर व्यवसाय के बारे में बहुत कुछ सीख गईं। फिर उन्होंने घर पर ही हेयर स्पा, फेसियल आदि का कार्य शुरू कर दिया। जिससे उन्हें सम्मानजनक आय अर्जित होने लगी है।

पति बना प्रेरणा

सुभाष कॉलोनी, दमोह की रहने वाली साहिबा बी के पति शाकिर खान लाइट डेकोरेशन की दुकान पर काम करते हैं। साहिबा कॉमर्स से ग्रेजुएशन कर रही हैं। घर में पांच सदस्य हैं। साहिबा का कहना है कि उन्हें अपने पति के माध्यम से जानकारी मिली की सेडमैप एवं पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें मोबाइल रिपेयरिंग, मोटर वाइंडिंग एवं ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसके बाद उन्होंने सेडमैप के कार्यालय आकर प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में पूरी जानकारी हासिल की, जिसमें बताया गया कि तीन माह का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पूर्णत: नि:शुल्क है। साहिबा ने अपना फार्म भरा और प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के उपरांत घर पर ही ब्यूटी पार्लर का कार्य प्रारंभ कर दिया और विवाह समारोहों में मेंहदी, साइड मेकअप, ब्राइडल मेकअप के काम शुरू कर दिए। यह व्यवसाय उनके आय अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आगे वे जरूरतमंद महिलाओं को इस कार्य का नि:शुल्क प्रशिक्षण देने का इरादा रखती हैं।

सेडमैप से मिली दिशा ने सुधारी दशा

पटेरा जिला दमोह की निवासी जनक नंदनी राठौर के परिवार में माता, पिता, दो भाई, सहित कुल पांच सदस्य हैं। जनक नंदनी जूलॉजी विषय लेकर कॉलेज की पढ़ाई कर रही हैं। उन्होंने बताया कि कहीं जॉब नहीं मिल पाने के कारण घर के काम-काज करने के बाद मैं फ्री बैठी रहती थी। फिर मैंने व्यवसाय करने का सोचा, उसमें अनुभव नहीं था, इसलिए मुनाफा नहीं हो पा रहा था। फिर मुझे सेडमैप के द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली। सेडमैप के प्रशिक्षक ने मुझे बताया कि तीन माह के इस

प्रशिक्षण कार्यक्रम में रेडीमेड गारमेंट मेकिंग एवं ब्यूटी पार्लर का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है साथ ही व्यवसाय शुरू करने के लिए लोन के बारे में भी मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान हमें बताया गया कि जीवन में अग्रसर कैसे होना है। प्रशिक्षण के उपरांत मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट का कार्य प्रारंभ कर दिया। अब मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंटस मेकिंग का काम शुरू कर दिया है जिससे मुझे अच्छी आमदनी हो रही है और मैंने आगे की पढ़ाई भी जारी रखी है।

जीवन में आगे बढ़ने की खुली राह

पटेरा, जिला दमोह की निवासी प्राची चौरसिया के परिवार में कुल चार सदस्य हैं। पिताजी का नाम संतोष चौरसिया है और वे किराने की दुकान पर काम करते हैं। मां हाउस वाइफ है तथा छोटा भाई और बहन अभी पढ़ाई कर रहे हैं। दसवीं तक पढ़ाई करने के बाद प्राची जॉब करने के बारे मे सोच रही थी तभी उन्हें सेडमैप और पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली। तीन माह के प्रशिक्षण के उपरांत उन्होंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग का काम शुरू कर दिया है। इससे होने वाली आय उन्हें जीवन में आगे बढ़ने व आगे की पढ़ाई जारी रखने में मददगार साबित हो रही है।

सेडमैप आकर खत्म हुई नौकरी की तलाश

अंजली विश्वकर्मा दमोह के पटेरा जिले में कलेही माता मंदिर के पास रहती हैं। परिवार में कुल चार सदस्य हैं। पिता श्री विनोद विश्वकर्मा चाय-नाश्ते की खुद की कैंटीन का संचालन करते हैं। मां हाउस वाइफ हैं, छोटा भाई अभी पढ़ाई कर रहा है। अंजली ने बताया कि वर्तमान में मैं पैथोलॉजी का कोर्स कर रही हूं। मैं जॉब की तलाश कर रही थी। तभी मुझे पता चला कि सेडमैप और पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के द्वारा तीन माह का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। मैंने इसमें अपना नाम लिखवा दिया फिर तीन माह तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के उपरांत मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग का कार्य प्रारंभ कर दिया है। इस कार्य से होने वाली आय से मुझे अपनी पढ़ाई जारी करने में भी मदद मिलती है।

परिवार बना प्रेरणा

पटेरा, जिला दमोह की निवासी सोनम चौरसिया के परिवार में माता, पिता, एक भाई चार बहनें हैं। पिताजी कोल्ड ड्रिंक्स के विक्रय का काम करते हैं। सोनम ने बताया कि - मैंने बी.एससी. तक पढ़ाई की है। चूंकि मेरे पिता स्वयं एक बिजनेसमैन हैं इसलिए खुद का उद्योग / व्यवसाय करने में मेरी स्वाभाविक रूचि है और इस विषय में मैं विचार कर रही थी तथी फिर मुझे सेडमैप के द्वारा पता चला कि पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के सहयोग से रेडीमेड गारमेंट मेकिंग, ब्यूटी पार्लर सहित कई ट्रेडों में प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में लोन की जानकारी भी दी जाएगी। मैंने तुरंत इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में एडमिशन लिया। प्रशिक्षण के दौरान हमें न सिर्फ अपने ट्रेड से संबंधित बल्कि व्यवसाय के सफल संचालन से संबंधित कई जानकारियां मिलीं। प्रशिक्षण के उपरांत मैंने घर पर ही काम शुरू किया जिससे मिलने वाली आय से मैं संतुष्ट हूं।

जरूरतें हुईं पूरी

चौरसिया मोहल्ला, दमोह की निवासी मिनी चौरसिया के परिवार में माता-पिता, दो भाई सहित कुल 5 सदस्य हैं। पिता जी स्वयं का व्यवसाय करते हैं। मिनी वर्तमान में बी.एससी. की पढ़ाई कर रही हैं। उन्होंने बताया पढ़ाई व घर के काम करने के बाद मेरे पास इतना पर्याप्त समय उपलब्ध रहता था जिसमें कोई दूसरा काम किया जा सके। मैंने व्यवसाय के बारे में सोचा। फिर मुझे उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) के द्वारा पता चला कि पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के सहयोग से कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जानकारी मिली कि यह प्रशिक्षण तीन माह का है जिसमें ब्यूटी पार्लर, रेडीमेड गारमेंट मेकिंग के काम सिखाए जाएंगे। प्रशिक्षण से हमें

लाइफ में अग्रसर कैसे होना है यह भी सिखाया गया। प्रशिक्षण में शामिल होने से मुझे सबसे ज्यादा फायदा यह हुआ कि अब मैं अपनी जरूरत के सामानों का खर्च खुद से वहन कर लेती हूं।

जीवन को मिली नई रोशनी

सिविल वार्ड, दमोह निवासी रोशनी सिंह ठाकुर ने बारहवीं तक की पढ़ाई की है। पति नन्हें भाई सिंह ठाकुर सरकारी नौकरी करते हैं। पति के माध्यम से ही उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली। पति ने बताया कि जिले में सेडमैप और पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के द्वारा ब्यूटी पार्लर, मोबाइल रिपेयरिंग, मोटर वाइंडिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसके बाद रोशनी ने सेडमैप कार्यालय जाकर प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में पूरी जानकारी ली। प्रशिक्षण के उपरांत घर पर ही ब्यूटी पार्लर का कार्य प्रारंभ किया। वे शादी-विवाह समारोहों में मेंहदी, ब्राइडल मेकअप के साथ ही साइड मेकअप आदि के कार्य करती हैं। उनका कहना है कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से उनके जीवन में एक नई रोशनी आई है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम से मिला मोटीवेशन

जवाहर वार्ड, हटा निवासी रागनी प्रजापति ने बताया कि उनके परिवार में सात सदस्य हैं। पिता दयाराम प्रजापति प्रायवेट काम करते हैं, मां हाउस वाइफ हैं, एक छोटा भाई है जो पढ़ाई कर रहा है। पढ़ाई करने के बाद मैं जॉब की तलाश कर रही थी तभी मुझे उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) व पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली। प्रशिक्षण के दौरान मुझे मोटीवेट किया गया साथ ही लोन के बारे में भी जानकारी दी गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद मैंने घर से ही रेडीमेड गारमेंट का काम प्रारंभ कर दिया है, जिससे होने वाली आय से सिलाई के साथ ही मैं अपनी पढ़ाई भी कर रही हूं।

स्वरोजगार से मिला संतोष

बालाजी वार्ड हटा निवासी सृष्टि सेन ने बताया कि उनके परिवार में माता, पिता, दो भाई, तीन बहन सहित सात सदस्य हैं। पिता प्रायवेट स्कूल में शिक्षक हैं। मैंने पोस्टग्रेजुएशन किया है। मुझे जॉब तो मिल रहे थे पर योग्यता के अनुसार वेतन नहीं मिल पा रहा था, जिसके कारण मैंने स्वयं का व्यवसाय करना ही उचित समझा। सेडमैप से प्रशिक्षण लेने के पश्चात मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग का कार्य शुरू कर दिया है। सृष्टि का कहना है कि मुझे लगता है कि रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटकने से बेहतर स्वरोजगार की राह अपनाना ही है।

मन की निराशा हुई दूर

बालाजी वार्ड, हटा निवासी ललिता पटेल के परिवार में माता-पिता, दो भाई, तीन बहन सहित सात सदस्य हैं। पिता श्री धनीराम पटेल कृषि का काम करते हैं। ललिता ने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है। पढ़ाई करने के बाद भी अच्छा जॉब नहीं मिल पाने के कारण उनके मन में निराशा का भाव उत्पन्न हो गया था। इसके बाद व्यवसाय भी शुरू किया पर उसमें भी पर्याप्त मुनाफा नहीं हो रहा था। इस दौरान सेडमैप के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली। प्रशिक्षण के उपरांत मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग का काम प्रारंभ कर दिया है और इससे मुझे संतोषजनक आय भी होने लगी है। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रशिक्षण से मेरे मन की निराशा दूर हो गई है। अब मैं अपनी पढ़ाई का खर्च भी खुद वहन कर रही हूं।

सुदूर गांव में पहुंचा सेडमैप

ग्राम तिदोनी, जिला दमोह निवासी क्रांति ठाकुर के परिवार में माता-पिता, भाई, बहन समेत कुल पांच सदस्य हैं। पिता रगबर सिंह लोधी कृषि का काम करते हैं। क्रांति ने बताया कि वे वर्तमान में बारहवीं कक्षा में पढ़ रही हैं। उन्होंने कहा - मैं हमेशा यह सोचती रहती थी कि ऐसा क्या किया जाए कि परिवार की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार आए। मेरे गांव से दमोह बहुत दूर है, इसलिए मैं कुछ सीखने के लिए दमोह नहीं आ सकती थी। फिर मुझे अपनी सहेली के माध्यम से यह पता चला कि सेडमैप के द्वारा पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। सबसे बड़ी बात यह प्रशिक्षण मेरे गांव में ही दिया जा रहा था, इसीलिए मैं इसमें शामिल हो पाई। प्रशिक्षण के उपरांत मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग का काम प्रारंभ कर दिया है। अब मैं अपने घर के काम के साथ ही रेडीमेड गारमेंट बनाने का काम भी कर रही हूं जिससे पारिवारिक दायित्व निभाने के साथ ही आय भी अर्जित हो रही है।

घर बैठे हो रही कमाई

ग्राम तिदौनी, जिला दमोह निवासी रजनी बाई ठाकुर ने आठवीं कक्षा तक पढ़ाई की है। उन्होंने बताया कि उनके परिवार में दो बच्चे सहित चार सदस्य हैं। पति श्री मेघराज सिंह ठाकुर कृषि का कार्य करते हैं। मैं घर पर अकेली रहती हूं। घर के काम-काज से फ्री होकर कुछ काम करने की सोच रही थी तभी मुझे पता चला कि पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के माध्यम से सेडमैप के द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें रेडीमेड गारमेंट्स मेकिंग एवं ब्यूटी पार्लर का तीन माह का प्रशिक्षण दिया जाएगा। मैंने भी इसमें एडमिशन लिया और प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत घर पर ही गारमेंट मेकिंग का काम शुरू किया। अब घर बैठे मुझे अच्छी आमदनी हो रही है।

पिता के पदचिन्हों पर

जवाहर वार्ड, हटा निवासी तुलसी नामदेव के पिता खूबचंद नामदेव सिलाई का कार्य करते हैं, जिसके कारण तुलसी के मन में इस पेशे के प्रति शुरू से ही स्वाभाविक लगाव था। तुलसी ने बताया कि मेरे परिवार में पांच सदस्य हैं। वर्तमान में बारहवीं कक्षा की पढ़ाई कर रही हूं। घर का काम करने के बाद मैं फ्री बैठे रहती थी। इस समय को अर्थोपार्जन में परिवर्तित करने के लिए मैंने सेडमैप और पॉवर ग्रिड के इस कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान हम लोगों को स्वरोजगार की कई बारीकियां सिखाई गईं। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मैंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट के निर्माण का काम शुरू कर दिया है साथ ही पढ़ाई भी करती हूं।

खुद उठा रही हैं अपनी पढ़ाई का खर्च

हटा, जिला दमोह की निवासी मोहनी चक्रवर्ती के परिवार में माता-पिता, एक भाई, दो बहन सहित कुल 6 सदस्य हैं। पिता श्री मुन्नालाल चक्रवर्ती शासकीय शिक्षक हैं। मोहनी बी.ए. की पढ़ाई कर रही हैं। उन्हें यह पता चला कि सेडमैप एवं पॉवरग्रिड कॉर्पोरेशन के द्वारा तीन माह का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रारंभ किया जा रहा है, जिसमें रेडीमेड गारमेंट मेकिंग एवं ब्यूटी पॉर्लर का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने तुरंत इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपना एडमिशन ले लिया। प्रशिक्षण के उपरांत उन्होंने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट बनाने का काम शुरू कर दिया। अब उन्हें अपने व्यवसाय से लाभ होने लगा है जिसके कारण वे अपनी पढ़ाई का खर्च भी खुद उठाने लगी हैं।

लाइफ में आगे बढ़ने का मिला कौशल

बालाजी वार्ड, हटा की निवासी श्रुती सोनी एवं उनकी बहन श्रेया सोनी ने भी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया है। इनके परिवार में माता-पिता, भाई-बहन सहित कुल 5 सदस्य हैं। पिता श्री कमलेश ज्वेलरी की दुकान पर काम करते हैं। श्रुति वर्तमान में बीएससी और श्रेया एम.एससी. की पढ़ाई कर रही हैं। दोनों बहनों ने बताया कि हम हमेशा यही सोचते रहते थे कि ऐसा क्या किया जाए कि हम व्यस्त भी रहें और कुछ इनकम भी हो जाए।

हमारा गांव दमोह से बहुत दूर है, इसलिए हम कुछ सीखने के लिए दमोह नहीं जा सकते थे। फिर सहेली के माध्यम से पता चला कि सेडमैप और पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह प्रशिक्षण तीन माह का है और प्रशिक्षण गांव में ही दिया जा रहा है। सेडमैप की इस सुविधा के कारण हम दोनों ने तुरंत ही प्रशिक्षण में एडमिशन लिया और तीन माह की सफल ट्रेनिंग के बाद आज अपने घर से ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग का कार्य कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण से हमें सबसे ज्यादा फायदा यह हुआ कि हम घर के काम-काज के साथ ही अपना व्यवसाय भी संचालित कर रहे हैं। पॉवरग्रिड कॉर्पोरेशन एवं सेडमैप ने हमें लाइफ में आगे बढ़ने के लिए एक कौशल प्रदान किया है।

साथ-साथ चल रही पढ़ाई और सिलाई

चंडी जी वार्ड दमोह की निवासी यशस्वी रिछारिया के परिवार में 6 सदस्य हैं। पिता आर्मी से रिटायर होने के बाद कृषि का काम करते हैं तथा मां हाउस वाइफ हैं। यशस्वी ने बताया कि वे वर्तमान में बी.एससी. की पढ़ाई कर रही हैं। मुझे इस प्रशिक्षण के बारे में जानकारी मिली तो मैंने तुरंत इसमें एडमिशन ले लिया। प्रशिक्षण के उपरांत मैंने अपने घर से ही रेडीमेड गारमेंट निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया है। सिलाई के काम के साथ-साथ मैं अपनी पढ़ाई भी करती रहती हूं। इस कार्य से होने वाली आय से मुझे अपनी पढ़ाई में भी मदद मिल रही है।

प्रशिक्षण ने खोली तरक्की की राह

जवाहर वार्ड, हटा जिला दमोह निवासी नंदनी प्रजापति के पिता श्री पूरन लाल ईंट के ठेकेदार हैं। नंदनी वर्तमान में बी.कॉम. की पढ़ाई कर रही हैं। पहले उन्हें लगता था कि कम पढ़ाई के साथ जीवन में सम्मानजनक तरीके आजीविका अर्जित करना मुश्किल काम है लेकिन प्रशिक्षण के बाद उनकी यह विचारधारा बदल गई है। सहेली के माध्यम से जानकारी मिलने के बाद उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेकर सिलाई का काम सीखा है और अब घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग के काम के जरिए आय अर्जित कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सेडमैप एवं पॉवरग्रिड कॉर्पोरेशन के प्रशिक्षण से ही मेरा यह विकास संभव हो सका है।

प्रशिक्षण से दूर हुआ कनफ्यूजन

तिदोनी, जिला दमोह निवासी प्रीति काछी के परिवार में पांच सदस्य हैं। पिता टीकाराम काछी व बड़ा भाई खेती-किसानी का काम करते हैं। मां हाउसवाईफ हैं तथा छोटा भाई अभी पढ़ाई कर रहा है। स्कूल की पढ़ाई के बाद से ही प्रीति का झुकाव अपना स्वयं का कोई व्यवसाय शुरू करने की ओर था लेकिन उन्हें इसकी शुरुआत कैसे की जाए और संचालन कैसे किया जाए इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। इस दौरान उन्हें इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी मिली प्रशिक्षण से मिली दिशा ने उनकी मनोदशा ही बदल दी।

पहले उन्हें व्यवसाय प्रारंभ करने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी लेकिन आज वे न सिर्फ अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ कर चुकी हैं बल्कि उसका सफलतापूर्वक संचालन भी कर रही हैं। उन्होंने अपने घर पर ही रेडीमेड गारमेंट मेकिंग के निर्माण का काम प्रारंभ किया है।

सास बनी सूत्रधार

तिदोनी दमोह की रहने वाली दमयन्ती रैकवार ने दसवीं कक्षा तक

पढ़ाई की है। परिवार में सास-ससुर, पति बच्चे सहित कुल पांच सदस्य हैं। पति श्री राजेश रैकवार सागर में कैंटीन संचालन का काम करते हैं। दमन्ती का कहना है कि उन्हें यह प्रशिक्षण दिलवाने में सास की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सास ने प्रशिक्षण की जानकारी जुटाने से लेकर तीन माह तक प्रशिक्षण प्राप्त करने में बहुत सहयोग किया। तीन माह के प्रशिक्षण के बाद दमयंती ने कपड़ों की सिलाई का काम घर पर ही शुरू कर दिया है और महिलाओं के पेटीकोट, ब्लाउज सहित बैग आदि का भी निर्माण कार्य सफलतापूर्वक कर रही हैं। दमयन्ती का कहना है कि इस तरह के प्रशिक्षण कार्य आगे और भी जारी रहने चाहिए, इससे महिलाओं को बहुत मदद मिल सकती है।

स्वावलंबन की चाह, सेडमैप में मिली राह

ग्राम तिदोनी, जिला दमोह निवासी अंजना कोरी बॉयोलॉजी सब्जेक्ट के साथ ग्रेजुएशन पूरा कर चुकी हैं और वर्तमान में बीएड कर रही हैं। पिता श्री रामनरेश कोरी खेती किसानी का काम करते हैं, मां हाउस वाइफ हैं। छोटा भाई-बहन अभी पढ़ाई कर रहे हैं। परिवार में कुल 6 लोग हैं। अंजना ने बताया कि स्वावलंबी बनने की चाह उन्हें इस प्रशिक्षण की ओर खींच लाई। वे आगे की पढ़ाई तो करना चाहती हैं लेकिन इसका आर्थिक व्यय वे खुद से ही उठाना चाहती हैं और उनकी यह मनोकामना सेडमैप एवं पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से पूरी हुई। तीन माह तक रेडीमेड गारमेंटस का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अब वे अपने घर पर ही व्यवसाय शुरू कर चुकी हैं। साथ ही पढ़ाई भी जारी है। व्यवसाय से होने वाली आय से वे अपनी पढ़ाई का खर्च खुद उठा लेती हैं।

दूसरों को भी सिखाऊंगी की सेडमैप से मिला हुनर

पथरिया, जिला दमोह की निवासी काजल विश्वकर्मा के परिवार में माता-पिता, दो भाई सहित कुल पांच सदस्य हैं। पिता श्री किशोर विश्वकर्मा फर्नीचर का काम करते हैं और मां घर संभालतीं हैं। काजल ने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है, उनका इरादा आगे अपनी पढ़ाई जारी रखने का है। काजल का कहना है कि इस तरह के प्रशिक्षण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में बहुत मददगार हो सकते हैं। मैं भी इस प्रशिक्षण के

बाद एक ऐसा इंस्टीट्यूट शुरू करना चाहती हूं, जिसमें अन्य लोगों को भी प्रशिक्षण दिया जा सके। सेडमैप एवं पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन से मिला यह हुनर मैं दूसरे लोगों तक पहुंचाना चाहती हूं। काजल ने कहा कि यह प्रशिक्षण उन्हें अपने घर के नजदीक ही मिल जाता है, इसके लिए उन्हें ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ता जो उनके लिए अत्यंत सुविधाजनक है।

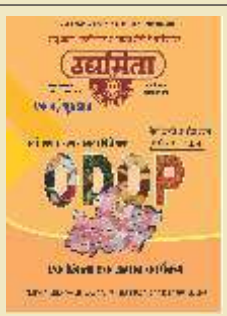

उद्यमिता समाचार पत्र में प्रचार

बढ़ाएगा आपका व्यापार

विज्ञापन हेतु संपर्क करें - **प्रकाशन विभाग सेडमैप भोपाल**।

अब दुनिया का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां महिलाओं की मौजूदगी नहीं हो। सेना में फ्रंट लाइन से लेकर अंतरिक्ष की ऊंचाइयों तक पहुंच कर महिलाएं अपनी काबिलियत सिद्ध कर चुकी हैं। ऐसे में महिलाओं को किसी क्षेत्र विशेष में कैद कर नहीं रखा जा सकता। यानी यह नहीं कहा जा सकता कि महिलाओं के लिए कौन सा उद्योग/व्यवसाय प्रारंभ करना उचित रहेगा और कौन सा नहीं। हम यहां कुछ ऐसे उद्योगों/निर्माण की इकाईयों की स्थापना के संबंध में मार्गदर्शक जानकारियां प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे संबंधित इकाई की स्थापना के पहले कुछ प्रारंभिक जानकारियां हासिल हो सकें। इन एवं अन्य कई उद्योगों के बारे में विस्तृत जानकारी एवं प्रोजेक्ट प्रोफाइल भी हम आगामी अंकों में प्रकाशित करते रहेंगे।

महिलाओं के लिए

उपयोगी औद्योगिक इकाईयों हेतु मार्गदर्शक जानकारियां

1. फ्रूट जैम/जैली निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना – 84 हजार किग्रा

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया : सर्वप्रथम इस उत्पाद के निर्माण हेतु प्रयुक्त किए जाने वाले कच्चा माल जैसे स्ट्राबेरी, चेरी, अमरूद के बीजों को फल से अलग कर लिया जाता है। इसके बाद शेष बचे फल के गूदे को फ्रूट मिल/क्रशर में रख कर पीसा जाता है। इस प्रक्रिया के बाद निकले फल के गूदे को पल्पर में डाल कर सिरप बना लिया जाता है। इस सिरप को स्टीम जैकेटेड केटल में रख कर पकाया जाता है। इस बीच इसमें मिठास के लिए आवश्यकतानुसार शक्कर मिलाई जाती है। पकाने के बाद जब फल के गूदे में मौजूद पानी वाष्पित होकर 1:5 के अनुपात में शेष रह जाता है तब इस विलयन को कांच की बोतलों में जैली के रूप में रखा जाता है। इसे 70 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर पैक किया जाता है। जैम बनाने के लिए इसमें पेक्टिन मिला कर दस मिनट तक ठंडा किया जाता है। इस प्रक्रिया के बाद निकले विलयन को पैकिंग मशीन में डालकर कांच की बोतलों में पैक कर लिया जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

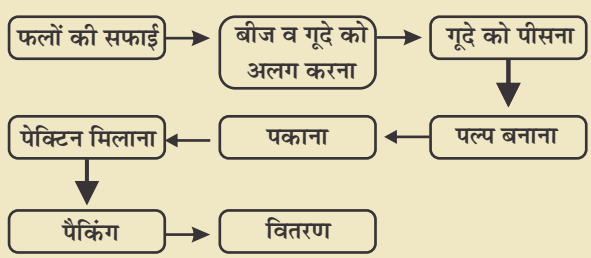

इकाई हेतु आवश्यक मशीनें एवं उपकरण

- वाटर जेट वाशर,
- फ्रूट मिल/क्रशर,
- पल्पर,
- स्टीम जैकेटेड केटल,
- पैकिंग मशीन,
- सामान रखने के लिए स्टेनलेस स्टील की टेबल

कच्चा माल/अन्य उपयोगी सामग्री

- फल,
- पैकिंग मटेरियल,

कांच की बोतलें, रबर की लीड्स

उपयोगिताओं की आवश्यकता

- विद्युत की आवश्यकता : 250 किलो वाट
- पानी की आवश्यकता : 1000 लीटर

कर्मचारियों की आवश्यकता

- कुशल : 1
- अकुशल : 2

स्थान की आवश्यकता

- कुल क्षेत्रफल : 100 वर्ग मीटर
- कवर्ड एरिया : 50 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

- मशीनरी एवं उपकरण, : रु. 21.50 लाख
  3 माह के लिए कार्यशील पूंजी (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन)

2. नूडल्स निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना : 150 मीट्रिक टन

उत्पाद के निर्माण की प्रक्रिया

नूडल्स बनाने के लिए सर्वप्रथम सभी कच्चे माल को डफ मिक्सर में डाल कर अच्छी तरह गूंथा जाता है। इस तरह गूंथे हुए मिश्रण को नूडल मेकिंग मशीन में डाल कर उपयुक्त सांचे का उपयोग करते हुए मिश्रण को वांछित आकार में प्राप्त कर लिया जाता है। इस दौरान इसे कटिंग टेबल में रख कर निर्धारित आकार में काटने की प्रक्रिया भी चलती रहती है। प्रक्रिया के दौरान तैयार उत्पाद विभिन्न चरणों से गुजरते हुए लकड़ी के एक टेबल में एकत्रित होता जाता है। इसके बाद उत्पाद को तब तक सुखाया जाता है जिससे यह बिना टूटे उठाया-रखा जा सके। इस अर्ध शुष्क उत्पाद को और सुखाया जाता है। सुखाने की प्रक्रिया ऐसे छायादार स्थान पर की जाती है, जहां यह सूर्य की रोशनी के संपर्क में सीधे न आ पाए। इसके बाद इसे ताप उपचार दिया जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

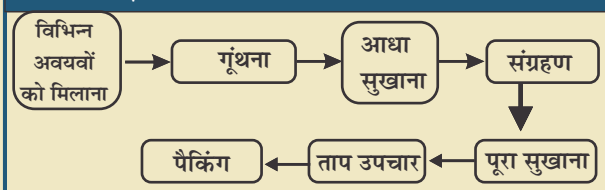

मशीनों एवं उपकरण की आवश्यकता

- वर्टिकल पॉवडर मिक्सर,
- ब्लेड टाइप डफ मिक्सर,
- नूडल मेकिंग मशीन,
- सांचे, लकड़ी की ट्रे
- प्लास्टिक की बाल्टियां, वाटर बॉयलर

कच्चा माल/अन्य उपयोगी सामग्री

- मैदा (आटा),
- स्टार्च, केमिकल्स,
- नमक आदि।

उपयोगिताओं की आवश्यकता

विद्युत	25 किलो वाट
पानी की आवश्यकता	1000 लीटर

(प्रति पाली के आधार पर)

कर्मचारियों की आवश्यकता

सुपरवाइजर	1
कुशल	2
अकुशल	2

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्रफल	600 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया	300 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीन एवं उपकरण, रु. 14.89 लाख

3 माह के लिए कार्यशील पूंजी

(कच्चा माल, उपयोगिताओं एवं वेतन पर व्यय हेतु)

3. ऑरेंज स्क्वैश निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना : 36 हजार लीटर

उत्पाद के निर्माण की प्रक्रिया

सर्वप्रथम ताजे फलों को प्राप्त किया जाता है फिर कर्मचारियों के द्वारा उनका छिलका अलग कर लिया जाता है। फिर छिलका रहित इन संतरों को स्क्रू-जूसर में डाल कर संतरे का रस निकाल लिया जाता है। इस जूस से पानी की मात्रा को वाष्पित करने के लिए संतरों को स्टीम जैकेटेड केटल में रखा जाता है। इस प्रकार प्राप्त सिरप में शक्कर एवं एसीटिक एसिड मिलाया जाता है। इसके पश्चात सिरप को बॉटल पैकिंग मशीन में डाला जाता है तथा 70 डिग्री तापमान पर इसकी पैकिंग की जाती है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

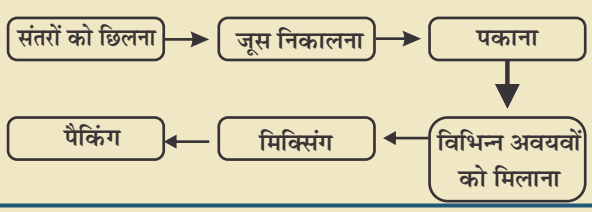

मशीनों एवं उपकरणों की आवश्यकता

- छिलका उतारने के यंत्र, स्क्रू जूसर, स्टीम जैकेटेड केटल, ग्लास बॉटल पैकिंग मशीन।

कच्चा माल

- संतरा, शक्कर, एसीटिक एसिड, रंग

उपयोगिताओं की आवश्यकता

विद्युत : 15 किलो वाट

पानी : आवश्यकतानुसार

कर्मचारियों की आवश्यकता

कुशल : 2 अकुशल : 6

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्र 250 वर्ग मीटर

कवर्ड एरिया 150 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीनरी एवं उपकरण रू. 27.7 लाख

3 माह के लिए कार्यशील पूंजी

(कच्चा माल, उपयोगिताओं एवं वेतन हेतु)

4. आलू/केले के वैफर्स

उत्पादन क्षमता/सालाना 150 टन

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया

सर्वप्रथम आलू को अच्छी तरह से पानी से धोकर फिर चाकू या आलू-छिलने के उपकरण से आलू के छिलके अलग कर लिए जाते हैं। फिर इन्हें भूरा रंग का होने से बचाने के लिए पानी में रखा जाता है। फिर स्लाइसिंग मशीन से इनके टुकड़े कर लिए जाते हैं। इसके बाद इन्हें खराब होने से बचाने के लिए पानी के 0.05 प्रतिशत पोटैशियम मेटा बाइसल्फाइट के घोल में रखा जाता है।

फिर आलू के इन टुकड़ों को गर्म पानी में रखा जाता है। फिर इनसे पानी अलग करने के लिए इन्हें हाइड्रो मशीन में डाला जाता है। फिर इन्हें तल कर इनसे तेल अलग करने के लिए छलनी में रखा जाता है। फिर ठंडा करके इसमें स्वादानुसार नमक आदि का छिड़काव किया जाता है। केले के वेफर्स बनाने के लिए कच्चे केलों को धोकर, उनका छिलका निकालकर, काट लिया जाता है। फिर ऑक्सीकरण से बचाने के लिए इन्हें नमकीन पानी में डुबाकर रखा जाता है। फिर इन्हें वनस्पति तेल में तला जाता है और कमरे के तापमान पर ठंडा किया जाता है। फिर इन वैफर्स को पॉलीथिन की थैलियों में पैक कर लिया जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

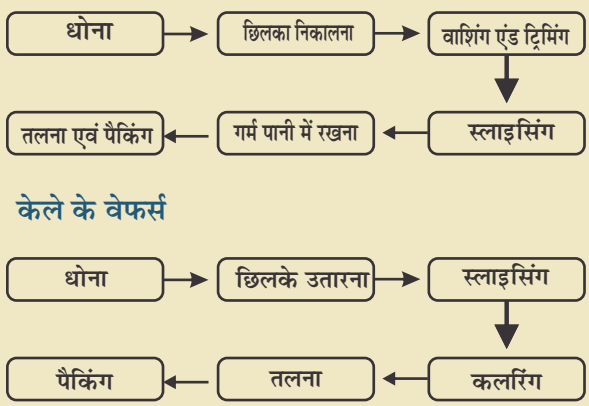

मशीनरी एवं उपकरणों की आवश्यकता

- एल्युमिनियम की टेबल, प्लास्टिक के कंटेनर्स
- डीप फैट फ्रायर
- हाइड्रो एक्सट्रेक्टर
- पॉलिथील बैग सीलने की मशीन
- आलू छिलने के उपकरण
- विद्युत से चलने वाली स्लाइसिंग मशीन।

कच्चा माल

- आलू/केले
- वनस्पति तेल, पॉलिथीन बैग्स
- सुगंध, रसायन, मसाले आदि।

उपयोगिताओं की आवश्यकता

विद्युत की आवश्यकता	10 किलो वाट
पानी की आवश्यकता	750 लीटर

(प्रति पाली के आधार पर)

कर्मचारियों की आवश्यकता

सुपरवाइजर	1
कुशल	2
अकुशल	2

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्रफल	250 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया	200 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीन एवं उपकरण	रु. 48.70 लाख

3 माह के लिए कार्यशील पूंजी
(कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)

5. पापड़ निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना **30,000 किग्रा**

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया

सर्वप्रथम चना दाल के बेसन की निर्धारित मात्रा लेकर उसमें साधारण नमक, सोडियम कार्बोनेट एवं आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर मशीन में डालकर गूंथा जाता है। इस गूंथे हुए मिश्रण की दो सेमी डायमीटर की छोटी-छोटी गोली बना ली जाती है। फिर इन्हें मशीन की सहायता से बेल लिया जाता है। इसके पश्चात पापड़ को 27-30 डिग्री सेल्सियस ताप पर सुखाया जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

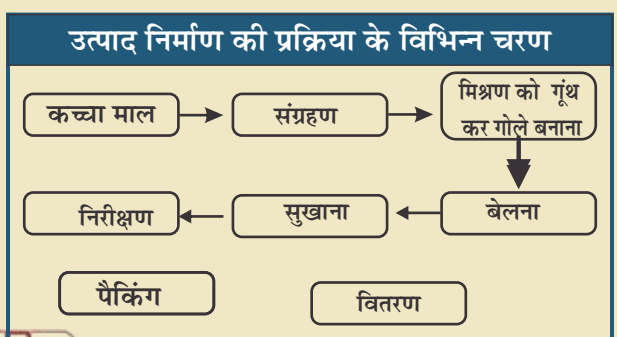

मशीनों एवं उपकरणों की आवश्यकता

- सिफ्टर,
- विद्युत चालित डफ मिक्सर,
- तराजू, विद्युत चालित ओवन्स,
- मार्बल टॉप टेबल, चकला रोलिंग पिन्स,
- एल्यूमिनियम के बर्तन, रैक

कच्चा माल

- चना दाल का बेसन,
- मसाले, नमक, रसायन आदि,

उपयोगिताओं की आवश्यकता

विद्युत की आवश्यकता	5 किलो वाट
पानी की आवश्यकता	आवश्यकतानुसार

कर्मचारियों की आवश्यकता

सुपरवाइजर	1
कुशल	2
अकुशल	4

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्रफल	250 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया	200 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीन एवं उपकरण	6.05 लाख
3 माह के लिए कार्यशील पूंजी (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)	

6. टमाटर की प्यूरी निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना

प्रसंस्कृत टमाटर	1500 मीट्रिक टन
टमाटर पेस्ट	225 मीट्रिक टन

उत्पादन प्रक्रिया

सर्वप्रथम एक टैंक में टमाटरों को जेट स्प्रे से धोकर उसमें से धूल आदि हटा ली जाती हैं। इसके पश्चात सड़े हुए टमाटरों को छांट

कर अलग कर दिया जाता है। इसके पश्चात टमाटर को काट कर भाप दिखाई जाती है जिससे उनके छिलके अलग करने में आसानी हो इसके पश्चात इन्हें पल्पर में पिसा जाता है। इस तरह से प्राप्त टमाटर के घोल को वांछित तरलता के पेस्ट के रूप में बदलने के लिए इवेपोरेटर में डाला जाता है। इस तरह से प्राप्त पेस्ट को जीवाणुनाशक मशीन में डाल कर फिर पैकिंग आदि की जाती है।

मशीनों एवं उपकरणों आदि की आवश्यकता

• वाटर जेट स्प्रेयरयुक्त वाशिंग टैंक	1
• छंटाई के लिए टेबल एलीवेटर सहित	1
• क्रशर (वैकल्पिक)	1
• जैकेटेड केटल	1
• जूस संग्रहित करने के लिए टैंक	1
• इवोपरेटर/वैकुअम	1
• पेस्ट संग्रहित करने के लिए टैंक	1
• पाउच फिलिंग एवं सीलिंग मशीन	2
• बॉयलर	1
• रीफ्रैक्टोमीटर रेंज 0-32	1
• कच्चे माल की आवश्यकता	
• टमाटर, सुगंध, अन्य योजक	

उपयोगिताओं की आवश्यकता

विद्युत की आवश्यकता	30 किलो वाट
पानी की आवश्यकता	6 केएल

कर्मचारियों की आवश्यकता

कुशल	4
अकुशल	10

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्रफल	500 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया	350 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीनरी एवं उपकरण	74.0 लाख
3 माह के लिए कार्यशील पूंजी (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)	

7. मसाला पीसने एवं पैकिंग की इकाई (धनिया/जीरा)

उत्पादन क्षमता **36 हजार किग्रा**

उत्पादन प्रक्रिया

सर्वप्रथम सभी मसालों की छंटाई कर उसमें से कचरा हटा दिया जाता है। इसके बाद मसालों को इलेक्ट्रिक डीहाइड्रेटर में सुखाकर उससे नमी दूर कर दी जाती है। इसके बाद अदरक के अतिरिक्त अन्य मसालों को तवे में रखकर भूना जाता है। इसके बाद प्राप्त मसालों को माइक्रोनाइजर में रख कर इसका पॉवडर बना लिया जाता है। इस पॉवडर को ग्राहकों की मांग के अनुसार पैक कर विक्रय किया जाता है।

मशीनों एवं उपकरण की आवश्यकता

- सफाई एवं छंटाई के लिए टेबल,
- डीहाइड्रेटर,

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

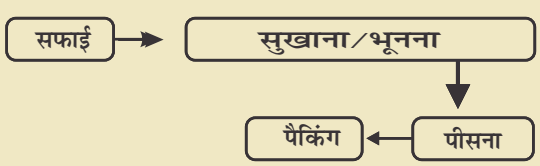

- माइक्रोनाइजर,
- मसाला पैक करने की मशीन

कच्चा माल/उपयोगिताओं की आवश्यकता

- खड़ी धनिया, जीरा, काली मिर्च,
- काला जीरा, सोंठ, काली इलायची,
- लौंग, जायफल, तेज पत्ता,
- पैकिंग मटेरियल

आवश्यक उपयोगिताएं

विद्युत की आवश्यकता	5 किलो वाट
पानी की आवश्यकता	आवश्यकतानुसार

कर्मचारियों की आवश्यकता

कुशल	1
अकुशल	2

स्थान की उपलब्धता

कुल क्षेत्रफल	100 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया	60 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीनरी एवं उपकरण	रु. 13.70 लाख
3 माह की कार्यशील पूंजी सहित (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन)	

8. बिस्किट निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना **300 टन**

उत्पादन प्रक्रिया

सर्वप्रथम गेहूं के आटे को छोड़ अन्य सभी अवयवों को निर्धारित मात्रा में लेकर मिला लिया जाता है। इसके बाद गेहूं के आटे के साथ उपरोक्त मिश्रण को मिला कर सभी को मिक्सर में डालकर

उसका पेस्ट तैयार किया जाता है। इस तरह से तैयार आटे के पेस्ट को बिस्किट मोल्डिंग मशीन में डाल कर निर्धारित आकार एवं वजन के बिस्किट बना कर बेकिंग के लिए ओवन में डाला जाता है। फिर इन बेक्ड बिस्किट्स को ठंडा कर लिया जाता है जिससे की ये कुरकुरे हो जाएं तत्पश्चात इन्हें पैकिंग इकाई में भेजा जाता

है।

मशीनों एवं उपकरणों की आवश्यकता

- स्वचालित बिस्किट बेकिंग ओवन,
- बिस्किट मोल्डिंग मशीन,
- फ्लोर सिफ्टर,

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

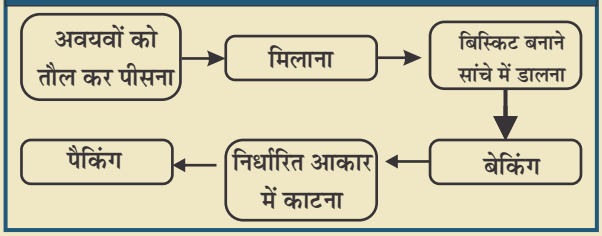

- आटा गूंथने की मशीन,
- शक्कर पीसने की मशीन,
- बिस्किट्स को निर्धारित आकार में काटने के लिए रोलर कटिंग,
- ऑइल स्प्रे यूनिट,
- बिस्किट सिलिंग मशीन,
- तराजू, ट्रॉली, कंटेनर्स, अन्य उपकरण।

आवश्यक कच्चा माल/अन्य उपयोगिताएं

- आटा,
- बेकिंग पॉवडर,
- शक्कर, तेल, नमक,
- पैकिंग मटेरियल

आवश्यक उपयोगिताएं

- विद्युत की आवश्यकता : 20 किलो वाट
- पानी की आवश्यकता : 1000 लीटर

कर्मचारियों की आवश्यकता

- कुशल : 3
- अकुशल : 8

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्रफल 750 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया 500 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीनरी एवं उपकरण रु. 35.5 लाख
3 माह की कार्यशील पूंजी
(कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)

9. मोमबत्ती निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता 150 मीट्रिक टन

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया

सर्वप्रथम मोमबत्ती निर्माण की मशीन स्थापित की जाती है फिर उसमें बॉबिन्स लगाई जाती हैं तत्पश्चात धागे पिरोए जाते हैं फिर जितनी लंबाई की मोमबत्तियां बनाई जानी हैं उसकी सेटिंग की

जाती है। इसके बाद सांचों में मोम भरा जाता है फिर इसे ठंडा होने दिया जाता है। फिर सांचों में से मोमबत्तियां निकाल ली जाती हैं और उन्हें विक्रय के लिए पैक कर लिया जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

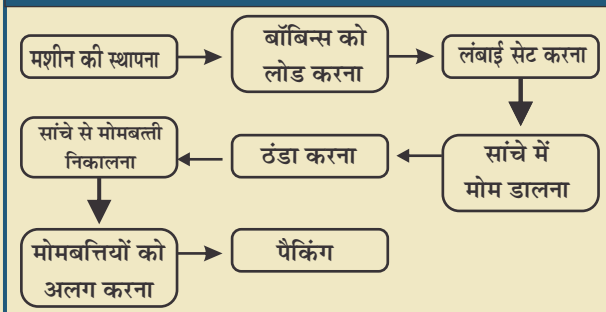

मशीनों एवं उपकरण की आवश्यकता

- सेमी ऑटोमैटिक कैंडल मेकिंग मशीन 4
- हॉट प्लेट 2
- मोम पिघलाने के लिए पात्र 3

कच्चा माल/उपयोगिताओं की आवश्यकता

- पैराफीन,

- धागे, केस्टर/कोकोनट ऑइल,
- पैकिंग मटेरियल

आवश्यक उपयोगिताएं

विद्युत की आवश्यकता : नॉर्मल सिंगल फेस सप्लाई
पानी की आवश्यकता : सामान्य उपयोग के लिए

कर्मचारियों की आवश्यकता

- सुपरवाइजर 1
- कुशल कर्मचारी 2
- अकुशल कर्मचारी 4

स्थान की आवश्यकता

कुल क्षेत्रफल 200 वर्ग मीटर
कवर्ड एरिया 150 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीनों एवं उपकरण तथा
3 माह की कार्यशील पूंजी हेतु रु. 28.5 लाख
(कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)

10. इलास्टिक टेप निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना 16,80,000 मीटर

निर्माण प्रक्रिया

इलास्टिक टेप का उपयोग कपड़ों को शरीर पर टाईट करके होल्ड

रखने के लिए किया जाता है। रेडीमेड गारमेंट उद्योग में इन टेपों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। इसके निर्माण हेतु सर्वप्रथम विभिन्न प्रकार के धागे जैसे विस्कॉस, नायलॉन एवं कॉटन के धागों को वांछित डिजाइन के अनुसार क्रील मशीन पर फिट किया जाता है। रैपिंग मशीन में रैप तैयार किया जाता है। इस तरह से तैयार रैप के बीम को निडल लूम में शिफ्ट किया जाता है तथा धागों को डिजाइन के अनुसार संयोजित किया जाता है। जब मशीन से धागों की बुनाई शुरू होती है तो टेप बनकर मशीन से बाहर आते हैं और उनका रोल बनता जाता है। इसके बाद फिनिशिंग मशीन में इन्हें अंतिम रूप देकर विक्रय के लिए पैक किया जाता है।

आवश्यक मशीन एवं उपकरण

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

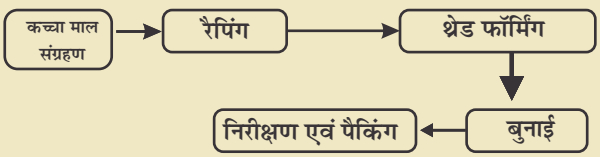

- हाई स्पीड निडल लूम
- रैपिंग मशीन
- क्रील, बीम
- फिनिशिंग मशीन, बैक फ्रेम
- मीसरिंग एंड वाइंडिंग टेप

कच्चा माल/उपयोगिताओं की आवश्यकता

- नायलॉन के धागे
- विस्कॉस के धागे
- कॉटन के धागे, रबर के धागे, ग्लू/स्टार्च

उपयोगिताओं की आवश्यकता

- विद्युत की आवश्यकता 25 किलो वाट
- पानी की आवश्यकता 500 लीटर

कर्मचारियों की आवश्यकता

- सुपरवाइजर 1
- कुशल 3
- अकुशल 3

स्थान की आवश्यकता

- कुल क्षेत्रफल 200 वर्ग मीटर
- कवर्ड एरिया 100 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

मशीनरी एवं उपकरण रु. 21.5 लाख
3 माह के लिए कार्यशील पूंजी
(कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)

11. टॉयलेट रोल्स निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना **750 हजार रोल्स**

उत्पादन प्रक्रिया

टॉयलेट रोल्स बनाने के लिए ऑटोमैटिक और मैन्युअल दोनों प्रकार की मशीनें बाजार में उपलब्ध हैं। निर्माण प्रक्रिया के तहत सर्वप्रथम निर्धारित आकार के कागज को रोल मेकिंग मशीन में फिट किया जाता है फिर कोर मेकिंग एवं कोर कटिंग की सहायता से अंतिम उत्पाद प्राप्त किया जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

रोल कटिंग → कोर मेकिंग → कटिंग → रीवाइंडिंग → निरीक्षण → पैकिंग

आवश्यक मशीन एवं उपकरण

- ऑटोमैटिक टॉयलेट रोल मेकिंग मशीन
- कोर मेकिंग मशीन
- कोर कटिंग मशीन

कच्चा माल

- टिशू पेपर
- पैकिंग मटेरियल

उपयोगिताओं की आवश्यकता

- विद्युत की आवश्यकता 10 किलो वाट
- पानी की आवश्यकता सामान्य आपूर्ति

कर्मचारियों की आवश्यकता

- प्रबंधक 1
- सुपरवाइजर 2
- कुशल कर्मचारी 2
- अकुशल कर्मचारी 3

स्थान की आवश्यकता

- कुल क्षेत्रफल 200 वर्ग मीटर
- कवर्ड एरिया 150 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

- मशीनरी एवं उपकरण रु. 70.71 लाख
- 3 माह के लिए कार्यशील पूंजी (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)

12. क्रेयॉन चाक निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना **1500 हजार बॉक्स**
प्रत्येक बॉक्स में 100 स्टिक्स

उत्पादन प्रक्रिया

सर्वप्रथम कच्चे जिप्सम को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ कर छान लिया जाता है फिर इसमें से मिट्टी एवं अन्य अशुद्धियां हटाने के लिए पानी से धोया जाता है। इस साफ जिप्सम को 120 से 140 डिग्री तापमान पर गर्म कर प्लास्टर ऑफ पेरिस में बदल लिया जाता है। इस प्रक्रिया से प्राप्त सफेद पदार्थ को फिर से पीस कर एवं 60 से 80 मेश की छलनी से छान लिया जाता है। चॉक निर्माण की प्रक्रिया में यही पॉवडर प्रमुख घटक होता है। इसके पश्चात इस पॉवडर को इनेमल बेसिन में रख कर इसमें पानी मिलाया जाता है तथा इसकी लुगदी बना ली जाती है। इस लुगदी को चॉक बनाने के सांचों में भरकर पांच से दस मिनट तक रखा जाता है ताकि मिश्रण कड़ा हो जाए फिर इन्हें सांचे से सावधानीपूर्वक निकाल कर सूखने के लिए रखा जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

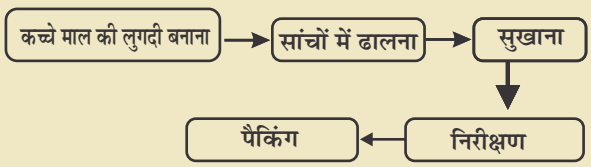

आवश्यक मशीन एवं उपकरण

- चॉक बनाने के सांचे
- कोनिकल मिक्सिंग पैन
- ड्राय ओवन
- पल्वराइजर
- ड्रायिंग ट्रे (लकड़ी की)
- अन्य उपकरण

कच्चा माल एवं उपयोगिताएं

- प्लास्टर ऑफ पेरिस
- क्विक लाइम
- कलरिंग ऑक्साइडस
- पैकिंग मटेरियल्स

उपयोगिताओं की आवश्यकता

• विद्युत	3 किलो वाट
• पानी	1000 लीटर

कर्मचारियों की आवश्यकता

• कुशल	1
• अकुशल	2

स्थान की आवश्यकता

• कुल क्षेत्रफल	200 वर्ग मीटर
• कवर्ड एरिया	150 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

- मशीनरी एवं उपकरण
- 3 माह के लिए कार्यशील पूंजी (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु) — रु. 9.25 लाख

13. स्कूल बैग निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना **1,500 नग**

उत्पादन प्रक्रिया

सर्वप्रथम बैग निर्माण में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल को एकत्रित

किया जाता है। फिर जिस सामग्री से बैग बनाया जाना है उसकी निर्धारित पैटर्न एवं डिजाइन में कटिंग की जाती है। इसके बाद बैग की सिलाई की जाती है साथ ही साथ उसमें चेन, क्लिप्स आदि लगाए जाते हैं।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

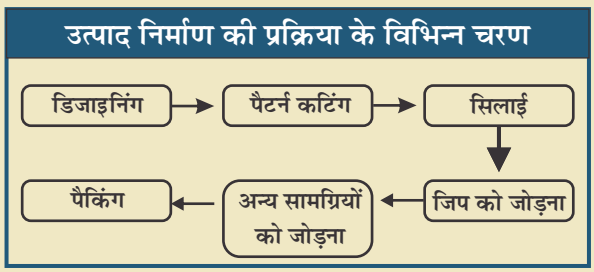

मशीन एवं उपकरणों की आवश्यकता

- सिंगल निडल फ्लैट बेड सिलाई मशीन
- स्क्रीन प्रिंटिंग उपकरण
- अन्य उपकरण एवं सामग्री

कच्चा माल

- कैनवास
- नायलॉन स्ट्रैप
- डी-रिंग्स
- जिप एवं फास्टनर्स
- रिवेट्स
- कॉटन टेप
- बकलेट्स
- लॉक्स
- धागे
- एढेसिव

आवश्यक उपयोगिता

• विद्युत की आवश्यकता	2 किलो वाट
• पानी	सामान्य आपूर्ति के लिए

कर्मचारियों की आवश्यकता

- सुपरवाइजर 1
- कुशल 6
- अकुशल 5

स्थान की आवश्यकता

- कुल क्षेत्रफल 120 वर्ग मीटर
- कवर्ड एरिया 100 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

- मशीनरी एवं उपकरण 11.55 लाख
  3 माह की कार्यशील पूंजी
  (कच्चा माल, उपयोगिता एवं वेतन हेतु)

14. पर्स एवं हैंड बैग्स निर्माण की इकाई

उत्पादन क्षमता/सालाना 30 हजार बैग्स एवं 30 हजार पर्स

उत्पादन प्रक्रिया

सर्वप्रथम विभिन्न अटैचमेंटस को बैग में कहां लगाया जाना है उसकी लेदर पर मार्किंग कर ली जाती है। फिर लेदर की निर्धारित पैटर्न के अनुसार कटिंग की जाती है एवं सिलाई की जाती है। इस दौरान आवश्यक सामग्रियां निर्धारित स्थान पर अटैच की जाती हैं। शेष सामग्रियों को एढेसिव की सहायता से निर्धारित स्थान पर लगाया जाता है। इसके बाद फिनिशिंग टच देते हुए पॉलिश एवं रंगाई का काम कर लिया जाता है। फिर प्रोडक्ट के ब्रांड नाम आदि को स्टैंप कर उत्पाद को विक्रय के लिए भेजा जाता है।

उत्पाद निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न चरण

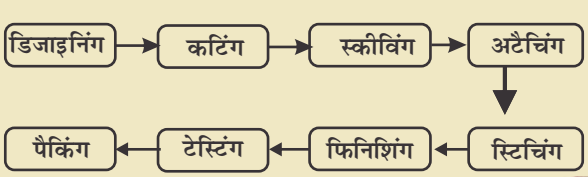

आवश्यक मशीन एवं उपकरण

- क्लिकिंग मशीन
- लेदर स्किविंग मशीन
- स्टैंपिंग मशीन
- एम्बॉसिंग मशीन
- हैड टूल्स 1 सेट
- फ्लैट बेड इंडस्ट्रियल सिलाई मशीन

कच्चा माल/उपयोगिताओं की आवश्यकता

- लेदर
- लाइनिंग लेदर
- एढेसिव
- डेकोरेटिव फिटिंग्स
- ग्रे बोर्ड एवं अन्य फिटिंग्स

उपयोगिताओं की आवश्यकता

- विद्युत की आवश्यकता 20 किलो वाट
- पानी की आवश्यकता सामान्य आपूर्ति

कर्मचारियों की आवश्यकता

- सुपरवाइजर 1
- मशीन ऑपरेटर 3
- कुशल 7
- अकुशल 4

स्थान की आवश्यकता

- कुल क्षेत्रफल 250 वर्ग मीटर
- कवर्ड एरिया 200 वर्ग मीटर

पूंजी निवेश की आवश्यकता

- मशीन एवं उपकरण रु. 15 लाख
  3 माह की कार्यशील पूंजी
  (कच्चा माल, उपयोगिता, वेतन हेतु)

q **स्त्रोत :** राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (एनएसआईसी)

ब्यूटी पार्लर की इकाई योजना

सौंदर्य प्रकृति का एक ऐसा उपहार है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहता है। नैसर्गिक सौंदर्य को सजा-संवार कर उसमें कृत्रिम तरीके से और निखार लाया जा सकता है। यही तथ्य ब्यूटी पार्लर की संकल्पना का प्रमुख आधार है। ब्यूटी पार्लर का आशय एक ऐसी शॉप से होता है जहां विभिन्न सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग करते हुए चेहरे को एक नई आभा प्रदान की जाती है। साथ ही चेहरे से अनावश्यक बालों को हटा कर या उन्हें उचित शेप दे कर सौंदर्य में और निखार लाया जाता है। वर्तमान समय में बदलती जीवन शैली तथा आर्थिक स्वतंत्रता के कारण महिलाएं अपने मेकअप के स्टेटस को लेकर अधिक सजग हुई हैं। साथ ही पुरूष वर्ग में भी अब ब्यूटी पार्लर का चलन बढ़ने लगा है।

बाजार संभावना

सौंदर्य को निखारने का काम प्राचीन काल से होता आ रहा है। पहले लोग चंदन के तेल, हल्दी एवं दूध आदि जैसे पदार्थों के इस्तेमाल से त्वचा को संवारते थे लेकिन अब बदलते युग के साथ इसका तरीका भी बदला है तथा लोग प्रॉपर एवं प्रोफेशनल तरीके से अपनी त्वचा, नाखूनों एवं बालों को संवारना चाहते हैं। चाहे स्त्री हो या पुरूष सुंदर दिखने की चाहत सभी को होती है। इसी बात को देखते हुए शहरों से लेकर गांवों तक ब्यूटी पार्लर इकाई की मांग बढ़ी है। आप अपने ब्यूटी पार्लर में जितनी अधिक सुविधाएं और सेवाएं रखेंगे उसका आकर्षण उतना ही अधिक होगा। साथ ही किफायती दरें आपके व्यवसाय की वृद्धि में सहायक हो सकती हैं। यह व्यवसाय सेवा उद्योग के अंतर्गत आता है।

इकाई स्थापना हेतु आवश्यक मशीनें एवं उपकरण

क्र.	विवरण	मात्रा	दर	राशि रु.
1.	फेसियल हेयर	2	13,500	27,000
2.	हेयर कटिंग मशीन	1	04,000	04,000
3.	फेसियल बेड	1	08,500	08,500
4.	हेयर ड्रायर	2	03,500	07,000
5.	बॉडी मसाजर	1	03,500	03,500
6.	हैड स्टीमर	1	04,000	04,000
7.	फेसियल स्टीमर	1	03,500	03,500
8.	स्टर्लाइजर	1	02,500	02,500
9.	गैल्वेनिक मशीन	1	05,000	05,000
10.	हाई फ्रिक्वेंसी मशीन	1	06,000	06,000
11.	शैंपू वाश यूनिट	1	18,500	18,500
12.	इक्विपमेंट ट्रॉली	1	04,500	04,500
13.	फुट स्पा	1	04,500	04,500
14.	अल्ट्रासोनिक मशीन	1	05,000	05,000
15.	हेयर स्ट्रैथनिंग मशीन	1	02,500	02,500
16.	इलेक्ट्रोलिसिस	1	05,000	05,000
17.	स्कीन एनालाइजर	1	06,000	06,000
18.	ड्रेसिंग टेबल	2	02,500	05,000
19.	रोटेटिंग चेयर्स	2	10,000	20,000
20.	मिरर (बिग)	2	01,500	01,500
21.	फ्रिज	1	12,000	12,000
22.	भवन, फर्नीचर, फिटिंग्स	–	–	21,63,000
			कुल	23,20,000

कर्मचारियों की आवश्यकता

क्र.	विवरण	संख्या	वेतन प्रति माह
1.	ब्यूटीशियन	1	7,000
2.	सौंदर्य विशेषज्ञ	2	10,000
3.	सहायक	1	3,000
		कुल	**20,000**

अन्य व्यय

1.	विद्युत शुल्क		1,000
2.	किराया		3,000
3.	टेलीफोन		750
4.	अन्य अप्रत्याशित व्यय		1,000
5.	पानी पर व्यय		250
		कुल	**6,00**

कच्चे माल की आवश्यकता (प्रति माह)

क्र.	विवरण	मात्रा	इकाई दर	कुल मूल्य (रु.)
1.	हेयर शैंपू	50 लीटर	100	5,000
2.	हेयर डाइ			2,000
3.	फेस क्रीम/लोशन			5,000
4.	हाइड्रोजन पराक्साइड	20 लीटर	50	1,000
5.	एसीटोन	20 लीटर	50	1,000
6.	हेयर रिमूविंग वेक्स	15 किग्रा	90	1,350
7.	हेयर स्प्रे	12 सेट	75	900
8.	हेयर जेल	20 पैक	200	4,000
9.	पर्मिंग लोशन	2 पैक	250	500
10.	स्पांज कॉटन			700
11.	टॉवेल	50 नग	20	1,000

12.	सर्जिकल ग्लव्स	2 जोड़े	25,	50
13.	अन्य सौंदर्य प्रसाधन			22,000
			कुल	**44,500**

कुल परियोजना लागत

I	मशीनरी एवं उपकरणों पर व्यय	2,32,000
I	कार्यशील पूंजी पर व्यय	68,000
	कुल	**30,00,00**

वित्त के स्त्रोत

मियादि ऋण	1,85,600
कार्यशील पूंजी ऋण	54,400
स्वयं का अंशदान	60,000
कुल	**30,00,00**

सालाना संभावित आय

विवरण	मात्रा	दर	राशि
आई ब्रो	2400	15	36,000
मैनीक्योर	600	40	24,000
पैडीक्योर	240	55	13,200
हैड मसाज	360	55	19,800
हेयर ब्लीचिंग	720	55	39,600
आर्म ब्लीचिंग	840	55	46,200
फेस ब्लीचिंग	960	55	52,800
वैक्सिंग	840	40	33,600
फेसियल	720	120	86,400
हेयर स्टाइल	2400	25	60,000
हेयर कटिंग	2400	25	60,000

सिंथेटिक डाइ	480	80	38,400
ब्राइडल मेकअप	120	800	96,000
हेयर पफिंग	120	200	24,000
मेक अप	120	150	18,000
हेयर रिमूविंग	1,900	25	47,500
हेयर डाइंग	650	75	48,750
क्लीनिंग			5,750
		कुल	**7,50,000**

उत्पादन लागत एवं लाभदेयता (सालाना)

क्र.	विवरण	राशि
1.	कच्चा माल	27,000
2.	उपयोगिताएं	72,000
3.	वेतन एवं पारिश्रमिक	2,40,000
4.	परिवहन लागत	3,000
5.	अग्रिम किराया	30,000
6.	यात्रा एवं भ्रमण	2,500
7.	डाक एवं स्टेशनरी	3,000
8.	विज्ञापन	5,500
9.	मरम्मत एवं संधारण	2,000
10.	ऋण पर ब्याज	32,400
11.	मूल्य ह्रास	23,200
	कुल	**6,83,600**
	कुल आय	**7,50,000**
	सकल लाभ	**66,400**
	कुल लाभ	**66,400**
	मूल्य ह्रास का योग	**23,200**
	कैश सरप्लस	**89,600**

उपरोक्त परियोजना प्रपत्र भारत सरकार के सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की वेबसाइट में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर उद्यमियों को महज मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य से प्रकाशित की जा रही है। समय, स्थान एवं इकाई के आकार के आधार पर इसकी लागत कम-ज्यादा होना अवश्यसंभावी है। उद्यमियों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी आवश्यकता के अनुसार आंकड़ों में परिवर्तन कर/किसी विशेषज्ञ से सलाह लेकर इस उद्यम स्थापना के बारे में निर्णय लें।

ग्राम उद्यमशीलता के क्रियान्वयन के लिए समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर

कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय के अधीन स्वायत्तशासी संगठन राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (एनआईईएसबीयूडी) ने स्टार्ट-अप ग्राम उद्यमशीलता कार्यक्रम (एसवीईपी) पहल के जरिये मैदानी स्तर पर उद्यमशीलता को प्रोत्साहन देने के लिये एक सतत स्वरूप विकसित करने के वास्ते ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। एसवीईपी, ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत संचालित होने वाले दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) का उप-घटक है। इसका उद्देश्य गैर-कृषि सेक्टर में ग्रामीण स्तर पर उद्यम स्थापित करने के लिये ग्रामीण इलाकों के उद्यमियों का समर्थन करना है। उपरोक्त साझेदारी से ग्रामीण समुदाय को सक्षम बनाने में मदद मिलेगी, ताकि वे अपने कारोबार स्थापित कर सकें। साथ ही कारोबार स्थापित होने तक उन्हें पूरा समर्थन दिया जायेगा। इस सटीक अंत:क्षेप से जन सामान्य को जानकारी, सलाह और वित्तीय समर्थन मिलेगा तथा गांवों में समुदाय स्तर पर संगठित लोगों का दल बनाने में मदद मिलेगी।

साझेदारी के अंतर्गत ग्रामीण उद्यमियों को अपने कारोबार शुरू करने के सम्बंध में वित्तीय समर्थन हासिल करने के लिये बैंकिंग प्रणाली तक पहुंच मिल जायेगी। इसमें मुद्रा बैंक का समर्थन भी शामिल है। एकीकृत आईसीटी तकनीकों और उपकरणों से क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण मिलेगा। इसके तहत देश के गांवों में उद्यमशीलता इको-सिस्टम को बढ़ाने के लिये उपक्रम सलाहकार सेवायें भी दी जायेंगी। परियोजना के लाभार्थियों में डीएवाई-एनआरएलए का स्वसहायता समूह इको-सिस्टम से सम्बंधित हैं। योजना न सिर्फ मौजूदा उद्यमों की, बल्कि नये उद्यमों की भी सहायता करती है।

स्व-सहायता समूहों की मजबूत बुनियाद पर

आत्म-निर्भरता की ओर अग्रसर मप्र की ग्रामीण महिलाएं

मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा वर्ष 2012 से प्रदेश में ग्रामीण गरीब परिवारों की महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक सशक्तिकरण के लिये स्व-सहायता समूह बनाकर उनके संस्थागत विकास तथा आजीविका के संवहनीय अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। मिशन द्वारा प्रदेश में अब-तक 45 हजार 135 ग्रामों में 3 लाख 36 हजार 521 स्व-सहायता समूहों का गठन किया गया है। इन समूहों से 38 लाख 31 हजार परिवारों को जोड़ा जा चुका है।

वित्तीय सहयोग

समूहों को मिशन द्वारा चक्रीय निधि, सामुदायिक निवेश निधि, आपदा कोष तथा बैंक लिंकेज के रूप में वित्तीय सहयोग किया जा रहा है। इस राशि से उनकी छोटी-बड़ी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है, जिससे वे साहूकारों के कर्जजाल से बच जाते हैं। प्रदेश में समूहों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों के संचालन के लिये बैंक ऋण वितरण का लक्ष्य विगत दो वर्षों में कई गुना बढ़ाते हुए इस वर्ष में 2550 करोड़ रुपए किया गया है। समूहों को सस्ती ब्याज दरों पर पूंजी उपलब्ध कराने के साथ अलग से ब्याज अनुदान भी दिया जा रहा है।

व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में अवसर

राज्य सरकार ने महिला स्व -सहायता समूहों के कार्यों का दायरा बढ़ाते हुए पोषण आहार संयत्रों के संचालन का बहुत बड़ा काम भी समूहों को देकर वृहद कारोबारों को संचालित करने का अनुभव समूहों की महिलाओं को दिया है। नित नये क्षेत्रों जैसे दीदी कैफे संचालन, उचित मूल्य की शासकीय दुकानों का संचालन, स्कूल गणवेश सिलाई, फसल क्रय के लिये उपार्जन केन्द्रों का संचालन, गौशाला संचालन, चारागाह विकास, अस्पतालों में ऑक्सीजन प्लांट संचालन, ग्रामीण क्षेत्रों में नल-जल योजनाओं का संचालन, विद्युत बिल वितरण कार्य, सड़कों का संधारण, लघु वनोपज संग्रहण, शासकीय निर्माण कार्यों में लगने वाली ईंट आदि सामग्री के निर्माण एवं सप्लाई में प्राथमिकता देते हुये स्व-सहायता समूहों को हर स्तर पर सहयोग किया जा रहा है। समूहों की सदस्य महिलाओं द्वारा रूचि अनुसार परंपरागत आय के साधन कृषि-पशुपालन के साथ अतिरिक्त आय अर्जित करने के लिये सिलाई, दुकान, साबुन, अगरबत्ती निर्माण आदि सहित 103 प्रकार की लघु उद्यम गतिविधियाँ की जा रही हैं।

उत्पादों के क्रय-विक्रय में सहयोग

समूहों के उत्पादों को बेचने के लिये आजीविका रूरल मार्ट जिला स्तर पर नाबार्ड के सहयोग से स्थापित किये गये हैं। आजीविका मार्ट पोर्टल के माध्यम से भी उत्पादों के क्रय-विक्रय में सहयोग किया जा रहा है। समूहों के उपयोग के लिये ब्लॉक स्तर पर आजीविका भवन निर्माण किया गया है। समूहों की बैठकों तथा आजीविका गतिविधि केन्द्र और प्रशिक्षण केन्द्र बनाने के लिये बड़ी संख्या में शासकीय भवन समूहों को आवंटित किये गये हैं।

निरंतर प्रशिक्षण

मिशन द्वारा दिये जा रहे लगातार प्रशिक्षण, वित्तीय साक्षरता, वित्तीय सहयोग एवं मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि समूह सदस्यों के अन्दर गरीबी से उबरने की दृढ़ इच्छा-शक्ति उत्पन्न हुई। आज प्रदेश में समूहों से जुड़े 13 लाख 37 हजार से अधिक परिवार कृषि एवं पशुपालन आधारित आजीविका गतिविधियों से जुड़े और 5 लाख 5 हजार से अधिक परिवार गैर कृषि आधारित लघु उद्यम आजीविका गतिविधियों से जुड़कर काम कर रहे हैं।

महिलाओं को मिल रही है नई पहचान

पहले ग्रामीण क्षेत्र के निर्धन परिवारों में महिलाओं को आय मूलक गतिविधियां करने के अवसर नहीं मिलते थे, उनका जीवन केवल चूल्हे-चौके और घर की चार दीवारी तक ही सीमित रह जाता था। घर के संचालन, आय-व्यय, क्रय-विक्रय आदि सहित अन्य मुद्दों पर निर्णय में पुरूषों का एकाधिकार था। मिशन के समूहों से जुड़कर महिलाओं को जो अवसर मिला,

उससे उन्होंने अपनी काबिलियत सिद्ध कर अपनी अलग पहचान बनाई। गैर आय मूलक नगण्य घरेलू कामों के अलावा अब समूह सदस्य महिलाएं अपने परिवार के साथ गांव एवं सामुदायिक विकास के महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय देती हैं। उनमें आई जागरूकता से न केवल घर में बल्कि गांव और क्षेत्र में भी उनके सम्मान में बढ़ोतरी हुई है। समूहों, ग्राम संगठनों, संकुल स्तरीय संघों की नियमित बैठकों में भागीदारी से उनकी समझ और सक्रियता बढ़ गई है। समूहों में सिखाये गये 13 सूत्र ने उन्हें मूल-मंत्र दे दिया है, जिससे वे निरंतर आगे बढ़ती जा रही हैं। समूहों की बैठक में नियमित बचत लेन-देन, ऋण वापसी तथा दस्तावेजीकरण, बैंकों में आने-जाने से उनके अंदर वित्तीय साक्षरता, व्यवसायिक प्रबंधन की क्षमता भी विकसित हो गई है।

सामुदायिक विकास

सामुदायिक विकास के क्षेत्र में भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले की तुलना में ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ना, पात्रता अनुसार स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा आदि के व्यक्तिगत एवं सामुदायिक मुद्दों पर भी जबरदस्त सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है। घर-घर में पोषण वाटिका लगाकर अपना, अपने परिवार का तथा अपने गांव में कुपोषण दूर करने के प्रयास देखे जा सकते हैं।

नगद रहित व्यवहार

समूह सदस्यों के अन्य व्यवहार परिवर्तनों में एक अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन

है नगद रहित व्यवहार। समूहों का समस्त लेन-देन चेक के माध्यम से ही होता है या फिर बैंक सखियों द्वारा ई-ट्रांजेक्शन भी कराया जाता है। इससे आर्थिक धोखाधड़ी की संभावनाएं कम हो गई हैं।

राजनैतिक पदों पर समूह सदस्य

समूहों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर मिलने से जो नई पहचान मिली उसकी वजह से विभिन्न राजनैतिक पदों पर भी महिलाएं निर्वाचित हुई हैं। वे पंच -सरपंच से लेकर जनपद, जिला पंचायत सदस्य जैसे पदों तक भी पहुंचीं हैं। इसके अलावा विभिन्न समितियों में भी महत्वपूर्ण पद मिले हैं। शर्मीले स्वभाव की ग्रामीण महिला आज अपनी यह पहचान बदलकर बड़ी- बड़ी सभाओं में मंच से लाखों की भीड़ के सामने निर्भीक होकर अपने विचार व्यक्त करती हैं।

अन्य प्रदेशों में जाकर प्रशिक्षण दिया

मिशन द्वारा लगभग 6 हजार महिलाओं को कम लागत कृषि एवं जैविक खेती पर प्रशिक्षित किया गया है। इन्होंने मास्टर कृषि सी.आर.पी. के रूप में न केवल अपने घर, गांव जिला और प्रदेश बल्कि अन्य राज्यों जैसे- हरियाणा, उत्तरप्रदेश और पंजाब में भी प्रशिक्षण देकर अपनी अलग पहचान बनाई है।

आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण

मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन से महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण हो रहा है। प्रदेश में 2 लाख से अधिक महिलाएं ऐसी हैं, जो न्यूनतम 10 हजार रुपये मासिक आय अर्जित कर रही हैं। स्व-सहायता समूहों से जुड़े कई ऐसे परिवार भी हैं, जिनकी मासिक आय 50 हजार रुपये तक हो गई है। लाखों की संख्या में महिलाओं ने पुराने जीर्ण-शीर्ण घरों की जगह अपने पक्के मकान, दुकान आदि बनवा लिये, कृषि भूमि खरीदी हैं तथा साहूकारों के कर्ज जाल से मुक्ति पाकर नये जीवन की शुरूआत की है। बदलाव की नजीर देखें तो अकेले अलीराजपुर जिले के उदयगढ़ क्षेत्र में 19 गांवों के 26 समूहों की 76 महिला सदस्यों ने वर्ष 2019 में 26 लाख से अधिक रुपए से गिरवी रखी 176 एकड़ जमीन साहूकारों के कर्जे से मुक्त कराई। समूह सदस्यों की आय में वृद्धि होने से आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर होने पर उन्होंने स्वयं की अधूरी पढ़ाई फिर से शुरू कर व्यावसायिक कोर्स जैसे बी.एस.डब्ल्यू. एम.एस.डब्ल्यू. भी किया है। साथ ही बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं और दो पहिया, चार पहिया वाहन, कृषि यंत्र आदि भी खरीदे हैं।

अब महिलाएं स्वयं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण करने के साथ अपने क्षेत्र में बाल विवाह रोकना, घरेलू हिंसा के विरूद्ध आवाज उठाना, नशा मुक्त कराना, सामुदायिक विकास के कार्यों की निगरानी, गांव के बेरोजगार युवक-युवतियों को रूचि अनुसार रोजगार, स्व-रोजगार प्रशिक्षण दिलाने जैसे काम विभिन्न उप-समितियों के माध्यम से कर रही हैं। महिलाओं ने स्व-सहायता समूहों में मिले अवसर का पूरा लाभ उठाते हुए अपनी क्षमता के अनुसार काम करके प्रतिभा प्रदर्शन से मिली अलग पहचान की बदौलत ही ग्रामीण क्षेत्र में परिवारिक एवं सामुदायिक सत्ता पर अपना वर्चस्व कायम किया है। कुल मिलाकर ग्रामीण क्षेत्र में घूंघट की ओट में चूल्हे-चौके तक सीमित रहकर गुमनाम जिंदगी जीने वाली महिलाएं आज अपने परिवार, गांव और जिले की पहचान तथा शान बन गई हैं।

स्त्रोत : **जनसंपर्क संचालनालय,**
मध्यप्रदेश,
भोपाल.

स्वरोजगार स्थापना में बनें सहभागी

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करने वाले लेखों जानकारियों का सादर स्वागत है।

सम्पर्क करँ - प्रकाशन विभाग सेडमैप, भोपाल

जनजातीय बाचा गांव की महिलाओं ने बनाया

ऊर्जा समृद्ध गांव

मध्यप्रदेश को सौर ऊर्जा के उपयोग और उत्पादन में आत्म-निर्भर बनाने में जनजातीय गांवों ने स्व-प्रेरणा से कदम बढ़ाकर गांवों में परिवर्तन लाने की शुरूआत कर दी है। राज्य सरकार की पहल से जनजातीय परिवार अपने हितों के प्रति जागरूक हो गये हैं। मध्यप्रदेश को आत्म-निर्भर बनाने की मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की सोच को बाचा गांव ने जमीन पर उतार दिया।

जनजातीय बहुल बैतूल जिले की घोड़ाडोंगरी तहसील के बाचा गांव के गोंड जनजाति परिवारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे अपनी खुशहाली के लिये नई टेक्नालाजी को अपनाने में पीछे नहीं है। बाचा गाँव सौर ऊर्जा समृद्ध गाँव के रूप में देश भर में प्रतिष्ठा अर्जित कर चुका है।

वर्षों से ऊर्जा की कमी की पीड़ा झेलते-झेलते आखिरकार हम ऊर्जा-सम्पन्न बन गये। हमारा गाँव बाचा देश का पहला सौर-ऊर्जा आत्म-निर्भर गाँव बन गया है। यह बताते हुए अनिल उइके बेहद उत्साहित हो जाते हैं। वे आदिवासी युवा हैं और बाचा गाँव के सौर-ऊर्जा दूत भी हैं।

हमारे गांव के सभी 75 घरों में सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों का उपयोग हो रहा है। यह बताते हुए खदारा ग्राम पंचायत के पंच शरद सिरसाम कहते हैं कि हमने बाचा को ऊर्जा की जरूरत में पूरी तरह से आत्म-निर्भर गाँव बनाने का संकल्प लिया है। आईआईटी बाम्बे और ओएनजीसी ने मिलकर बाचा को तीन साल पहले ही इस काम के लिये चुना था। इतने कम वक्त में ही हम बदलाव की तस्वीर देख रहे हैं।

धुएं से मुक्ति

बाचा के सभी 75 घरों में अब सौर-ऊर्जा पैनल लग गये हैं। सबके पास सौर-ऊर्जा भंडारण करने वाली बैटरी, सौर-ऊर्जा संचालित रसोई है। इंडक्शन चूल्हे का उपयोग करते हुए महिलाओं ने खुद को प्रौद्योगिकी के अनुकूल ढाल लिया है। पंच शांतिबाई उइके बताती हैं कि सालों से हमारे परिवार मिट्टी के चूल्हों का इस्तेमाल कर रहे थे। आग जलाना, आंखों में जलन, घना धुआं और उससे खांसी होना आम बात थी। अब हम इंडक्शन स्टोव के उपयोग के आदी हो चुके हैं। बड़ी आसानी से इस पर खाना बना सकते हैं। दूध गर्म करना, चाय बनाना, दाल-चावल, सब्जी बनाना बहुत आसान हो गया है। हालांकि हमारे पास एलपीजी गैस है, लेकिन इसका उपयोग अब कभी-कभार हो रहा है। श्रीमती राधा कुमरे बताती हैं कि पारंपरिक चूल्हा वास्तव में एक तरह से समस्या ही था। मैं अब इंडक्शन स्टोव के साथ सहज हूँ, जिसे किसी भी समय उपयोग ला सकते हैं।

वन धन पर घटता दबाव

वन सुरक्षा समिति के अध्यक्ष हीरालाल उइके कहते हैं - सूर्य-ऊर्जा के दोहन के प्रभाव को गांव से लगे जंगल पर कम होते जैविक दबाव से स्पष्ट मापा जा सकता है। वन सुरक्षा समिति के प्राथमिक कार्यों का हवाला देते हुए वे बताते हैं कि सभी 12 सदस्य वन संपदा की रक्षा करते हैं। दिन-रात सतर्क रहते हैं ताकि कोई भी जंगल को नुकसान न पहुंचाए। हमें अवैध पेड़-कटाई और वन्य-जीव शिकार जैसी गतिविधियों के बारे में हर समय सचेत रहना पड़ता है। इससे पहले, महिलाएँ ईंधन की लकड़ी के लिए प्राकृतिक रूप से गिरी हुई टहनियों को इकट्ठा करने के लिए नियमित रूप से जंगल जाती थीं। अब यह रुक गया है और हमें काफी राहत मिली है।

मैं इस गाँव का सबसे पुराना मूल निवासी हूं। मैंने करीब से देखा है कि चीजें कैसे बदली हैं। परिवार की आजीविका के लिए तीन एकड़ की खेती पर निर्भर करीब 80 साल के शेखलाल कवड़े याद करते हैं कि कैसे बाचा में कोई सड़क नहीं थी।

सफाई नहीं थी। बिजली नहीं थी। आज गांव पूरी तरह से बदल गया है। मैं खुश हूँ कि अपने जीवनकाल में ही बदलाव का आनंद मिल रहा है।

बाचा गांव की सामूहिक भावना को साझा करते हुए, अनिल उइके का कहना है कि बिजली के बिल कम होने से हर कोई खुश है। कारण यह है कि बिजली की खपत में भारी कमी आई है। सौर ऊर्जा संचालित एलईडी बल्ब के साथ घरों की ऊर्जा आवश्यकताओं को सौर ऊर्जा से आसानी से पूरा किया जा रहा है।

प्रेरणा-स्त्रोत

सरपंच राजेंद्र कवड़े बताते हैं कि बाचा ने आसपास के गाँवों को प्रेरित किया है। खदारा और केवलझिर गाँव के आसपास के क्षेत्रों में भी रुचि पैदा हुई है। केवलझिर बाचा से सिर्फ 1.5 किमी दूर है, जबकि खदारा 2 किमी है। मुझे लगता है कि बाचा ने मुझे जिले में ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान और सम्मान दिलाया है। जहाँ भी जाता हूँ लोग सम्मान देते हैं। इसी तरह की भावना शाहपुर गवर्नमेंट कॉलेज के बीएससी अंतिम वर्ष के छात्र अरुण कावड़े की भी है। उनका कॉलेज बाचा से 15 किलोमीटर दूर है। वे कहते हैं कि हम धीरे-धीरे सौर ऊर्जा पर पूरी तरह निर्भर हो रहे है क्योंकि ग्रिड द्वारा आपूर्ति की गई बिजली महंगी हो रही है। दूसरा बड़ा कारण यह है कि यह पर्यावरण के अनुकूल है।

सामाजिक व्यवहार में बदलाव

जनपद पंचायत घोड़ाडोंगरी के सदस्य रूमी दल्लू सिंह धुर्वे बताते हैं कि बाचा के सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन साफ दिखाई दे रहा है। उदाहरण के लिए, ग्रामीणों को तकनीकी अपनाने की झिझक नहीं रही। वे सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए वैज्ञानिक नजरिया अपना रहे हैं।

q स्त्रोत : **जनसंपर्क संचालनालय,**
मध्यप्रदेश,
भोपाल.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राष्ट्रपति ने वर्ष 2020 और 2021 के लिये **29 हस्तियों को प्रतिष्ठित नारी शक्ति पुरस्कारों** से किया सम्मानित

राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2022 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में वर्ष 2020 और 2021 के लिए नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान किए।

आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का सप्ताह भर चलने वाला समारोह नई दिल्ली में एक मार्च, 2022 को शुरू हुआ था। सप्ताह भर चलने वाले इस समारोह का समापन नारी शक्ति पुरस्कार वितरण से हुआ। ये पुरस्कार वर्ष 2020 और 2021 के लिये हैं तथा राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द ने आठ मार्च, 2022 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष 2020 का पुरस्कार समारोह कोविड-19 महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण 2021 में आयोजित नहीं हो पाया था।

सभी 28 पुरस्कार (वर्ष 2020 और 2021 के लिये 14-14) 29 हस्तियों को प्रदान किये गये। ये पुरस्कार उन लोगों को दिये गये, जिन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण, खासकर जोखिम वाली और सीमान्त महिलाओं के लिये उत्कृष्ट सेवा की है। नारी शक्ति पुरस्कार व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा किये जाने वाले उत्कृष्ट योगदानों को मान्यतास्वरूप महिला और बाल विकास मंत्रालय की पहल के तहत प्रदान किये जाते हैं। ये पुरस्कार उन महिलाओं को दिये जाते हैं, जिन्होंने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महती कार्य किया हो।

उल्लेखनीय है कि आयु, भौगोलिक बाधायें या संसाधनों तक पहुंच का अभाव इन उत्कृष्टता हासिल करने वाली महिलाओं को अपने सपने पूरे करने से नहीं रोक पाया। उनकी अदम्य भावना हमारे पूरे समाज तथा युवा मन को खासतौर से प्रेरित करेगी, ताकि वे लैंगिक पूर्वाग्रहों को तोड़ सकें तथा लैंगिक असमानता और भेदभाव के खिलाफ खड़े हो सकें। ये पुरस्कार उन महिलाओं के प्रयासों को मान्यता देते हैं, जो समाज की उन्नति में समान रूप से भागीदार बन रही हैं।

वर्ष 2020 के लिये नारी शक्ति पुरस्कार विजेताओं में विभिन्न क्षेत्रों की महिलायें शामिल हैं, जैसे उद्यमशीलता, कृषि, नवोन्मेष, सामाजिक कार्य, कला, दस्तकारी, एसटीईएमएम तथा वन्यजीव संरक्षण। वर्ष 2021 के लिये नारी शक्ति पुरस्कार विजेताओं में भाषा-विज्ञान, उद्यमशीलता, कृषि, सामाजिक कार्य, कला, दस्तकारी, मर्चेंट नेवी, एसटीईएमएम, शिक्षा, साहित्य, दिव्यांगजन अधिकार आदि क्षेत्रों की महिलायें शामिल हैं। पुरस्कृतों की सूची इस प्रकार है :

नारी शक्ति पुरस्कार 2020

नाम	राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	क्षेत्र
अनिता गुप्ता	बिहार	सामाजिक उद्यमशीलता
उषाबेन दिनेशभाई वसावा	गुजरात	जैविक किसान और जनजातीय स्वयंसेवी
नासिरा अख्तर	जम्मू एवं कश्मीर	नवोन्मेषी – पर्यावरण संरक्षण
संध्या धर	जम्मू एवं कश्मीर	समाज सेवी
निवृत्ति राय	कर्नाटक	कंट्री हेड, इंटेल इंडिया
टिफेनी ब्रार	केरल	समाजसेवी – दृष्टि बाधितों के लिये कार्य
पद्मा यांगचान	लद्दाख	लद्दाख क्षेत्र में भूली-बिसरी पाक कला और वस्त्र को दोबारा जीवित करना
जोधाइया बाई बैगा	मध्य प्रदेश	जनजातीय बैगा चित्रकार
सायली नंदकिशोर अगवाने	महाराष्ट्र	डाउन सिंड्रोम से पीड़ित कथक नृत्यांगना
वनिता जगदेव बोराडे	महाराष्ट्र	सांपों को बचाने वाली पहली महिला बचावकर्ता
मीरा ठाकुर	पंजाब	सिक्की ग्रास कलाकार
जया मुथू, तेजम्मा (संयुक्त रूप से)	तमिलनाडु.	**कलाकार :** टोडा कढ़ाई
इला लोध (मरणोपरान्त)	त्रिपुरा	प्रसूति विज्ञानी और स्त्री रोग विशेषज्ञ
आरती राणा	उत्तरप्रदेश	हथकरघा बुनकर और शिक्षक

नारी शक्ति पुरस्कार 2021

सथुपति प्रसन्ना	आंध्रप्रदेश	भाषा-विज्ञानी- अल्पसंख्यक जनजातीय भाषा का संरक्षण
रीता ताखे श्री तागे	अरुणाचल प्रदेश	उद्यमी
मधुलिका रामटेक	छत्तीसगढ़	समाज सेवी
निरंजनाबेन मुकुलभाई कालार्थी	गुजरात	लेखिका और शिक्षाशास्त्री
पूजा शर्मा	हरियाणा	किसान और उद्यमी
अंशुल मल्होत्रा	हिमाचल प्रदेश	बुनकर
शोभा गस्ती	कर्नाटक	समाज सेवी : देवदासी प्रथा उन्मूलन के लिये कार्य
राधिका मेनन	केरल	कप्तान मर्चेंट नेवी : आईएमओ द्वारा समुद्र में असाधारण वीरता दिखाने के लिये पुरस्कृत पहली महिला
कमल कुम्भार	महाराष्ट्र	सामाजिक उद्यमी
श्रुति महापात्रा	ओडिशा	दिव्यांगजन अधिकार कार्यकर्ता
बतूल बेगम	राजस्थान	मांड और भजन लोक गायन
तारा रंगास्वामी	तमिलनाडु	मनोचिकित्सिक और शोधकर्ता
नीरजा माधव	उत्तरप्रदेश	हिन्दी लेखिका : ट्रांसजेंडरों और तिब्बती शरणार्थियों के लिये कार्य
नीना गुप्ता	पश्चिम बंगाल	गणितज्ञ

महिलाओं को सम्मानित करना गौरवपूर्ण क्षण : अनुराधा सिंघई

गीत-संगीत के बीच महिला अधिकारियों ने बताई अपनी उपलब्धियां, संघर्ष और सफलता की कहानी

आईपीएस अधिकारी ने गाया गाना

...''बावरा मन तरसे रे... नैना भी मल्हार बनके बरसे रे''

.. तो डॉक्टर ने कहा:

''मैं एक महिला....

पुरूष से मेरी क्या तुलना....

भोपाल। विश्व महिला दिवस पर उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। यहां महिलाओं को उनके योगदान, सफलता और उपलब्धियों के लिए तो सम्मानित किया ही गया, उनके जीवन के प्रेरणादायक संघर्ष और कोरोना काल में सेवाभाव से किए गए कार्यों का भी जिक्र किया गया।

केन्द्र की कार्यकारी संचालक **श्रीमती अनुराधा सिंघई** ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि समाज को नई चेतना से अपने कार्यों के द्वारा जागृत करने वाली महिला अधिकारियों को सुनना और उनका सम्मान करना अपने आप में गौरवपूर्ण क्षण हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार पुरूषों की सफलता के पीछे महिलाओं का हाथ होता है उसी तरह महिलाओं की सफलता में भी पुरूष सहयोगी होता है। महिला आई.पी.एस. अधिकारी डी.आई.जी. रूचि वर्द्धन मिश्र ने कहा कि महिला दिवस सिर्फ महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि महिला-पुरूष दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण है। महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि महिला सशक्तिकरण, महिला उद्यमिता और महिला शिक्षा में पुरूष बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने बताया कि नियमित समाचार-पत्र पढ़ते रहने की आदत ने उन्हें जागरूक किया।

ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस (एम्स) भोपाल की मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. मनीषा श्रीवास्तव ने बताया कि गरीब बच्चों को पढ़ाने की इच्छा जागते ही पढ़ने में ऐसी रूचि जागी कि जीवन पढ़ाई में ही बिता दिया। इस अवसर पर डॉ. मनीषा ने अपनी एक कविता ''मैं एक महिला....पुरूष से मेरी क्या तुलना....भी पढ़कर सुनाई तो सभागार तालियों से गूंज उठा।

ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत अंतर्राष्ट्रीय आर्टिस्ट बंदना कुमारी ने बताया कि कला जगत में नाम रोशन करने का सपना लेकर एक छोटे-से गांव से चली थी और आज उस सपने को साकार कर जी रही हूं। उन्होंने घर-बाहर की चुनौतियों से निपटने के बारे में अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के दौरान आदिम जाति कल्याण विभाग की उपायुक्त सुश्री रीता सिंह का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर सेडमैप में कार्यरत महिला कर्मचारियों को भी स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों का स्वागत करते हुए परियोजना समन्वयक श्री एस.के. श्रीवास्तव ने कहा कि आज के युग में महिलाएं सभी क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर समाज को नई दिशा दे रही हैं। नारी एक ओर कोमल है तो दूसरी ओर महाशक्ति भी है। मंच का संचालन श्रीमती स्मिता खरे ने किया और धन्यवाद ज्ञापन और आभार प्रदर्शन सेडमैप इन्क्यूबेशन सेंटर के प्रमुख डॉ. वी.पी. सिंह ने किया। कार्यक्रम के दौरान सुमधुर गीत-संगीत ने सभी का भरपूर मनोरंजन किया।

महिला सम्मान का द्वितीय दिवस

समग्र ग्रामीण विकास से आत्मनिर्भर होगा देश : नन्दिता

विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) में लगातार दूसरे दिन भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। सेडमैप

की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने महिला दिवस के अगले दिन भाजपा महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. श्रीमती नन्दिता पाठक का सम्मान किया। उद्यमिता विद्यापीठ चित्रकूट की पूर्व संचालिका डॉ. श्रीमती नन्दिता पाठक ने सभी को महिला दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि उद्यमिता का प्रकाश यदि हम अपने ग्रामीण युवक-युवतियों तक पहुंचा सकें तो अपने भारत की दशा और दिशा ही बदल जाएगी। उन्होंने समग्र ग्रामीण विकास की संकल्पना के बारे में बताया और शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका एवं सामाजिक समरसता को बढ़ाने पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि हम सभी को मिलकर भारतीय परंपरा को मजबूत करना है। जो प्रकाश का पुंज, उद्यमिता का भाव अपने अंदर है उसे उजागर करने और जन-जन तक ले जाने की आवश्यकता है। उन्होंने उदाहरण देकर समझाया कि यदि सड़क पर पॉलीथिन पड़ी है तो जिसके अंदर उद्यमी दिमाग है, कुछ इनोवेशन करने का जज्बा है उसके अंदर उसी समय आइडिया आ जाएगा कि इस बेकार पड़ी पन्नी से क्या-क्या बनाया जा सकता है। रस्सी बनाई जा सकती है। पन्नी से सड़कें बनाई जा सकती हैं। अपने आप कई तरह की योजनाएं आ जाती हैं और जिसके दिमाग में इस प्रकार की योजनाएं आती हैं वही असली उद्यमी होता है।

डॉ. नन्दिता पाठक ने कहा कि भारत रत्न राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख कहा करते थे ''कबाड़ से जुगाड़ और जुगाड़ से कुछ अच्छी चीज बनाई जा सकती हैं। केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी भी कहते हैं ''वेस्ट से वेल्थ''। हर चीज उपयोगी हैं। हर मानव उपयोगी हैं चाहे किसी भी पेशे में हैं हर व्यक्ति अपने भारत देश के लिए उपयोगी है। अच्छे से मिलकर रहें। लड़ाई-झगड़ा न करें।

कार्यक्रम में डॉ. नन्दिता पाठक ने सभी से आह्वान किया कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक योजनाएं ले जाएं। समाज के दबे-कुचले लोगों को जागरूक कर उन तक उद्यमिता का प्रकाश ले जाएं तो देश और प्रदेश को आत्मनिर्भर होने से कोई नहीं रोक सकेगा। उन्होंने संस्कृत के एक

श्लोक मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् आत्मवत्सर्वभूतेषु य: पश्यति स: पण्डित: के माध्यम से महिला दिवस मनाने की उपयोगिता बताई और हिंदी अर्थ बताते हुए कहा कि हमारे यहां बहुत पहले ही बता दिया गया है कि जो दूसरे की पत्नी को अपनी माँ की तरह, दूसरे के धन को मिट्टी के समान और सभी को अपने जैसा जो देखता है वो ही पंडित यानी ज्ञानी है। ज्ञान प्राप्त करने वाला ही पंडित होता है।

- उद्बोधन के पश्चात सेडमैप की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने स्मृति चिन्ह भेंटकर डॉ. श्रीमती नन्दिता पाठक को सम्मानित किया और सेडमैप आगमन पर आभार व्यक्त किया। कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम सतत जारी रहेंगे।

q **आशीष श्रीवास्तव**
सेडमेप, भोपाल

सेडमैप में होली मिलन

उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) में 21 मार्च 2022, सोमवार को होली मिलन समारोह (रंगोत्सव) का आयोजन किया गया। केन्द्र की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने सभी

को होली एवं रंगपंचमी पर्व की बधाई-शुभकामनाएं दीं और कहा कि जो परंपरा बंद हो गई उसे फिर से प्रारंभ किया जा रहा है ताकि इसी बहाने एक-दूसरे से मिलना-जुलना शुरू हो और हम न केवल गिले-शिकवे दूर कर सकें, बल्कि खुशियां भी प्रकट कर सकें।

उन्होंने कहा कि वैसे भी सेडमैप साल

भर लोगों के जीवन में रंग भरने का काम करता है, इसलिए होली से अच्छा मौका और कोई हो नहीं सकता, इसलिए यह होली मिलन कार्यक्रम किया जा रहा है ताकि कार्यालय में एक सकारात्मक वातावरण बना रह सके। इससे पहले प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट (पीएमयू) प्रमुख श्री राजीव सिंघई ने सेडमैप की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। सभी को पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम का संचालन सुश्री नीता पंत ने किया। तत्पश्चात कार्यकारी संचालक ने प्रकाशन सहायक सुश्री राधा शर्मा एवं श्रीमती सुषमा सक्सेना को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर हास-परिहास से जुड़ी गतिविधियों ने सभी को खूब गुदगुदाया और पुरस्कार भी बटोरे। लाइब्रेरियन कम पब्लिकेशन असिस्टेंट सुश्री वंदना त्यागी ने 'बचपन की यादें' शीर्षक से काव्य पाठ किया और बताया कि बचपन की होली के दिन कितने सुहाने होते थे। पीएमयू कोआर्डिनेटर श्री एस.के. श्रीवास्तव ने फिर वही दिल लाया हूं फिल्म का गीत ''आंचल में सजा लेना आंसू .....'' सुनाकर प्रशंसा बटोरी तो श्रीमती स्मिता खरे ने सुमधुर आवाज में हम भी बड़े दिलवाले.....गीत गुनगुनाया उद्यमिता समाचार-पत्र में आकल्पन और अक्षर

संयोजन से जुड़े श्री दिनेश गावड़े ने न केवल स्लोगंस के माध्यम से कार्यकारी संचालक के सात माह के कार्यकाल की प्रशंसा की बल्कि एक नहीं, दो गीत प्रस्तुत कर सभी को तालियां बजाने को विवश कर दिया। लेखा सहायक श्री अजय निमोणकर ने चुटकुले सुनाकर सभी को हंसाया। जिला समन्वयक श्री अजय यादव की एक्टिंग देखकर सभी मुस्कुरा दिए तो श्री संजय भलावी ने लागू छूटे न गीत गाया। सेडमैप के अन्य अधिकारियों-कर्मचारियों

ने भी अपनी रोचक प्रस्तुति से सभी की भरपूर तालियां बटोरीं। सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगाया और शुभकामनाएं दीं। समापन से पूर्व सेडमैप की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने सभी को पुरस्कार वितरित किए।

q **आशीष श्रीवास्तव**
सेडमेप, भोपाल

जबलपुर में तीन सप्ताह के उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) जबलपुर के द्वारा महाकौशल क्षेत्र की मांग के आधार पर स्वरोजगार/उद्यम स्थापित करने की इच्छा रखने वाले युवाओं को विस्तृत जानकारी

और प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से 14 फरवरी से 5 मार्च 2022 तक खाद्य प्रसंस्करण पर आधारित तीन सप्ताह का उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी ने अपना कृषि व खाद्य प्रसंस्करण पर आधारित उद्योग/ व्यवसाय का चयन करके स्थापित करने का निश्चय किया।

परियोजना समन्वयक श्री एस एल कोरी ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्यम चयन प्रक्रिया, उद्यम के प्रकार, व्यवसाय के प्रकार, उद्यमिता क्या है, क्यों करना, कैसे करना, उद्यमिता हेतु साधन संसाधन कैसे जुटायें, उद्योग/व्यवसाय के लिए पूंजी की व्यवस्था कहां से और कैसे करें, क्षेत्र में किस किस प्रकार के उद्योगों की संभावनाएं हैं, शासन की विभिन्न वित्तीय संस्थाओं की जानकारी और उन से मिलने वाली सुविधाएं क्या हैं। उद्योग लगाने हेतु लक्ष्य निर्धारित कैसे करें। बैंकों से ऋण लेने की प्रक्रिया, प्रोजेक्ट रिपोर्ट क्या है, इसे बनाने की प्रक्रिया क्या है, उद्योग में प्रबंधन के प्रकार, उद्योग पंजीयन के प्रकार और पंजीयन की प्रक्रिया, टैक्स के प्रकार और जमा करने की प्रक्रिया, उद्योग में रखे जाने वाले बही खातों के प्रकार और उनका रखरखाव कैसे करें। मशीनों का चयन कैसे करें, मशीन उत्पादक और प्रदायकर्ताओं की जानकारी, आदि प्रदाय की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों के साथ-साथ सफल उद्यमियों को भी अनुभव शेयर करने के लिए आमंत्रित किया गया। साथ ही कुछ उत्पादों का व्यवहारिक प्रदर्शन भी किया गया। अतिथि वक्ताओं में प्रमुख वक्ता डा. बीएल साहू, संजय चौबे, प्रभात कनोजे, राहुल अग्रवाल, प्रदीप बिस्वारी, प्रवीण द्विवेदी, राममूर्ति खरे, सचिन उपाध्याय, अजय तिवारी आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

एस.एल.कोरी
परियोजना समन्वयक, जबलपुर

महाविद्यालय में अब पढ़ाई के साथ कौशल उन्नयन से रोजगार व स्वरोजगार की भी तैयारी

शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रतलाम के प्रायोजन में उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) द्वारा स्वामी

विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के तहत विश्व बैंक पोषित, मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा गुणवत्ता उन्नयन परियोजना के अन्तर्गत अल्पावधि बेसिक्स ऑफ ब्यूटी एण्ड हेयर ड्रेसिंग एवं घरेलु विद्युत उपकरणों की रिपेयरिंग में कौशल उन्नयन प्रशिक्षण का आयोजन 11 फरवरी 2022 से 21 फरवरी 2022 तक अलग-अलग दो बेचों में। महाविद्यालय में जिसमें 21 एवं 20 विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक भाग लेकर व्यवहारिक व सैद्धांतिक प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

प्राचार्य डॉ. संजय वाते के कुशल मार्गदर्शन में कार्यक्रम का शुभारंभ जिला नोडल अधिकारी श्री एस.एस. मौर्य और

विशेष अतिथि डॉ. अनिल चौधरी ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के बारे में जानकारी दी। श्री विजय चौरे जिला समन्वयक सेडमैप रतलाम द्वारा दस दिवसीय प्रशिक्षण की रूपरेखा के बारे में बताया गया कि प्रशिक्षण में कौशल के साथ उद्यमिता विकास पर भी प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि विद्यार्थी अपना स्वयं का रोजगार स्थापित कर सकें। डॉ. सी.एल. शर्मा ने कहा कि जीवन में सफलता के लिए ईमानदार प्रयास जरूरी है यदि महाविद्यालय के बहुसंख्यक विद्यार्थियों में से आप यहां मौजूद हैं तो इसका अर्थ यही है कि आपने अपना पहला कदम स्वरोजगार की ओर बढ़ाया है । योजना की समन्वयक डॉ. स्वाती पाठक ने कहा कि विद्यार्थियों को रोजगार से जोड़ने के लिए यह प्रकोष्ठ लगातार काम करता है जिसमें खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए अल्पावधि रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण समय-समय पर दिए जाते हैं। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. वाय.के. मिश्रा ने प्रशिक्षणार्थियों को महाविद्यालय परिसर में एक स्वरोजगार सेल बनाने की बात कहते हुए अपने कौशल को व्यवसाय में परिवर्तित करने एवं शासन प्रायोजित योजनाओं का लाभ लेने की बात कही गई। प्रोफेसर दिनेश बौरासी द्वारा कार्यक्रम का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. माणिक डांगे द्वारा सम्बंधित विधा में रोजगार के अवसरों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा गया कि आप सभी पढ़ाई के साथ उद्यम स्थापना पर भी प्रशिक्षित हों और अपने साथ अपने परिवार का भी आर्थिक विकास करें। अन्त में विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण में सीखे गए कार्य का व्यवहारिक प्रदर्शन व मूल्यांकन प्रस्तुत करते हुए स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करने की बात कही जिसे महाविद्यालय द्वारा सराहा गया।

विजय चौरे
जिला समन्वयक, सेडमैप रतलाम

मोबाइल, ब्यूटी पार्लर एवं बेग निर्माण का प्रशिक्षण संपन्न

कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसबिलिटी के तहत माइसेम सीमेंट फैक्ट्री के सहयोग से

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) के द्वारा मोबाइल रिपेयरिंग, ब्यूटी पार्लर एवं बेग मैन्यूफेक्चरिंग के प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन 16 फरवरी 2022 को हुआ। प्रत्येक प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस तरह कुल 120 प्रतिभागियों ने इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पी.एन. तिवारी,
जिला समन्वयक, दमोह

पीएमईजीपी के तहत ईडीपी प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश

(सेडमैप) के द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) के तहत

दमोह में 24 जनवरी 2022 से 04 फरवरी 2022 तक उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चार फरवरी को कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पी.एन. तिवारी, दमोह

खाद्य प्रसंस्करण पर सशुल्क ईडीपी सफलतापूर्वक संपन्न

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) के द्वारा दमोह प्रशिक्षण केंद्र में 8 मार्च 2022 से 10 मार्च 2022 तक खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों पर शुल्क आधारित उद्यमिता विकास कार्यक्रम (ईडीपी) का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 9 प्रतिभागियों ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पी.एन. तिवारी,
जिला समन्वयक, दमोह

तेंदूखेड़ा में एक दिवसीय उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) के द्वारा दमोह के तेंदूखेड़ा ब्लॉक में 17 मार्च 2022 को एक दिवसीय उद्यमिता जागरूकता सेमीनार का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में तेंदूखेड़ा के शासकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। यह सेमीनार संकल्प योजना के तहत आयोजित किया गया। जैसा कि हम जानते हैं कि दमोह एक आकांक्षी जिला है इसलिए सरकार का फोकस इस जिले से बेरोजगारी दूर कर अधिक से अधिक युवाओं को स्वरोजगार प्रदान करना है।

पी.एन. तिवारी,
जिला समन्वयक, दमोह

नर्मदापुर में पीएमईजीपी के अंतर्गत उद्यमिता विकास प्रशिक्षण का आयोजन

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) के द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) के अंतर्गत उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 07 मार्च 2022 से 16 मार्च 2022 तक किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 18 प्रशिक्षणार्थियों ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का समापन 23 मार्च 2022 को श्री रमेश हिले, जिला अग्रणी बैंक अधिकारी, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया नर्मदापुरम के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। समापन अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में श्री राजीव खन्ना,

सहायक निदेशक, खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग, भोपाल, श्री गुंजन जैन, प्रबंधक

जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र नर्मदापुरम, श्री प्रवीण कुमार, शाखा प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा उपस्थित थे।

पंकज कुमार ,
जिला समन्वयक
सेडमैप, नर्मदापुरम

स्वरोजगार एवं उद्योग

प्रारंभ करने की इच्छा रखने वाले युवाओं के लिए तीन सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम

उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप),

उद्योग भवन कटंगा, जबलपुर में

नए व्यवसाय/उद्योग लगाने हेतु

03 सप्ताह का प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के लाभ

प्रशिक्षण में । व्यवसाय चयन प्रक्रिया, । कृषि, खाद्य, प्रसंस्करण, । गारमेंट । फर्नीचर । इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक । सोलर एनर्जी, आदि के क्षेत्र में संभावित उद्योगों की जानकारी, । बाजार सर्वेक्षण प्रक्रिया, । उद्योग/व्यवसाय स्थापना प्रक्रिया, । पंजीयन व लाइसेंस प्रक्रिया, । टैक्स प्रक्रिया, । ऋण लेने की प्रक्रिया, । मशीनें क्रय व स्थापना प्रक्रिया, । सेल्स एंड मार्केटिंग, प्रबंधन के प्रकार व प्रबंधन कौशल, । खाता बही के प्रकार व उनकी संधारण प्रक्रिया, । ऋण/वित्तीय सहायता हेतु शासकीय योजनाओं की जानकारी, । आवेदन प्रक्रिया, । परियोजना प्रपत्र तैयार करने की विधि, । कार्यशील

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने हेतु शीघ्र पंजीयन कराएं।

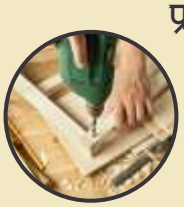

प्रशिक्षण : 18 अप्रेल 2022 से प्रारंभ होगा। **कुल स्थान :** 30

फीस जमा करके स्क्रीन शॉट वाट्सऐप करें।

प्रशिक्षण समय : प्रात: 11.00 बजे से 3.00 बजे तक प्रति दिन।

प्रशिक्षण शुल्क : रु. 3000/- CEDMAP **के खाते में**

online या चेक से जमा करना है।

A/c No. 3226335156, Central Bank of India. Ifsc code CBIN0283312

एस एल कोरी, परियोजना समन्वयक, **उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप)** मो. 9340520789

उद्यमिता समाचार पत्र

सदस्यता फॉर्म

मैं/हम उद्यमिता समाचार पत्र मासिक पत्रिका के एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष/या आजीवन सदस्य बनना चाहता हूं/चाहती हूं/चाहते हैं और इसके लिए क्रमश: रुपए 250/-, 495/, 740/-, 3300/- की सदस्यता राशि बैंक ड्राफ्ट/मनी ऑर्डर द्वारा उद्यमिता समाचार पत्र के नाम से देय भेज रहा हूं/रही हूं/रहे हैं। हमारी सदस्यता माह ..... वर्ष ..... के अंक से प्रारंभ कर पत्रिका निम्नलिखित पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें।

ड्राफ्ट/मनी ऑर्डर सं. .....

दिनांक .....

हस्ताक्षर

नाम/संस्था का नाम हिन्दी में : .....

....

अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में : .....

....

ग्राम (Village) ....

पोस्ट (Post) ....

तहसील (Tehsil) ....

जिला (District) ....

राज्य (State)..... .....

पिन (Pin) ....

मोबाइल (Mobile) ....

ई-मेल (E-mail) ....

हमारा पता

उद्यमिता समाचार पत्र

द्वारा : उद्यमिता विकास केंद्र मध्यप्रदेश (सेडमैप),
16-ए, अरेराहिल्स, भोपाल - 462011
फोन : 0755 - 4000900, 4000914

उद्यमिता समाचार पत्र में प्रचार बढ़ाएगा आपका व्यापार

उद्यमिता समाचार पत्र विज्ञापन दर (01 जनवरी 2022 से प्रभावी)

टाईप/स्थान	साईज (से.मी.)	दर (रु.)	एक साल में तीन अंकों की बुकिंग पर 15 % की छूट	चार से छ: अंकों की बुकिंग पर 30 % की छूट	सात से 12 अंकों की बुकिंग पर 45 % की छूट
बैक कवर	23 X 17	1,50,000	1,27,500	1,05,000	82,500
इन साइड कवर	23X17	1, 20,000	1,02,000	84,000	66,000
फुल पेज	23 X17	50,000	42,500	35,000	27,500
हाफ पेज	11.5 X17	25,000	21,250	17,500	13,750
क्वार्टर पेज	11.5 X8.5 5.5 X 17	20,000	17,000	14,000	11,000
डबल स्प्रेड	23 X34	100000	85,000	70,000	55,000
सिंगल कॉलम	1 कॉलम X 23 से.मी.	16,000	13,600	11,200	8,800
डबल कॉलम	2 कॉलम X23	25,000	21,250	17,500	13,750
यलो पेज	1 कॉलम X 3 से.मी.	6,000	5,100	4200	3,300
प्रायोजन शुल्क	1 पेज	15,000	12,750	10,500	8,250

लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

1. उच्च गुणवत्ता बनाए रखने और सही एवं प्रामाणिक जानकारियां उपलब्ध कराने के लिए उद्यमिता समाचार पत्र सामान्यत: अपनी जरूरतों को ध्यान में रख कर **साग्रहपूर्वक** मंगवाए गए आलेखों को प्रमुखता देता है।
2. स्वरोजगार स्थापना के क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करने वाले सभी विशेषज्ञों से यह अपेक्षित है कि वे अपने मौलिक लेख ही प्रकाशनार्थ भेजें, तथा अपने लेख के साथ मौलिकता का प्रमाण पत्र भी संलग्न करें।
3. प्रेषित लेखों में निम्नानुसार विषयों पर सामग्री अपेक्षित है :- **नियम-प्रक्रियाएं, नीतियां** : शासकीय, निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र से संबंधित ऐसी नियम-प्रक्रियाएं, योजनाएं एवं नीतियां जोकि उद्यमियों को स्वरोजगार स्थापना में मार्गदर्शन प्रदान कर सकें।

   इंस्टीट्यूट प्रोफाइल : किसी ऐसे संस्थान के बारे में जानकारी जो कि विद्यमान एवं भावी उद्यमियों को उनके व्यवसाय की स्थापना, संचालन एवं उन्नयन के संबंध में शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान करने में संलग्न हों।

   प्रोजेक्ट प्रोफाइल : किसी औद्योगिक/व्यावसायिक/सेवा इकाई की स्थापना से संबंधित ऐसी प्रोजेक्ट प्रोफाइल जोकि मानक प्रारूप में हो जिसका उपयोग उद्यमी वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्त करने सहित अपनी इकाई के संचालन में कर सकें।

   बाजार सर्वेक्षण : किसी उत्पाद/क्षेत्र विशेष पर आधारित ऐसा अध्ययन जोकि उद्यमी को उस उत्पाद/क्षेत्र में अपनी इकाई स्थापित करने के लिए विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध करा कर इकाई स्थापना के संबंध में निर्णय लेने में सहायक सिद्ध हो सके।

   सफलता की कहानी : किसी व्यक्ति, संस्थान, उपक्रम की उपलब्धियों के ऐसे ब्यौरे जोकि अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का माध्यम बन सकें।
4. उद्यमिता समाचार पत्र में पूर्णत: स्वरोजगार एवं रोजगार सर्जक लेखों को ही प्रोत्साहित किया जाता है, अत: किसी भी प्रकार की नकारात्मक टिप्पणी, समीक्षा, आलोचनात्मक लेख नहीं भेजें।
5. हिंदी भाषा के आलेखों को प्राथमिकता दी जाएगी। अंग्रेजी भाषा के लेखों के प्रकाशन पर भी विचार किया जा सकता है, अपितु ऐसे लेखों का आप अपनी ओर से ही अनुवाद करवा कर प्रेषित कर सकें तो प्रकाशन में सुविधा होगी।
6. आपके द्वारा भेजे गए लेखों के सुबोध होने के साथ ही भाषा शैली में शालीनता, शिष्टता व मर्यादा का ध्यान रखें।
7. इंस्टीट्यूट प्रोफाइल, सफलता की कहानी आदि को प्रायोजन के आधार पर भी प्रकाशित करने पर विचार किया जा सकता है।
8. लेखकों को लेख के अंत में अपना पूरा नाम, पता, ई-मेल एड्रेस, मोबाइल/फोन नंबर लिखना चाहिए।

उद्यमिता समाचार पत्र में लेख, सूचना, समाचार, विज्ञापन एवं प्रकाशन योग्य अन्य सामग्रियां निम्नानुसार पते पर प्रेषित की जा सकती है-

उद्यमिता समाचार पत्र

द्वारा : उद्यमिता विकास केंद्र मध्यप्रदेश (सेडमैप),
16-ए, अरेरा हिल्स, भोपाल- 462011
फोन : 0755 - 4000900, 4000914

उद्यमिता समाचार पत्र में लेख प्रेषित करने हेतु

घोषणा पत्र का प्रारूप

लेख का प्रस्तावित शीर्षक : .....

मूल लेखक का नाम : .....

सह लेखकों के नाम .....

- मैं/हम पुष्टि करते हैं कि मैंने पत्रिका में लेखों के प्रकाशन से संबंधित नियम व शर्तों को पढ़ व समझ लिया है और उनसे सहमत हूं।
- मैं/हम पुष्टि करते हैं कि लेख के सभी लेखक सर्वसम्मति से एकमत के साथ लेख प्रेषित कर रहे हैं तथा लेखकों के मध्य किसी भी प्रकार का हितों का टकराव नहीं है।
- मैं/हम पुष्टि करते हैं कि प्रस्तुत लेख, लेखक/लेखकों का मूल कार्य है और लेख को पूर्व में कहीं और प्रकाशित नहीं किया गया है तथा कहीं और प्रकाशन के लिए विचाराधीन नहीं है।
- सभी लेखकों की ओर से लेख प्रस्तुत करने की पूरी जिम्मेदारी मेरी (मूल लेखक की) होगी।
- मैं/हम पुष्टि करते हैं कि लेख के साथ सूचीबद्ध सभी लेखकों ने काम में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेख को पढ़ा है, आंकड़ों की वैधता और इसकी व्याख्या को प्रमाणित किया है, और इसे प्रस्तुत करने के लिए सभी सहमत हैं।
- मैं/हम पुष्टि करते हैं कि प्रस्तुत लेख किसी अन्य प्रकाशित कार्य का कॉपी या साहित्यिक संस्करण नहीं है।
- मैं/हम पुष्टि करते हैं कि जब तक पत्रिका के संपादकों द्वारा निर्णय नहीं लिया जाता है, तब तक मैं/हम किसी अन्य समाचार पत्र या पत्रिका में प्रकाशन के लिए यह लेख प्रेषित नहीं करूंगा/करुंगी/करेंगे।
- मैं/हम समझते हैं कि गलत तथ्यों/सूचना/जानकारी/आंकड़े प्रस्तुत करने पर नियमों के अनुसार मेरे/हमारे खिलाफ उचित दंडात्मक कार्यवाही की जा सकती है।
- मैं/हम प्रकाशक/संपादन मंडल को प्रस्तुत लेख में एडिटिंग करने का पूर्ण अधिकार देता हूं/देती हूं/देते हैं, और एडिट की हुई रचना मुझे/हमें पूर्ण रूप से मान्य होगी।
- लेख के प्रकाशन से यदि किसी प्रकार के नियम, कानून या कॉपीराइट एक्ट का उल्लंघन/या कोई विवाद होता है तो उससे संबंधित विषयों के लिए पूरी जिम्मेदारी मेरी/हमारी होगीं। उद्यमिता समाचार पत्र एवं उसका संपादन मंडल इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगा।

मूल लेखक सहित सभी लेखकों के हस्ताक्षर
नाम, पते, ई-मेल व मोबाइल नंबर

स्थान ..... दिनांक .....

रक्तदान कर

कार्यकारी संचालक ने की सराहनीय पहल

भोपाल। उद्यमिता विकास केंद्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) में पहली बार रक्तदान शिविर लगाया गया। केन्द्र की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने रक्तदान कर लोगों का हौसला बढ़ाया और कहा कि समाज के लिए कुछ करने की इच्छा रखने वाले सभी स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकते हैं। इसमें कोई धन नहीं लगता। हर व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए। उन्होंने बताया कि वे नियमित रक्तदाता रही हैं और हमीदिया अस्पताल के ब्लड बैंक से उनका पुराना नाता रहा है। कोरोना संक्रमण के बाद एक बार फिर से रक्तदान की शुरूआत करने पर सुखद अनुभूति हो रही है।

अरेरा हिल्स स्थित उद्यमिता भवन में आयोजित रक्तदान शिविर में 27 से अधिक दानदाताओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शिविर में सेडमैप के साथ ही मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम तथा निर्वाचन आयोग के अधिकारियों-कर्मचारियों ने भी रक्तदान कर सहयोग किया। स्वयं सेडमैप की कार्यकारी संचालक **श्रीमती अनुराधा सिंघई** ने रक्तदान कर लोगों को रक्तदान करने का संदेश दिया। इससे पहले रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया। हमीदिया अस्पताल से आए डॉक्टरों की टीम ने रक्तदान के लाभ बताए और रक्तदान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर किया। बताया गया

कि रक्त का कोई दूसरा विकल्प फिलहाल नहीं है। इसलिए रक्तदान करके हम औरों को जीवनदान दे सकते हैं।

रक्तदान सबका कर्तव्य

डॉ. अनुराग गुप्ता ने बताया कि टीकाकरण के एक माह बाद रक्तदान किया जा सकता है। कोई भी स्वस्थ्य व्यक्ति साल में चार बार रक्तदान कर औरों को नया जीवन दे सकता है। थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों को और गर्भवती महिलाओं के साथ ही कई तरह के रोगियों को खून की सर्वाधिक जरूरत पड़ती है इसी कमी को रक्तदान करके दूर करना हम सबका कर्तव्य होना चाहिए।

प्रोत्साहन जरूरी

डॉ. अनुभूति जैन ने बताया कि जरूरतमंद लोगों को समय पर खून मिल सके इसके लिए रक्तदान को प्रोत्साहित किया जा रहा है। शिविर में पैरामेडिकल स्टूडेंट्स के साथ ही अस्पताल की सहयोगी टीम में फतेह खान, श्याम पटेल, पंकज बैरागी, मनीष और नारायण प्रमुख रूप से शामिल रहे।

प्रशस्ति पत्र भेंट

केन्द्र की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई ने शिविर में आए लोगों का उत्साह बढ़ाया और 27 से अधिक रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र भेंट किये। कार्यक्रम का संचालन एवं अंत में आभार प्रदर्शन सुश्री नीता पंत ने किया और बताया कि सेडमैप की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई की पहल पर उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) कोरोना संक्रमण के बाद सामाजिक सेवा कार्यों में भागीदारी निभाने की ओर कदम बढ़ा रहा है, इसकी शुरूआत रक्तदान शिविर से की जा रही है।

आशीष श्रीवास्तव
सेडमेप, भोपाल

राष्ट्रीय
औद्योगिक परिदृश्य

अमरूद के निर्यात में जोरदार उछाल

वर्ष 2013 से लेकर अब तक 260 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज

वर्ष 2013 से लेकर अब तक दही और पनीर (भारतीय कॉटेज चीज) के निर्यात में 200 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली, 27 फरवरी, 2022। भारत से अमरूद के निर्यात में वर्ष 2013 से लेकर अब तक 260 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। अमरूद का निर्यात अप्रैल-जनवरी 2013-14 के 0.58 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर अप्रैल- जनवरी 2021-22 में 2.09 मिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया।

भारत से ताजे फलों के निर्यात में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। समस्त ताजे खाद्य पदार्थों की श्रेणी में सर्वाधिक निर्यात ताजे अंगूर का होता है। वर्ष 2020-21 के दौरान ताजे अंगूर का निर्यात कुल मिलाकर 314 मिलियन अमेरिकी डॉलर का हुआ। अन्य ताजे फलों का निर्यात 302 मिलियन अमेरिकी डॉलर, ताजे आम का निर्यात 36 मिलियन अमेरिकी डॉलर और अन्य (पान के पत्ते और मेवा) का निर्यात 19 मिलियन अमेरिकी डॉलर का हुआ। वर्ष 2020-21 के दौरान भारत से ताजे फलों के कुल निर्यात में ताजे अंगूर और अन्य ताजे फलों की हिस्सेदारी 92 प्रतिशत थी।

वर्ष 2020-21 के दौरान भारत से ताजे फलों का निर्यात प्रमुख रूप से बांग्लादेश (126.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर), नीदरलैंड (117.56 मिलियन अमेरिकी डॉलर), संयुक्त अरब अमीरात (100.68 मिलियन अमेरिकी डॉलर), ब्रिटेन (44.37 मिलियन अमेरिकी डॉलर), नेपाल (33.15 मिलियन अमेरिकी डॉलर), ईरान (32.54 मिलियन अमेरिकी डॉलर), रूस (32.32 मिलियन अमेरिकी डॉलर), सऊदी अरब (24.79 मिलियन अमेरिकी डॉलर), ओमान (22.31 मिलियन अमेरिकी डॉलर) और कतर (16.58 मिलियन अमेरिकी डॉलर) को किया गया। वर्ष 2020-21 में भारत से ताजे फलों के निर्यात में शीर्ष दस देशों की हिस्सेदारी 82 प्रतिशत रही है।

दही और पनीर (भारतीय कॉटेज चीज) के निर्यात में भी 200 प्रतिशत की जोरदार वृद्धि दर्ज की गई है जो अप्रैल-जनवरी 2013-14 के 10 मिलियन अमेरिकी डॉलर से काफी बढ़कर अप्रैल-जनवरी 2021-22 में 30 मिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। उल्लेखनीय है कि पिछले पांच वर्षों से डेयरी निर्यात 10.5 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रहा है। वर्ष 2021-22 (अप्रैल-नवंबर) में भारत से 181.75 मिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के डेयरी उत्पादों का निर्यात किया गया और चालू वित्त वर्ष में यह पिछले वर्ष के कुल निर्यात मूल्य को पार कर जाने की प्रबल संभावना है।

वर्ष 2020-21 में भारत से डेयरी उत्पादों का निर्यात प्रमुख रूप से यूएई (39.34 मिलियन अमेरिकी डॉलर), बांग्लादेश (24.13 मिलियन अमेरिकी डॉलर), अमेरिका (22.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर), भूटान (22.52 मिलियन अमेरिकी डॉलर), सिंगापुर (15.27 मिलियन अमेरिकी डॉलर), सऊदी अरब (11.47 मिलियन अमेरिकी डॉलर), मलेशिया (8.67 मिलियन अमेरिकी डॉलर), कतर (8.49 मिलियन अमेरिकी डॉलर), ओमान (7.46 मिलियन अमेरिकी डॉलर) और इंडोनेशिया (1.06 मिलियन अमेरिकी डॉलर) का किया गया। 2020-21 में भारत से डेयरी निर्यात में शीर्ष दस देशों की हिस्सेदारी 61 प्रतिशत से भी अधिक रही है।

प्लास्टिक रीसाइक्लिंग और अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में

मेगा शिखर सम्मेलन का आयोजन

उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान शुरू

नई दिल्ली, 04 मार्च 2022। केन्द्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) राज्य मंत्री श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा ने एमएसएमई मंत्रालय द्वारा ऑल-इंडिया प्लास्टिक मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एआईपीएमए) के सहयोग से नई दिल्ली में 4 से 5 मार्च, 2022 तक प्लास्टिक रीसाइक्लिंग और अपशिष्ट प्रबंधन पर आयोजित किए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किया। एमएसएमई मंत्रालय ने पूरे देश में, विशेष रूप से आकांक्षी जिलों में युवाओं के मध्य उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए दो विशेष पहल संभव और स्वावलंबन की भी शुरूआत की।

अपने कचरे को जानें और रीसाइक्लिंग करना कैसे सही काम है एवं इसे सही तरीके से कैसे किया जाए के बारे में जागरूकता लाने के लिए इस मेगा अंतर्राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में बातचीत करते हुए, केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा ने कहा कि यह मेगा आयोजन हितधारकों और विशेषज्ञों को एमएसएमई के प्रभाव और संभावित समाधान के बारे में विचार-विमर्श करने और स्वच्छ भारत अभियान के विजन में अधिक विश्वास के साथ प्लास्टिक उद्योग और रीसाइक्लिंग क्षेत्र में नए व्यापार अवसरों का सृजन करने के लिए एक साथ लाने वाला प्रभावी मंच है।

शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए, एमएसएमई सचिव श्री बी बी स्वैन ने कहा कि प्लास्टिक रीसाइक्लिंग इस उद्योग में नवाचार और स्थिरता की दिशा में एक सबसे महत्वपूर्ण कदम है। प्लास्टिक उद्योग वैश्विक क्षमता और रोजगार के अवसरों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार की मेक इन इंडिया की सफलता में प्रमुख भूमिका निभाएगा। प्लास्टिक और रीसाइक्लिंग की भूमिका पर जोर देते हुए एआईपीएमए के अध्यक्ष श्री किशोर पी. संपत ने कहा कि एआईपीएमए ने जागरूकता पैदा करने और अपने सदस्यों को विस्तारित उत्पादकों की जिम्मेदारी (ईपीआर) और नई प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नीतियों की गति के अनुसार अपने सदस्यों के स्तर को ऊपर लाने के लिए प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन और रीसाइक्लिंग प्रौद्योगिकियों पर विभिन्न राज्यों के एमएसएमई-डीआई के साथ अनेक वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

एआईपीएमए की शासी परिषद के अध्यक्ष श्री अरविंद मेहता ने कहा कि एक स्थायी, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन प्लास्टिक को लाभप्रद रूप से प्राप्त करने और उसकी रीसाइक्लिंग करने की क्षमता पर निर्भर करता है। इस क्षेत्र को औपचारिक रूप देने और रीसाइक्लिंग की गुणवत्ता और क्षमता दोनों में व्यापक सुधार करने की अपार संभावनाएं हैं। यह मेगा शिखर सम्मेलन देश में रीसाइक्लिंग और अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में एमएसएमई के लिए अनेक व्यापार अवसरों का सृजन करेगा।

केवीआईसी ने किसानों और मधुमक्खी पालकों की सहायता के लिए **नवोन्मेषी मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन** की शुरुआत की

पीआईबी, 07 जनवरी, 2022। केवीआईसी के अध्यक्ष श्री विनय कुमार सक्सेना ने उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के सिरोरा गांव में देश की पहली मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन लांच की। इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्री नंद किशोर गुज्जर तथा केवीआईसी सदस्य (मध्य जोन) श्री जय प्रकाश गुप्ता भी उपस्थित थे। मोबाइल वैन का डिजाइन 15 लाख रूपए की लागत से केवीआईसी ने अपने बहुविषयक प्रशिक्षण केंद्र, पंजोखेड़ा में आंतरिक रूप किया है। यह मोबाइल हनी प्रोसेसिंग यूनिट 8 घंटों में 300 किग्रा तक शहद का प्रसंस्करण कर सकती है। यह वैन जांच प्रयोगशाला से भी सुसज्जित है जो तत्काल शहद की गुणवत्ता की जांच कर सकती है। मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन केवीआईसी शहद मिशन के तहत एक बड़ी उपलब्धि है जिसका उद्देश्य मधुमक्खी पालकों को प्रशिक्षण देना, किसानों को मधुमक्खी के बक्से वितरित करना तथा गांवों के शिक्षित और बेरोजगार युवकों को मधुमक्खी पालन गतिविधियों के माध्यम से अतिरिक्त आय अर्जित करने में सहायता करना है। शहद उत्पदन के जरिए प्रधानमंत्री के '' मीठी क्रांति'' के विजन को दृष्टि में रखते हुए, केवीआईसी ने मधुमक्खी पालकों तथा किसानों को उनकी शहद की ऊपज का उचित मूल्य प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए यह अनूठा नवोन्मेषण प्रस्तुत किया है।

मधुमक्खीपालकों के द्वार पर होगा शहद प्रसंस्करण

मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन को इस प्रकार से डिजाइन किया गया है कि यह मधुमक्खी पालकों के शहद का प्रसंस्करण उनके द्वार पर ही करेगी और इस प्रकार प्रसंस्करण के लिए शहद को दूर के शहरों में स्थित प्रसंस्करण केंद्रों तक ले जाने में होने वाली परेशानी तथा लागत की बचत करेगी। जहां यह मधुमक्खी पालन को छोटे मधुमक्खी पालकों के लिए अधिक लाभदायक बनाएगी, वहीं शहद की शुद्धता तथा सर्वोच्च गुणवत्ता मानकों का रखरखाव भी करेगी।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए, केवीआईसी के अध्यक्ष श्री सक्सेना ने कहा कि शहद मिशन का उद्देश्य देश में शहद का उत्पादन बढ़ाना और किसानों तथा मधुमक्खी पालकों की आय में वृद्धि करना है। उन्होंने कहा कि यह नवोन्मेषी मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन कई प्रकार के उद्देश्यों को पूरा करेगी। मधुमक्खी पालकों के लिए शहद निकालने तथा प्रसंस्करण की लागत में कमी लाने के अतिरिक्त, यह शहद में किसी भी प्रकार की मिलावट की आशंका को समाप्त कर देगी क्योंकि प्रसंस्करण मधुमक्खी पालकों एवं किसानों के दरवाजों पर ही किया जाएगा।

छोटे किसानों एवं मधुमक्खीपालकों के लिए वरदान

यह शहद प्रसंस्करण यूनिट उन छोटे किसानों एवं मधुमक्खी पालकों के लिए एक वरदान साबित होगी जिन्हें अपने शहद को प्रसंस्करण तथा पैकेजिंग के लिए अन्य शहरों में ले जाने पर अतिरिक्त लागत उठानी पड़ती है। उन्होंने कहा कि प्रायोगिक परियोजना के अनुभव के आधार पर, विशेष रूप से पूर्वोत्तर के राज्यों में ऐसी और मोबाइल हनी प्रोसेसिंग इकाइयां आरंभ की जाएंगी। उल्लेखनीय है कि प्रसंस्करण संयंत्रों तक शहद को ले जाना छोटे किसानों तथा मधुमक्खी पालकों के लिए एक खर्चीला मामला है। उच्च परिवहन लागत तथा प्रसंस्करण के खर्च से बचने के लिए, अधिकांश मधुमक्खी पालक अपने कच्चे शहद को अपने फार्म पर ही बहुत कम कीमत पर एजेटों को बेच देते थे। इसके परिणामस्वरूप, ये मधुमक्खी पालक मधुमक्खी पालन के वास्तविक मौद्रक लाभों को अर्जित करने में सक्षम नहीं हो पाते थे। इस मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन से उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब तथा राजस्थान जैसे राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में मधुमक्खी पालकों को लाभ मिलने की उम्मीद है।

मोबाइल हनी प्रोसेसिंग वैन इन राज्यों की विभिन्न मधुवाटिकाओं में जाएंगी, जहां मधुमक्खी पालक अपने शहद को मामूली शुल्क पर प्रसंस्कृत कराने में सक्षम हो पाएंगे और वह भी उनके दरवाजों पर ही। इस शहद प्रसंस्करण इकाई में शहद की जांच करने के लिए एक प्रयोगशाला टेक्निशियन तथा एक तकनीकी सहायक भी शामिल रहते हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि शहद मिशन के तहत, केवीआईसी ने अभी तक देश भर में लगभग 1.60 लाख मधुमक्खी बक्सों का वितरण किया है और 40,000 से अधिक रोजगारों का सृजन किया है। केवल पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र में ही जहां वनस्पतियों की प्रचुरता है, केवीआईसी ने किसानों तथा मधुमक्खी पालकों को लगभग 8000 मधुमक्खी बक्से वितरित किए हैं जिससे उनकी आय कई गुना बढ़ गई है और अंत:परागण के जरिये फसल की ऊपज में बढ़ोतरी हुई है।

ट्राइफेड ने आजीविका सृजन के क्षेत्र में
75 आदिवासी महिलाओं को सम्मानित किया

पिछले कुछ वर्षों में, सभी क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को सम्मान देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता रहा है फिर चाहे वो सांस्कृतिक के क्षेत्र में या आर्थिक, राजनितिक या फिर सामाजिक के क्षेत्र में हो । इस वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव के अनुरूप, ट्राइफेड ने श्री बिश्वेश्वर टुडू, माननीय

जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री, श्री अनिल कुमार झा, सचिव, जनजातीय कार्य एवं श्री रामसिंह राठवा, ट्राइफेड के अध्यक्ष की गरिमामयी उपस्थिति में इस महत्वपूर्ण अवसर को मनाया। इस अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह में, उन पहलुओ और कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित किया गया था जो देश भर से आदिवासी महिला कारीगरों और वन धन लाभार्थियों और आजीविका बढ़ाने की दिशा में उनके योगदान को प्रदर्शित करते हैं। हाइब्रिड मोड में आयोजित इस समारोह के अवसर का जश्न मनाते हुए ट्राइफेड ने आदिवासी महिला अचीवर्स के प्रयासों को मान्यता देकर 75 आदिवासी महिलाओं के योगदान को सराहा एवं सम्मानित किया जिन्होंने अपने समुदायों में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कार्यक्रम के दौरान उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाओं को उनके योगदान और उपलब्धियों पर प्रकाश डालते

हुए एक स्मारिका और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

दो साल से भी कम समय में, ट्राइफेड ने 25 राज्यों और 2 केंद्रशासित प्रदेशों के, 52,967 वन धन सेल्फ हेल्प ग्रुप, जो की 3110 वन धन विकास केन्द्रों से बने हैं, को स्वीकृति दी है और जिससे 9.27 लाख लाभार्थियों को आजीविका प्राप्त हुई है। इस योजना के माध्यम से विकसित किए गए उत्पादों को ट्राइब्स इंडिया आउटलेट और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म (www.tribesindia.com) के माध्यम से बेचा जाता है और उन्हें अन्य मार्केटिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी विपणन किया जाता है।

वर्तमान में, एक आदर्श वन-स्टॉप गंतव्य, ट्राइब्स इंडिया के कैटलॉग जिसमें देश भर के प्राकृतिक उत्पाद, हस्तशिल्प और हथकरघा आदिवासी जीवन के तरीकों को दर्शाते हैं, को शामिल किया गया है। इसके अलावा, ट्राइफेड जनजातीय उत्पादों को ट्राइब्स इंडिया नामक अपनी दुकानों के माध्यम से और फ्रेंचाइज आउटलेट्स और राज्य एम्पोरिया के आउटलेट्स के माध्यम से विपणन कर रहा है। ट्राइफेड ने 1999 में नई दिल्ली में एकल दुकान के साथ शुरूआत की और अब, ट्राइफेड 119 ऐसे आउटलेट के माध्यम से इन आदिवासी उत्पादों का विपणन करता है।

वाणिज्य और उद्योग के क्षेत्र में किसी भी संभावित व्यवधान से बचने के लिए केंद्र ने स्थापित किए
हेल्पडेस्क और कंट्रोल रूम

पीआईबी, 07 जनवरी, 2022। देश भर में कोविड मामलों में वृद्धि को देखते हुए उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ने कोविड मामलों के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा उठाए गए कदमों का संज्ञान लिया है। इसलिए एहतियात के तौर पर हमारे व्यापार इको-सिस्टम की सहायता करने के लिए डीपीआईआईटी विभिन्न राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों (यदि कोई हो) के कारण माल और आवश्यक वस्तुओं के परिवहन और वितरण के दौरान उत्पन्न होने वाली स्थिति और मुद्दों (यदि कोई हो) की निगरानी करेगा।

निर्माण, परिवहन, वितरण, थोक या ई-कॉमर्स कंपनियों को माल के परिवहन और वितरण या संसाधनों को जुटाने में किसी भी तरह की परेशानी का सामना करना पड़े तो इसकी सूचना इस विभाग को निम्नलिखित टेलीफोन नंबर/ईमेल पर दी जा सकती है : टेलीफोन नंबर + 91 11 23063554, 23060625 ईमेल : dpiit-controlroom @gov.in उपरोक्त टेलीफोन नंबर

05.01.2022 से सुबह 9 बजे से रात 9 बजे तक काम कर रहे हैं। इस नियंत्रण कक्ष के माध्यम से विभिन्न साझेदारों द्वारा रिपोर्ट किए गए मुद्दों को संबंधित राज्य/संघशासित क्षेत्र सरकारों के समक्ष उठाया जाएगा। इसलिए साझेदारों से अनुरोध है कि वे उपरोक्त सेवाओं को प्रभावित करने वाले मुद्दों के बारे में नियंत्रण कक्ष को सूचित करें। निर्यात व आयात की स्थिति और कोविड-19 मामलों की वृद्धि को देखते हुए वाणिज्य विभाग और विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने व्यापार हितधारकों के सामने आने वाली कठिनाइयों की निगरानी करने का भी कार्य किया है। डीजीएफटी ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संबंध में उत्पन्न होने वाले मुद्दों का समर्थन करने और उपयुक्त समाधान खोजने के लिए कोविड-19 हेल्पडेस्क का संचालन किया है। कोविड-19 हेल्पडेस्क वाणिज्य विभाग/डीजीएफटी, आयात व निर्यात से जुड़े लाइसेंसिंग मुद्दों, सीमा शुल्क निकासी में देरी और उस पर उत्पन्न होने वाली जटिलताओं, आयात/निर्यात दस्तावेज से संबंधित मुद्दों, बैंकिंग मामलों आदि से संबंधित मुद्दों को देखेगा।

हेल्पडेस्क केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के अन्य मंत्रालयों/विभागों/एजेंसियों से संबंधित व्यापार संबंधी मुद्दों को एकत्र कर उसका मिलान करेगा और उनका सहयोग लेने और यथासंभव समाधान देने के लिए समन्वय भी करेगा। निर्यात-आयात समूह निम्नलिखित चरणों का उपयोग करके डीजीएफटी वेबसाइट पर सूचना दे सकता है और अपने मुद्दों से संबंधित जानकारी पेश कर सकता है जिन पर सहयोग की आवश्यकता है। डीजीएफटी की वेबसाइट (https://dgft.gov.in) - पर जाएं-- > सेवाएं -- >डीजीएफटी हेल्पडेस्क सेवाएं नया आवेदन बनाएं और श्रेणी को कोविड-19 के रूप में चुनें उपयुक्त उप श्रेणी का चयन करें, अन्य प्रासंगिक विवरण दर्ज कर उसे जमा कर दें।

वैकल्पिक रूप में मुद्दों को ईमेल आईडी : dgftedi@nic.in पर सब्जेक्ट शीर्षक में कोविड-19 हेल्पडेस्क के साथ भेजा जा सकता है, या टोल फ्री नंबर 1800-111-550 पर फोन किया जा सकता है। डीजीएफटी हेल्पडेस्क सेवाओं के तहत स्टेटस ट्रैकर का उपयोग करके प्रस्तावों और फीडबैक की स्थिति को खोजा जा सकता है। इन टिकटों की स्थिति अपडेट होने पर ईमेल और एसएमएस भी भेजे जाएंगे। व्यापार से जुड़े समूहों से अनुरोध है कि कृपया वे दी गई सुविधाओं का उचित उपयोग करें।

काशी विश्वनाथ मंदिर में श्रद्धालु

खादी हस्तनिर्मित कागज की चप्पल पहनेंगे

पीआईबी, 10 जनवरी, 2022। वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं और मंदिर के सैकड़ों कर्मचारियों को अब नंगे पांव मंदिर परिसर में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं होगी। 14 जनवरी, 2022 से खादी और

ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) श्रद्धालुओं और कर्मचारियों के उपयोग के लिए खादी हस्तनिर्मित कागज से बनी यूज एंड थ्रो चप्पलों की बिक्री शुरू की है।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की पार्किंग में स्थित खादी बिक्री आउटलेट के माध्यम से खादी हस्तनिर्मित कागज की चप्पलों की बिक्री की जाएगी। हस्तनिर्मित कागज की चप्पलों को 50 रुपए प्रति जोड़ी की मामूली कीमत पर खरीदा जा सकता है। चप्पलों की बिक्री वाराणसी में पंजीकृत खादी संस्थान, काशी हस्तकला प्रतिष्ठान द्वारा की जाएगी।

यह घटनाक्रम तब सामने आया जब प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ मंदिर के कर्मचारियों के लिए जूट से बनी चप्पलें भेजीं। प्रधानमंत्री को पता चला कि मंदिर में काम करने वाले अधिकतर लोग नंगे पांव ही अपने दायित्व का निर्वहन करते हैं। मंदिर परिसर में चमड़े या रबर से बने जूते पहनकर जाना वर्जित है। मंदिर के पुजारियों, सुरक्षा गार्डों, सफाई कर्मियों और सेवा में लगे लोगों सहित पूरे कार्यबल को इस नियम का पालन करना पड़ता है।

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष, श्री विनय कुमार सक्सेना ने कहा कि हस्तनिर्मित कागज से बने हुए यूज एंड थ्रो चप्पलों का उपयोग न केवल मंदिर की पवित्रता को कायम

रखेगा बल्कि कष्टप्रद मौसम के दौरान श्रद्धालुओं को गर्मी और ठंड से भी बचाएगा। साथ ही इन चप्पलों से किसी भी प्रकार के प्रदूषण से बचाव होगा क्योंकि ये प्राकृतिक रेशों से बनी हुई हैं। श्री सक्सेना ने कहा ये हस्तनिर्मित कागज की चप्पलें मंदिर की पवित्रता को बनाए रखेंगी। ये चप्पल पूर्ण रूप से इको फ्रेंडली सामग्री से बनी हुई हैं। मंदिर परिसर में इन चप्पलों का इस्तेमाल करने से खादी कारीगरों के लिए रोजगार के दीर्घकालिक अवसर भी उत्पन्न होंगे।

गौरतलब है कि खादी के हस्तनिर्मित कागज से बनी यूज एंड थ्रो चप्पलों को भारत में पहली बार विकसित किया गया है। ये हस्तनिर्मित कागज की चप्पलें शत प्रतिशत पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी हैं। इन चप्पलों को बनाने में उपयोग किया जाने वाला हस्तनिर्मित कागज पूरी तरह से लकड़ी से मुक्त होता है और कपास तथा रेशम के चिथड़े और कृषि अपशिष्ट जैसे प्राकृतिक रेशों से बना हुआ होता है और इसलिए यह पूजा स्थलों में उपयोग के लिए उपयुक्त है। यह स्वच्छता के दृष्टिकोण से भी बहुत ही प्रभावी है। इन चप्पलों को केवीआईसी ने हस्तनिर्मित कागज उद्योग को समर्थन प्रदान करने और कारीगरों के लिए रोजगार के दीर्घकालिक अवसर उत्पन्न करने के उद्देश्य से विकसित किया है।

अमेरिका निर्यात होंगे
भारत के आम, अनार

पीआईबी, 11 जनवरी, 2022। केंद्र सरकार ने नए सीजन में अमेरिका के लिए भारतीय आमों के निर्यात के लिए यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर (यूएसडीए) से मंजूरी प्राप्त कर ली है। अमेरिका के उपभोक्ता अब भारत के उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले आम प्राप्त कर सकेंगे।

भारतीय आमों के निर्यात पर अमेरिका द्वारा 2020 से ही प्रतिबंध लगा दिया गया था क्योंकि यूएसडीए के निरीक्षक कोविड-19 महामारी के कारण अंतर्राष्ट्रीय यात्रा पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण विकिरण (इरेडिएशन) सुविधा के निरीक्षण के लिए भारत के दौरे पर आने में असमर्थ हो गए थे। अभी हाल में, 23 नवंबर, 2021 को आयोजित 12वीं-अमेरिकी व्यापार नीति फोरम (टीपीएफ) की बैठक के अनुसार कृषि तथा किसान कल्याण विभाग और यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर (यूएसडीए) ने 2 बनाम 2 कृषि बाजार पहुंच मुद्दों को कार्यान्वित करने के लिए एक संरचना समझौते पर हस्ताक्षर किया है। इस समझौते के तहत, भारत और अमेरिका भारत के आमों तथा अनारों के अमेरिका को निर्यात के लिए विकिरण तथा अमेरिका से चेरी और अल्फाल्फा सूखी घास (हे) के आयात पर संयुक्त प्रोटोकॉल का अनुसरण करेंगे। भारत को विकिरण उपचार की पूर्व मंजूरी की निगरानी के चरण-वार हस्तांतरण सहित एक संशोधित कार्य योजना की रूपरेखा तैयार की गई है जैसीकि दोनों देशों के बीच सहमति हुई है।

परस्पर समझौते के हिस्से के रूप में, भारत मार्च के बाद से आमों की अल्फांसों किस्म के साथ आरंभ करते हुए अमेरिका में आमों का निर्यात करने में सक्षम हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि अमेरिका में भारतीय आमों की व्यापक स्वीकृति और उपभोक्ता वरीयता है तथा भारत ने 2017-18 में अमेरिका को 800 मीट्रिक टन (एमटी) आमो का निर्यात किया था और इन फलों का निर्यात मूल्य 2.75 मिलियन डॉलर था। इसी प्रकार, 2018-19 में अमेरिका को 3.63 मिलियन डॉलर के बराबर के 951 एमटी आमों का निर्यात किया गया था जबकि वित्त वर्ष 2019-20 में अमेरिका को 4.35 मिलियन डॉलर के बराबर के 1,095 एमटी आमों का निर्यात किया गया था। आकलनों के अनुसार, 2022 में आमों का निर्यात 2019-20 के आंकडों की तुलना में अधिक हो सकता है। यूएसडीए की मंजूरी महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना जैसे पारंपरिक आम उगाए जाने वाले क्षेत्रों से निर्यात के लिए रास्ता प्रशस्त कर देगी।

कृषि तथा प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने कहा कि यह उत्तर तथा पूर्व भारत के क्षेत्रों से उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के लंगड़ा, चौसा, दसहरी, फजली आदि आमों की अन्य स्वादिष्ट किस्मों के निर्यात के लिए भी अवसर उपलब्ध कराएगा। अनार का निर्यात अप्रैल, 2022 से आरंभ होगा। अमेरिका से चेरी और अल्फाल्फा सूखी घास का आयात अप्रैल, 2022 से आरंभ होगा।

इंडियास्किल्स 2021 राष्ट्रीय प्रतियोगिता के
270 विजेता 61 स्वर्ण, 77 रजत, 53 कांस्य और 79
उत्कृष्टता पदकों से सम्मानित

पीआईबी, 10 जनवरी, 2022। भारत सरकार के कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के सचिव राजेश अग्रवाल के 150 से अधिक प्रतिभागियों को सम्मानित करने के साथ, देश की सबसे बड़ी कौशल प्रतियोगिता इंडियास्किल्स

2021 नेशनल्स का समापन हो गया। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में कंक्रीट निर्माण कार्य, सौंदर्य चिकित्सा, कार पेंटिंग, स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल, दृश्य बिक्री उत्पाद, ग्राफिक डिजाइन प्रौद्योगिकी, दीवार और फर्श टाइलिंग, वेल्डिंग, आदि जैसे 54 कौशलों में भागीदारी की गई। युवाओं की क्षमता और पहचान को बढ़ावा देने वाली इंडियास्किल्स प्रतियोगिता में इस वर्ष 26 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के 500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को पृथक रखने के लिए 3 से 5 जनवरी तक बेंगलुरु और मुंबई में आठ कौशल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

150 से अधिक विजेताओं में से 59 को 100,000 रुपए की नकद पुरस्कार राशि के साथ स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया, 73 को 75,000 रुपए की पुरस्कार राशि के साथ रजत पदक और 53 को 50,000 रुपए की नकद पुरस्कार राशि के साथ कांस्य पदक से सम्मानित किया गया। 50 से अधिक प्रतिभागियों ने उत्कृष्टता पदक हांसिल किया। इस वर्ष की इंडियास्किल्स प्रतियोगिता ने अगस्त-सितंबर 2021 में 2.5 लाख से अधिक पंजीकरणों के साथ कौशल विकास के क्षेत्र में उत्कृष्टता के स्तर को हासिल किया है।

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के सचिव राजेश अग्रवाल ने इंडियास्किल्स राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भागीदारी करने वाले उम्मीदवारों की प्रतिभा, उत्साह और दृढ़ता को देखते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी विजेताओं और प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि सरकार, उद्योग और विशेषज्ञ यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर कार्य करेंगे कि टीम इंडिया इस वर्ष के अंत में शंघाई, चीन में आयोजित होने वाली वर्ल्डस्किल्स अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और उपकरणों से सुसज्जित हो।

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के मुख्य परिचालन अधिकारी और कार्यवाहक मुख्य कार्यकारी अधिकारी वेद मणि तिवारी ने कहा कि कौशल अवसरों का सृजन करते हैं, समाज का निर्माण करते हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं। कौशल प्रतियोगिताएं व्यक्तियों के जीवन में कौशल के महत्व के विषय में जागरूकता बढ़ाने और भविष्य के रोजगारों और चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि आधुनिक युग के कौशलों के सामने आने से स्पष्ट होता है कि कैसे इंडियास्किल्स प्रतियोगिता भविष्य के लिए प्रासंगिक ट्रेडों और रोजगार की भूमिकाओं के लिए अपडेट होती है। उन्होंने कहा कि यह निश्चित रूप से हमें सर्वोच्च स्थान पर रखेगा और अन्य युवाओं को इन कौशलों में व्यवसाय निर्धारित करने पर विचार करने के लिए प्रेरित करेगा।

इंडियास्किल्स 2021 राष्ट्रीय प्रतियोगिता की मुख्य विशेषताएं

एबिलिम्पिक्स - दिव्यांग व्यक्तियों द्वारा कौशल प्रदर्शन : इंडियास्किल्स 2021 राष्ट्रीय प्रतियोगिता में कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, पेंटिंग, कढ़ाई, पोस्टर डिजाइनिंग और फोटोग्राफी सहित 16 कौशलों में दिव्यांगजनों (पीडब्ल्यूडी) द्वारा कौशल प्रदर्शन एबिलिम्पिक्स भी शामिल है। इस तरह की भागीदारी के साथ, इंडियास्किल्स में जमीनी स्तर तक पहुंचने की क्षमता है और यह एक कुशल कार्यबल की मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को दूर करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

प्रदर्शन कौशल : इंडियास्किल्स 2021 में तीन नए कौशलों को योग, जूता निर्माण (चमड़ा) और परिधान निर्माण (चमड़ा), को प्रस्तुत करते हुए इन्हें व्यवसायों में उम्मीदवारों के लिए अवसरों का उल्लेख करने के लिए प्रदर्शित किया गया था।

नव-युग कौशल : सात नवयुग कौशल-रोबोट कार्यप्रणाली एकीकरण, योगशील विनिर्माण, डिजिटल निर्माण, उद्योग 4.0, नवीकरणीय ऊर्जा, मोबाइल एप्लिकेशन विकास और उद्योगिक रूपरेखा तकनीक : को इस वर्ष की प्रतियोगिता में उभरती प्रौद्योगिकियों के साथ पेश किया गया।

महिलाओं की भागीदारी : इंडियास्किल्स न केवल युवाओं के जीवन को बदलने के लिए एक मंच प्रदान करता है बल्कि सभी को समान अवसर भी प्रदान करता है। प्लंबिंग और ताप कौशल में पहली बार किसी महिला उम्मीदवार ने भाग लिया। परिदृश्य और बागवानी कौशल में दो महिला टीमें थीं। विजुअल मर्चेंडाइजिंग भी महिला प्रधान थी। मोबाइल रोबोटिक्स में भी दो लड़कियों की एक टीम ने भाग लिया। जैसे-जैसे हम एक समाज के रूप में आगे बढ़ते हैं, महिलाएं रूढ़ियों को तोड़ रही हैं और सभी प्रकार के कौशल में भाग ले रही हैं। पीएफएलएस के आंकड़े बताते हैं कि कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी 22 प्रतिशत है और अगर महिलाओं को अवसर नहीं मिलते हैं, तो यह देश के आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। हमें गर्व है कि इंडियास्किल्स सभी

को अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए समान अवसर प्रदान रहा है।

इंडियास्किल्स को समर्थन देने वाले उद्योग :

कार्यशालाओं, बूट शिविरों और प्रतियोगिताओं के दौरान उम्मीदवारों के कौशल प्रशिक्षण के लिए बुनियादी ढांचे, विशेषज्ञों और उपकरणों की आवश्यकता का समर्थन करने वाले उद्योग और भागीदार संस्थानों से इस आयोजन को शानदार प्रतिक्रिया मिली है।

भागीदार संस्थान : इंडियास्किल्स राष्ट्रीय प्रतियोगिता का समर्थन करने वाले साझेदार संस्थानों में मारुति सुजुकी, लार्सन एंड टुब्रो, फेस्टो इंडिया, होटल लीला, टोयोटा इंडिया, सीबीआईपी, कॉन्सेप्ट महिंद्रा, पेस्ट्री और एकेडमी ऑफ पेस्ट्री, सरकारी टूल रूम और प्रशिक्षण केंद्र (जीटीटीसी), कर्नाटक जर्मन तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान (केजीटीटीआई) और इंडियन मशीन टूल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईएमटीएमए), बेंगलुरु, आईसीटी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, मुंबई, इंडिया टीवी न्यूज़ (मीडिया पार्टनर के रूप में), और प्लेटोनिया (गेमिंग पार्टनर के रूप में) के साथ-साथ बहुत से अन्य शामिल हैं

इंडियास्किल्स से वर्ल्डस्किल्स तक की यात्रा

इंडियास्किल्स 2021 राष्ट्रीय प्रतियोगिता (7 से 9 जनवरी तक) से पूर्व इसका आयोजन अक्टूबर-दिसंबर के दौरान पूर्व (पटना), पश्चिम (गांधीनगर), उत्तर (चंडीगढ़) और दक्षिण (विशाखापत्तनम) में चार क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं के रूप में किया गया है। अगस्त और सितंबर 2021 के बीच जिला और राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के माध्यम से क्षेत्रीय प्रतिभागियों का चयन किया गया, जिसमें 250,000 से अधिक पंजीकरण दर्ज किए गए। इंडियास्किल्स 2021 नेशनल्स के विजेताओं को चीन के शंघाई में अक्टूबर 2022 को होने वाले वर्ल्डस्किल्स में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए कठोर प्रशिक्षण से गुजरना होगा।

व्हाइट गुड्स (एसी एवं एलईडी लाइट) के लिए पीएलआई स्कीम के लिए फिर से खुली आवेदन विंडो

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने विनिर्माण को केंद्रीय चरण में लाने तथा भारत के विकास को प्रेरित करने और रोजगार सृजन में इसकी भूमिका पर बल देने के लिए प्रधानमंत्री की आत्म निर्भर भारत की अपील के अनुसरण में 7.04.2021 को एयर कंडीशनरों (एसी) तथा एलईडी लाइट के कंपोनेंट तथा असेंबलियों के विनिर्माण के लिए व्हाइट गुड्स के लिए पीएलआई स्कीम को मंजूरी दी थी। इस स्कीम को वित्त वर्ष 2021-22 से वित्त वर्ष 2028-29 तक के सात वर्षों के लिए कार्यान्वित किया जाना है तथा इसका परिव्यय 6,238 करोड़ रुपये है।

इस स्कीम को डीपीआईआईटी द्वारा 16.04.2021 को अधिसूचित किया गया था। स्कीम के दिशानिर्देश 04.06.2021 को प्रकाशित किए गए थे। स्कीम के दिशानिर्देश में कुछ संशोधन 16.08.2021 तथा 24.02.2022 को जारी किए गए थे। आवेदकों को मार्च 2022 तक या मार्च 2023 तक के गेस्टेशन अवधि का चयन करने का लचीलापन दिया गया था। स्कीम के लिए https://pliwhitegoods.ifciltd.com/. के रूप में यूआरएल वाले एक वेब पोर्टल के जरिये 15.06.2021 से 15.09.2021 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए। 52 आवेदकों ने आवेदन किए।

सभी आवेदनों का मूल्यांकन करने के बाद, 4,614 करोड़ रुपये के प्रतिबद्ध निवेश के साथ 42 आवेदकों को पीएलआई स्कीम के तहत लाभार्थियों के रूप में चयन किया गया। चुने गए आवेदकों में 26 आवेदक 3,898 करोड़ रुपये के प्रतिबद्ध निवेश के साथ एयरकंडीशनर विनिर्माण के लिए हैं तथा 16 आवेदक 716 करोड़ रुपये के प्रतिबद्ध निवेश के साथ एलईडी लाइट विनिर्माण के लिए हैं।

अतिरिक्त आवेदकों को उन्हीं शर्तो तथा विनियोजनों पर जैसाकि 04 जून, 2021 को जारी, जैसाकि समय समय पर संशोधित किया जाता है, की स्कीम के दिशानिर्देशों में विनिर्दिष्ट है, के तहत निवेशों के लिए स्कीम दिशानिर्देशों के खंड 9.2 के तहत आमंत्रित किया जाता है। प्रोत्साहन स्कीम की केवल शेष अवधि के लिए उपलब्ध होंगे।

स्कीम के लिए आवेदन विंडो 10 मार्च से 25 अप्रैल, 2022 (सहित) की अवधि के लिए उसी ऑनलाइन पोर्टल पर खुली रहेगी जिसका यूआरएल https://pliwhitegoods.ifciltd.com/. है। आवेदन विंडो बंद होने के बाद कोई भी आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। स्मेकित योजना दिशानिर्देश https://pliwhitegoods. ifciltd.com/ पर तथा https://dpiit.gov.in के रूप में यूआरएल वाले डीपीआईआईटी की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

कॉर्पोरेट जगत

मेटा ने महिलाओं के एसएमबी को सक्षम करने के लिए फिक्की के साथ साझेदारी की

नई दिल्ली, 28 जनवरी। फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का संचालन करने वाली प्रौद्योगिकी कंपनी मेटा ने अपने शी मीन्स बिजनेस कार्यक्रम के तहत भारत में 5 लाख महिलाओं के नेतृत्व वाले छोटे व्यवसायों को सक्षम और समर्थन करने के लिए फिक्की के एम्पॉवरिंग द ग्रेटर 50 प्रतिशत के साथ भागीदारी की है। मेटा के राष्ट्रीय महिला उद्यमिता शिखर सम्मेलन के उद्घाटन के दौरान इसकी घोषणा की गई, ताकि उद्योग संवाद को प्रोत्साहित करने और सभी क्षेत्रों में एमएसएमई का समर्थन करने के लिए कदम उठाए जा सकें। पूंजी और प्रासंगिक डिजिटल उपकरणों तक पहुंच महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों के सामने प्रमुख चुनौतियों के रूप में बरकरार है।

जिंदल स्टेनलेस ने कौशल विकास, उद्यमिता को बढ़ावा देने को लेकर किया समझौता

नई दिल्ली,18 फरवरी। जिंदल स्टेनलेस ने राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान (एनआईएफटीईएम) के साथ एक समझौता किया है। कंपनी ने यह समझौता कौशल विकास, उद्यमिता और शैक्षिक सहयोग की दिशा में काम करने के लिए किया है। इस समझौते के तहत जिंदल स्टेनलेस और संस्थान कई विषयों पर आपसी सहयोग करेंगे। साथ ही खाद्य विज्ञान, इंजीनियरिंग, प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में अनुसंधान और प्रशिक्षण पर भी काम करेंगे। जिंदल स्टेनलेस ने कहा कि कंपनी ने खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में स्टेनलेस इस्पात के महत्व को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। जिंदल स्टेनलेस के प्रबंध निदेशक अभ्युदय जिंदल ने कहा, हम एक ऐसा परिवेश स्थापित करने के मिशन पर हैं जो स्टेनलेस स्टील अनुप्रयोगों में उद्यमिता को बढ़ावा देगा। एनआईएफटीईएम के साथ यह सहयोग खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में युवा पेशेवरों को शिक्षित करेगा।

आर्थिक प्रगति को मिलेगा बढ़ावा

भारत में 6.3 करोड़ से अधिक छोटे व्यवसायों में से लगभग 20 प्रतिशत का स्वामित्व महिलाओं के पास है, जो अधिक लैंगिक समानता लाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। अनुसंधान और अध्ययनों से पता चलता है कि लड़कियों और महिलाओं को ऑनलाइन लाने से आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिल सकता है, बाजारों का विस्तार हो सकता है और सभी के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा के परिणामों में सुधार हो सकता है। आज की लगातार विकसित होती डिजिटल अर्थव्यवस्था में, सूचना और उपकरणों तक पहुंच होना महत्वपूर्ण है जो विकास के विभिन्न चरणों में व्यापार और उद्यमियों के लिए प्रासंगिक हैं। भारत में, फेसबुक का उपयोग करने वाले 52 प्रतिशत छोटे व्यवसायों ने पिछले महीने अपनी बिक्री का कम से कम 25 प्रतिशत डिजिटल तरीके से हासिल किया है।

महिलाओं को होगा लाभ

फिक्की के साथ मिलकर मेटा भारत में महिला उद्यमियों को मेटा के टूल, प्रोग्राम और संसाधनों तक आसान पहुंच प्रदान करके सही डिजिटल टूल और संसाधनों तक पहुंचने में बाधा को दूर करेगा। इस साझेदारी के साथ, मेटा तीन पहलों के माध्यम से अपना समर्थन देगी जिसमें फेसबुक बिजनस कोच के तहत व्हाट्सएप पर मेटा के शैक्षिक चैटबॉट टूल के माध्यम से महिला उद्यमियों को स्वंय से सामने आए पाठों तक पहुंचने का मौका मिलेगा और उन्हें डिजिटल उपस्थिति को स्थापित करने और उसे बनाए रखने का तरीका सीखने में मदद करेगा। ग्रो योर बिजनेस हब, सूक्ष्म, लघु और मध्यम व्यवसायों के लिए प्रासंगिक जानकारी, उपकरण और संसाधनों को खोजने के लिए एक वन स्टॉप ऑनलाइन गंतव्य है ताकि इन व्यवसायों को उनकी विकास आवश्यकताओं के लिए क्यूरेटेड या उनकी जरूरतों के मुताबिक टूल खोजने के लिए और सशक्त बनाया जा सके। इसके अलावा, मेटा का कॉमर्स पार्टनर प्रोग्राम व्यवसायों को डिजिटल उपस्थिति बनाने, सीधे ग्राहक तक

जाने और तकनीक की शक्ति का उपयोग करने में सक्षम बनाएगा। इन व्यवसायों के पास अतिरिक्त लोगों को जोड़ने में समर्थन, प्रशिक्षण और तरजीही मूल्य निर्धारण के साथ, हमारे भागीदारों के माध्यम से खुदरा मूल्य श्रृंखला में उस श्रेणी का सर्वश्रेष्ठ समाधान अपनाने का अवसर होगा। मेटा के साथ साझेदारी पर फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के अध्यक्ष संजीव मेहता ने कहा फिक्की-एफएलओ एम्पावरिंग द ग्रेटर 50 प्रतिशत महिला सशक्तिकरण का एक महत्वाकांक्षी मिशन है, जो महिलाओं की उद्यमिता और निर्णय लेने सम्बंधी कुशलताएं बढ़ाने के लिये है। हमारी सरकार महिलाओं के आगे बढ़ने के लिये प्रगतिशील नीतियों के माध्यम से कई अवसर निर्मित कर रही है। हालांकि महिलाओं द्वारा संचालित विकास पर ध्यान के साथ लैंगिक आधार पर समावेशी राष्ट्र बनाने के साझा सपने को पूरा करने के लिये संयुक्त प्रयासों और कई साझीदारों के साथ भागीदारियों की आवश्यकता है। इंडिया इंक इसके लिये प्रतिबद्ध है। मेटा के साथ हमारी भागीदारी महिलाओं को पूरा जरूरी सहयोग प्रदान कर उन्हें उद्यमिता को अपनाने के लिये प्रोत्साहित करेगी; इस प्रकार आत्मनिर्भर और समावेशी राष्ट्र बनने के सरकार के बड़े एजेंडा के अनुसार मौजूदा प्रयासों का विस्तार होगा।

5 लाख महिलाओं को बनाएंगे सक्षम

फेसबुक इंडिया (मेटा) के उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक अजीत मोहन ने कहा, महामारी दुनिया भर के छोटे व्यवसायों के लिए एक आर्थिक संकट रही है। संसाधनों की कमी के कारण महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं। हमने देखा है कि जब सही साधनों और संसाधनों तक पहुंच का समर्थन किया जाता है, तो इन महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसाय आर्थिक रूप से अधिक मजबूत हो जाते हैं। भारत के महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों की मदद करने के लिए, हम उपयुक्त डिजिटल उपकरणों और संसाधनों के साथ जमीनी स्तर पर 5 लाख महिलाओं को सक्षम करने के लिए फिक्की के साथ साझेदारी कर रहे हैं। यह गुड़गांव में हमारे नए कार्यालय में हमारे सेंटर फॉर फ्यूलिंग इंडियाज न्यू इकॉनमी (सी-फाइन) के माध्यम से अगले 3 वर्षों में 1 करोड़ छोटे व्यवसायों को सक्षम करने की हमारी प्रतिबद्धता का एक हिस्सा है। मेटा ने 2016 में शीमीन्सबिजनेस कार्यक्रम शुरू किया था ताकि उद्यमी महिलाओं के लिए मूल्यवान संबंध बनाने, सलाह साझा करने और एक साथ आगे बढ़ने के लिए एक मंच का निर्माण हो सके। मेटा ने 2016 से दुनिया भर के 38 बाजारों में 15लाख महिलाओं को प्रशिक्षित किया है।

एमएसएमई के प्रशिक्षण के लिए वॉलमार्ट और फ्लिपकार्ट की उत्तर प्रदेश के साथ साझेदारी

नई दिल्ली 06 जनवरी। वॉलमार्ट और फ्लिपकार्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार में सक्रिय एमएसएमई की क्षमता निर्माण के लिए ईकोसिस्टम तैयार करने के उद्देश्य से, राज्य के निर्यात संवर्धन ब्यूरो के साथ विगत 6 जनवरी, 2022 को एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। कंपनी ने कहा कि इस भागीदारी के तहत्, वॉलमार्ट तथा फ्लिपकार्ट, राज्य के एमएसएमई को उनके व्यवसायों को डिजिटाइज़ बनाने में मदद देने के साथ-साथ उन्हें ऑनलाइन रिटेल के ज़रिए पूरे भारत में उत्पाद बेचने में सक्षम बनाएंगे। साथ ही, एमएसएमई को अपनी निर्यात क्षमताएं बढ़ाने के साथ-साथ वॉलमार्ट की ग्लोबल सप्लाई चेन का हिस्सा बनने के अवसर भी मिलेंगे। स्वस्ति के साथ मिलकर वॉलमार्ट वृद्धि सप्लायर डेवलपमेंट प्रोग्राम (वॉलमार्ट वृद्धि) व्यापक लर्निंग प्लेटफार्म मुहैया करवाता है, जिसमें विकास के अवसर, मुफ्त प्रशिक्षण और उद्यमियों तथा छोटे व्यवसायों को विशेषज्ञों से सहायता देना शामिल है। इस कार्यक्रम के तहत्, राज्य में लघु और मंझोले कारोबारों को बढ़ावा देने के लिए ट्रेनिंग सेमिनार तथा मेंटॉरशिप वर्कशॉप्स का भी आयोजन किया जाएगा। वॉलमार्ट वृद्धि ने 2020 में डिजिटल फॉर्मेट अपनाया और इसके बाद, पानीपत, हरियाणा तथा आगरा, उत्तर प्रदेश में वृद्धि ई-इंस्टीट्यूट्स स्थापित किए गए हैं तथा अन्य संस्थानों को खोलने की भी योजना है।

एम.एस.एम.ई. को बिजनेस स्किल्स में प्रशिक्षित करना है लक्ष्य

वॉलमार्ट वृद्धि का लक्ष्य 50,000 भारतीय एमएसएमई को उन बिजनेस स्किल्स में प्रशिक्षित करना है, जिनकी वॉलमार्ट के सप्लायर बनने, फ्लिपकार्ट पर विक्रेता बनने और दूसरे स्थानीय व ग्लोबल मार्केटप्लेस प्लेटफॉर्म पर सफल होने के लिए ज़रूरत पड़ेगी। कई राज्यों में हजारों वृद्धि एमएसएमई ग्रेजुएट्स को उनकी घरेलू क्षमताओं को बढ़ाने और ग्लोबल सप्लाई चेन में भाग लेने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। इसके साथ ही उन्हें

सस्टेनेबल बिजनेस बनाने, रोजगार पैदा करने और निर्यात बढ़ाने में मदद की जा रही है। प्रोग्राम व्यक्तिगत फीडबैक और वन-टू-वन एडवाइज़री सेशन के साथ-साथ ऑनलाइन मॉड्यूल के जरिए डिजिटल तरीके से सीखने का बेहतरीन अनुभव देता है।

ऊंट और बकरी के डिब्बाबंद दूध की बढ़ रही लोकप्रियता

नई दिल्ली 26 दिसंबर। ऊंट और बकरी के दूध के चिकित्सकीय गुणों के साथ ही अन्य दूध की तुलना में अधिक कैल्सियम, प्रोटीन और पोषकतत्व होने के कारण अब देश के साथ ही विदेशों में भी भारत के डिब्बाबंद इन दूध की मांग तेजी बढ़ने लगी है। इनोवेटिव तरीके से ऊंट और बकरी के दूध का देश में पहली बार व्यापार करने वाली स्टार्टअप कंपनी आदविक फूड्स को अगले दो वर्षों में इससे 25 करोड़ रुपये के से अधिक के कारोबाार की उम्मीद है। वर्ष 2016 में श्री हितेष राठी द्वारा स्थापित इस स्टार्टअप के सह संस्थापक श्रेय कुमार ने कहा कि अभी उनकी कंपनी मासिक 20 हजार लीटर ऊंट के दूध की खरीद कर रही है। करीब चार हजार लीटर बकरी के दूध भी खरीदे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 2016 में देश में ऊंट और बकरी के दूध का कारोबार शुरू वाली उनकी एक मात्र कंपनी थी लेकिन अब कई कंपनियां इस क्षेत्र में आ चुकी है।

ऊंट के दूध से बनेगी चाकलेट

पिछले वर्ष कोरोना के बावजूद नौ करोड़ रुपये का कारोबार करने वाली यह कंपनी अब अपने उत्पादों में विविधिता भी ला रही है और ऊंट के दूध के चॉकलेट के साथ ही अन्य उत्पाद भी पेश कर रही है। श्री कुमार ने कहा कि उनकी कंपनी सीधे पशुपालकों से दूध खरीदती है और फिर फ्रीज ड्राइड कर उसकी पैकेजिंग करती है। इसी तरह से बकरी के दूध भी कारोबार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिका सहित दुनिया के कई देशों में ऊंट और बकरी के दूध का कारोबार होता है लेकिन फ्रीज ड्राइड दूध की गुणवत्ता में नाम मात्र की भी कमी नहीं आती है। यह प्रोसेस कुछ महंगा है लेकिन गुणवत्ता के लिये आवश्यक है। उन्होंने दावा किया कि उनकी कंपनी पहली बार देश में फैट (वसा) के स्थान पर प्रति लीटर दूध की खरीद कर रही है।

इसके कारण दूसरी कंपनियों को भी ऊंट और बकरी के दूध का लीटर के हिसाब से भुगतान करना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि जब कारोबार शुरू किया था तब भारत में कोई प्रमाणित कंपनी नहीं थी जो सिर्फ इन दोनों दूध का कारोबार करती हो लेकिन अब कुछ छोटी बड़ी कई कंपनियों ने इसमें प्रवेश किया है। उन्होंने बताया कि अभी 50 रुपये प्रति लीटर पशुपालकों को दिया जा रहा है और एक रुपया प्रति लीटर ऊंट के संरक्षण के लिए दिया जाता है क्योंकि देश में अभी मात्र 2.50 लाख ऊंट के होने का अनुमान है लेकिन इसके दूध के व्यापार को बढ़ाने के लिए इसकी संख्या में बढोतरी की भी जरूरत है। उन्होंने कहा कि अब तक व्यक्तिगत निवेश से इस कारोबार को गति दी जा रही है लेकिन अब जिस तेजी से इसकी मांग बढ़ रही है उसके मद्देनजर निवेशकों की आवश्यकता महसूस की जा रही है और ऐसे निवेशकों की तलाश की जा रही है जो न सिर्फ निवेश करें बल्कि कंपनी को गति प्रदान करने में भी अपने अनुभव और विशेषज्ञता दे सके।

भारत आया पॉशमार्क इंक का सोशल शॉपिंग एक्सपीरियंस

नई दिल्ली,15 सितंबर,2021। महिलाओं, पुरुषों, बच्चों, पालतू जानवरों और घर के लिए नई और पुरानी वस्तुओं की खरीद-बिक्री के लिए अग्रणी सोशल मार्केटप्लेस, पॉशमार्क इंक ने भारत में अपने सरल, सामाजिक और लंबे समय तक कायम रहने वाले शॉपिंग एक्सपीरियंस की शुरुआत का है। कंपनी ने कहा कि आज से भारतीय ग्राहकों को पैसा कमाने, पैसे की बचत करने, दूसरों से जुड़ने और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए पॉशमार्क के आठ करोड़ से ज्यादा उपयोगकर्ताओं की तेजी से विकसित हो रही कम्युनिटी तथा खरीदारी योग्य लाखों क्लोसेट्स के जीते-जागते नेटवर्क में शामिल होने का अवसर मिलेगा। खरीदारों को बेहद आकर्षक, इंटरैक्टिव और सोशल शॉपिंग का अनुभव प्राप्त होगा, जिसे पॉशमार्क पर विक्रेताओं की कम्युनिटी द्वारा लोगों की व्यक्तिगत जरूरतों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

मजेदार और दिलचस्प सोशल टूल्स

पॉशमार्क अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी से सुसज्जित और सही मायने में भारत का पहला सोशल मार्केटप्लेस है, जो किसी के लिए भी अपनी अलमारी से सामानों की बिक्री को सरल एवं आसान बनाता है। यह विक्रेताओं द्वारा बिक्री के शुरू से अंत तक के चरण

के लिए उपलब्ध विभिन्न प्रकार के टूल्स एवं सेवाओं के जरिए संभव होता है, जिसमें सहज तरीके से लिस्टिंग, मर्चेंडाइजिंग, प्रचार-प्रसार, कीमतों का निर्धारण तथा शिपिंग जैसी सेवाएं शामिल हैं। यह बेहद मज़ेदार और दिलचस्प सोशल टूल्स भी उपलब्ध कराता है, जिसमें पॉश पार्टीज़, पॉश स्टोरीज़ और रेपोश शामिल हैं, जो सिर्फ एक क्लिक की मदद से किसी भी वस्तु को फिर से बेचना आसान बनाता है। इसके अलावा, भारतीय कम्युनिटी के सदस्यों को पॉशमार्क की खरीदार सुरक्षा और प्रमाणीकरण सेवाओं के साथ-साथ पॉशमार्क की सरल और आसान शिपिंग सेवा, यानी पॉशपोस्ट से भी फायदा मिलेगा। पॉशमार्क के संस्थापक एवं सीईओ मनीष चंद्रा ने कहा, भारत में पॉशमार्क को लॉन्च करते हुए मैं बेहद उत्साहित महसूस कर रहा हूं, जो दुनिया में सबसे तेजी से विकसित होने वाले ई-कॉमर्स बाजारों में से एक है, साथ ही भारत किफायती तरीके से पैसे खर्च करने की संस्कृति और स्थायित्व के लिए पूरी दुनिया में प्रशंसा पाने वाला देश है। पुरानी दिल्ली के बाजारों में अपना बचपन व्यतीत करने वाले भारतीय के तौर पर, मुझे यह बात पहले से ही मालूम है कि खरीदारी के अनुभव के हिस्से के रूप में एक-साथ आना और जुड़ना कितना महत्वपूर्ण है। मुझे पूरा यकीन है कि भारतीय ग्राहक हमारे सोशल मार्केटप्लेस से जुड़ाव महसूस करेंगे और हमें यहां एक समृद्ध एवं सफल कम्युनिटी के निर्माण का अवसर मिलेगा। कम्युनिटी पर आधारित पॉशमार्क के मार्केटप्लेस के उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़कर आठ करोड़ तक पहुंच चुकी है। फरवरी 2021 में ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च के साथ इसने उत्तरी अमेरिका से बाहर अपनी कम्युनिटी और रणनीति का विस्तार किया। मई 2019 में पॉशमार्क ने अमेरिका के बाहर कनाडा में अपने दायरे का विस्तार करना शुरू किया, और अब कनाडा में स्थित कम्युनिटी के अंतर्गत 25 लाख से अधिक लोग जुड़े हुए हैं, जिन्होंने कुल मिलाकर 50 करोड़ डॉलर से अधिक मूल्य के उत्पादों को सूचीबद्ध किया है। पॉशमार्क का विस्तार करने योग्य मॉडल और बुनियादी ढांचा भविष्य में नए देशों और श्रेणियों में इसे लगातार आगे बढ़ाने में सक्षम बनाता है।

सफल उद्यमी की कहानी, उन्हीं की जुबानी

पहले खाली हाथ थे, अब दो करोड़ से ज्यादा संपत्ति के मालिक हैं सोनू

सोनू लाल राय

प्रोपराइटर, देवकी हार्डवेयर एंड इलेक्ट्रिकल्स, कृषि उपज मंडी के पीछे, हाट बाजार रोड, विजय नगर, जबलपुर, मो. 9907647194

जून 2005 में मैं अपने गांव मेहता घंसौर जिला सिवनी से खाली हाथ जबलपुर आया था। मैंने कई छोटी बड़ी शॉप में 1200, 1500 रुपए प्रति महीना के पारिश्रमिक पर काम किया। काम करते-करते अक्टूबर 2012 में मैंने 25 हजार से 30 हजार रुपए जुटाकर अपनी माताजी के नाम से देवकी हार्डवेयर एंड इलेक्ट्रिकल शॉप नाम की दुकान प्रारंभ की।

परेशानियां कम नहीं : मैं मेहनत से काम में लगा हुआ था की मुझसे दुकान मालिक ने दुकान खाली करवा ली, जिससे मेरी जमी हुई ग्राहकी को नुकसान हुआ। मुझे अपनी दुकान का स्थान बदलना पड़ा और मुझे फिर शून्य से शुरुआत करनी पड़ी जिसमें मैंने समय के साथ बदलाव करते हुए पैंट, प्लंबरिंग मटेरियल, सेनेटरी मटेरियल जोड़कर अपनी मेहनत से आज इस मुकाम पर पहुंचा हूं कि मेरा सालाना टर्नओवर लगभग दो करोड़ रुपए है। इसके अलावा खुद का मकान है जबलपुर में, स्वयं की कार है।

दूसरों का भी बने सहारा : मैंने अपनी दुकान में 3 से 4 लोगों को रोजगार देकर रखा है। यह सब कड़ी मेहनत के कारण हो पाया। मैं मानता हूं कि सच्ची लगन, मृदुल स्वभाव से किसी भी व्यवसाय को आगे बढ़ाया जा सकता है। मुझे इस बात की खुशी है कि मैं 10-15 प्लंबर और 10-15 इलेक्ट्रीशियन की रोजी रोटी का माध्यम बनता हूं। यहां तक की 100 से 200 परिवार मेरे साथ जुड़े हुए हैं जो जिनको मैं उत्तम सुविधा कम खर्च में मुहैया कराने मैं मदद करता हूं।

श्री एस.एल.कोरी, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर, जबलपुर

मध्यप्रदेश

औद्योगिक परिदृश्य

मुख्यमंत्री श्री चौहान से उद्योगपतियों ने की भेंट

भोपाल, गुरूवार, मार्च 3, 2022। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से गुरूवार 3 मार्च, 2022 को मंत्रालय में विभिन्न उद्योगपतियों ने भेंट कर प्रदेश में निवेश के बारे में चर्चा की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने उद्योगपतियों का स्वागत करते हुए प्रदेश में निवेश के लिए उत्साहित किया और राज्य सरकार द्वारा हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान से भेंट करने वाले उद्योगपतियों में एमडी जेएसडब्ल्यू ग्रुप श्री पार्थ जिंदल, जेके टायर्स कॉर्पोरेशन के डायरेक्टर और प्रेसीडेंट श्री अरुण के बजोरिया, पिनेकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड पूना के चीफ मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सुधीर मेहता, अल्ट्राटेक के श्री अतुल डागा एवं फोर्स मोटर के उद्योगपति शामिल थे। चर्चा में बताया गया कि टायर्स की कैपेसिटी को दो गुना करने का प्रयास किया जाएगा। पीथमपुर में इलेक्ट्रिक व्हीकल के प्लांट में 2 हजार करोड़ रुपये के निवेश से लगभग 2 हजार लोगों को प्रत्यक्ष और 3 से 5 हजार लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा।

प्रदेश में तेज औद्योगिकीकरण के लिये विकसित हो रहा ईको सिस्टम

- मंत्री श्री सखलेचा

फर्नीचर मेन्युफैक्चर्स एवं इंदौर टॉयज मेन्युफैक्चर्स एसोसिएशन की हुई परिचर्चा

भोपाल, शनिवार, मार्च 5, 2022। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री श्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा है कि विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए जरूरी है कि उत्पाद गुणवत्ता, आज की जरूरत और नई तकनीक अनुरूप तैयार हो। उत्पादों की लागत में कमी पर भी विशेष ध्यान दिया जाए। राज्य शासन तकनीकी और अन्य जरूरी सुविधाएं देने के लिए हमेशा तत्पर है।

मंत्री श्री सखलेचा शनिवार 5 मार्च, 2022 को इंदौर में फर्नीचर मेन्युफैक्चर्स एवं इंदौर टॉयज मेन्युफैक्चर्स एसोसिएशन द्वारा क्लस्टर विकास, प्रगति एवं प्रयास विषय पर परिचर्चा को संबोधित कर रहे थे। सांसद श्री शंकर लालवानी विशेष रूप से मौजूद थे। मंत्री श्री सखलेचा ने कहा कि प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिये अनुकूल वातावरण है। प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिये इको सिस्टम विकसित किया जा रहा है। उन्होंने उद्योगपतियों का आव्हान किया कि वे आगे आकर प्रदेश में औद्योगिक क्षेत्र में निवेश करें। राज्य सरकार द्वारा उन्हें हर जरूरी सुविधाएं मुहैया करायी जायेंगी। उन्होंने कहा कि उद्यमियों को ऐसी व्यवस्था दी जा रही है, जिससे कि उन्हें एक ही जगह सभी सुविधाएं और सेवाएँ प्राप्त हों। ।

सांसद श्री शंकर लालवानी ने कहा कि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा तेजी से औद्योगिक विकास किया जा रहा है। प्रदेश में स्टार्ट-अप को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। स्टार्ट-अप नीति भी तैयार हो गई है। इंदौर को स्टार्ट-अप की राजधानी बनाने की दिशा में तेजी से प्रयास हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि क्लस्टर्स विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इंदौर के समीप लॉजिस्टिक हब एवं लॉजिस्टिक कार्गो बनाया जा रहा है। इंडस्ट्रीज कॉरिडोर भी बनेगा। अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाने की दिशा में भी कार्यवाही जारी है। उन्होंने कहा कि इंदौर में औद्योगिक विकास के सभी आवश्यक संसाधन एवं सुविधाएं उपलब्ध हैं।

मध्यप्रदेश औद्योगिक संगठन के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार डाफरिया, मध्यप्रदेश लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष श्री महेश गुप्ता, फर्नीचर क्लस्टर के श्री विनोद बाफना, टॉयज क्लस्टर के श्री प्रेम रामचंदानी सहित अन्य उद्यमियों ने संबोधित किया।

जैविक खेती से किसानों की तकदीर बदलेगी - कृषि मंत्री श्री पटेल

हाटपिपल्या में तीन दिवसीय कृषि जैविक मेले का शुभारम्भ

भोपाल, शुक्रवार, मार्च 4, 2022। किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री श्री कमल पटेल ने हाटपीपल्या कृषि उपज मण्डी में तीन दिवसीय कृषि जैविक मेले का शुभारम्भ करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार किसानों की सरकार है। प्रदेश सरकार किसानों के लिए अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। केन्द्र और प्रदेश सरकार किसान भाईयों की आय दोगुना करने के लिए निरंतर कार्य कर रहीं हैं। जैविक खेती से किसान भाईयों की तकदीर बदलेगी। किसान भाई जैविक खेती को अधिक से अधिक अपनायें।

कृषि मंत्री श्री पटेल ने कहा कि देवास जिले में एक लाख 30 हजार हेक्टेयर भूमि पर माइक्रो उद्यम सिंचाई योजना को प्रदेश सरकार ने मंजूर किया है। इससे विकासखण्ड बागली और हाटपिपल्या के किसान लाभान्वित होंगे। योजना से देवास विकासखण्ड के भी कुछ गांवों के किसान लाभान्वित होंगे। उन्होंने

आव्हान किया कि किसान गौवंश को पालें और गोबर एवं गौ-मूत्र का प्राकृतिक खेती में उपयोग करें। किसान भाई एफपीओ बनायें। किसानी के साथ-साथ व्यापार भी करें। कृषि मंत्री श्री पटेल ने कृषि जैविक मेले में लगाये गये जैविक उत्पादों के स्टॉलों का अवलोकन भी किया।

मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए केज कल्चर प्रणाली का उपयोग करें

मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने मछुआ कल्याण और मत्स्य विकास विभाग की समीक्षा की

भोपाल, शुक्रवार, मार्च 4, 2022। जल-संसाधन, मछुआ कल्याण और मत्स्य विकास मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने भोपाल में निवास स्थित कार्यालय में विभागीय समीक्षा की।

प्रमुख सचिव श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव, संचालक मत्स्योद्योग श्री भरत सिंह, प्रदेश मत्स्य महासंघ के प्रबंध संचालक पुरुषोत्तम धीमान सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

मंत्री श्री सिलावट ने विभागीय योजनाओं में गति लाने के निर्देश दिए। उन्होंने मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण के जलाशयों में मत्स्य पालन किए जाने के संबंध में चर्चा की। साथ ही बड़े जलाशयों में केज पद्धति से मछली पालन को बढ़ावा देने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए।

मंत्री श्री सिलावट ने मछुआ कल्याण नीति 2008 एवं सहकारी समितियों को पट्टा आवंटन की प्रक्रिया में संशोधन के संबंध में अब तक किए गए कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने मछुआ सहकारी समितियों में नए सदस्यों को जोड़ने की बात कही। उन्होंने मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए सभी जिले के अधिकारियों को बालाघाट जिले के पैटर्न पर काम करने को कहा। साथ ही 89 आदिवासी विकासखंड में मत्स्य पालन हेतु कार्य-योजना बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने मत्स्योत्पादन बढ़ाने के लिए जन-भागीदारी बढ़ाने और अक्रियाशील समितियों पर कार्रवाई करने के निर्देश दिये। मंत्री श्री सिलावट ने कहा कि मछुआ क्रेडिट कार्ड का लक्ष्य समय-सीमा में पूरा किया जाए।

बांस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए तीन जिलों का रोडमेप हुआ तैयार

- वन मंत्री डॉ. शाह

भोपाल, मंगलवार, मार्च 1, 2022। वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा है कि प्रदेश में बांस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए राज्य बांस मिशन में हरदा, देवास और रीवा जिले का चयन कर 5 साल का रोडमैप तैयार किया गया है।

वन मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि एक जिला-एक उत्पाद योजना में इन तीनों जिलों में 12 हजार 324 हेक्टेयर क्षेत्र में बांस-रोपण के साथ साढ़े तीन हजार किसान और बांस शिल्पियों को कौशल उन्नयन का प्रशिक्षण दिलाया जाएगा। साथ ही इन जिलों में बांस प्र-संस्करण की 11 इकाइयां लगाई जाकर बांस के विपणन में सहयोग दिलाया जाएगा।

वन मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि वन विभाग द्वारा वन क्षेत्रों में किए जा रहे पौध-रोपण क्षेत्र की फेंसिंग के लिए अब सीमेंट पोल के स्थान पर बांस के पोल्स लगाने का निर्णय लिया गया है।

अनुपजाऊ 6214 हेक्टेयर में बांस-रोपण में दिया जाएगा अनुदान

वन मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि तीनों जिलों में किसानों को प्रोत्साहित कर अनुपाजाऊ निजी भूमि पर 5 वर्ष में 6214 हेक्टेयर में बांस-रोपण के लिये अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। इससे उनके आर्थिक स्तर में वृद्धि हो सकेगी। उन्होंने कहा कि बांस उत्पादों को बेहतर कीमत उपलब्ध कराने के लिए बांस बाजार और एम्पोरियम की मदद भी ली जाएगी।

काष्ठ आधारित उद्योग लगाना होगा अब आसान : वन मंत्री डॉ. शाह

काष्ठ चिरान अधिनियम में हुआ जरूरी बदलाव

भोपाल, शनिवार, दिसम्बर 25, 2021। प्रदेश में काष्ठ आधारित उद्योगों को स्थापित करने और काष्ठ शिल्पियों को स्व-रोजगार के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध कराने के लिए राज्य शासन ने एक बड़ा कदम उठाया है। वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने मध्यप्रदेश काष्ठ चिरान (विनिमयन) अधिनियम 1984 की धारा 4 में हुए संशोधन को ऐतिहासिक बताया है। वन मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि अधिनियम में किए संशोधन के बाद काष्ठ आधारित व्यवसायिक गतिविधियाँ बढ़ेगी, जिससे सरकार को मूल्य संवर्धन और जी.एस.टी से अतिरिक्त राजस्व प्राप्त हो सकेगा। निजी क्षेत्रों के किसान वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित होने के साथ ही उनकी आय में भी बढ़ोत्तरी होगी। उन्होंने बताया कि प्रदेश की 30 फीसदी वन भूमि है, जिनमें काष्ठ उत्पादन गतिविधियों से वनवासियों को रोजगार के साथ राज्य सरकार को 800 करोड़ की आय और 160

करोड़ की जी.एस.टी भी प्राप्त होता है।

यह रहेगी छूट

काष्ठ चिरान अधिनियम की धारा-4 में हुए संशोधन के बाद अब 30 से.मी. से कम व्यास के चक्रीय आरा-मशीन के लिए लायसेंस लेना आवश्यक नहीं रहेगा। छोटे शिल्पियों को काष्ठ की फिनीशिंग और फैशनिंग में उपयोग करने के लिए वन विभाग से लायसेंस लेने की जरूरत नहीं होगी। चिरी हुई लकड़ी, बेंत, बांस, प्लायवुड, विनियर या आयातित लकड़ी इस्तेमाल करने वाले उद्योगों को लायसेंस लेने की आवश्यकता नहीं होगी। साथ ही प्र-संस्करण संयत्रों को इस अधिनियम में किए बदलाव के बाद अनुज्ञप्ति लेने की छूट रहेगी।

रेरा अधिनियम का उद्देश्य आवंटितियों के हितों का संरक्षण

भोपाल, शुक्रवार, मार्च 4, 2022। रेरा अधिनियम का उद्देश्य कॉलोनाइजर के साथ ही रियल स्टेट क्षेत्र में आवंटितियों के हितों का संरक्षण करना है। वर्ष 2016 तक आवंटितियों को अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए कॉलोनाइजर के विरूद्ध दीवानी एवं उपभोक्ता न्यायालयों में जाना पड़ता था। मध्यप्रदेश में रेरा नियम 2017 से लागू हुआ। इनमें वर्ष 2021 में आंशिक सुधार कर और अधिक सुसंगत बनाया गया है।

सचिव रेरा श्री नीरज दुबे ने बताया है कि परियोजना की लागत में भूमि महत्वपूर्ण होती है, अंततः भूमि की लागत एवं परियोजना स्वीकृति के लिए किये गए व्यय का लाभ कॉलोनाइजर को प्राप्त होता है। यह प्रावधान नियमों में पहले से हैं।

परियोजना का खाता खोलना जरूरी

परियोजना के नाम से खाता खोला जाना, इस अधिनियम का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है। आवंटितियों से प्राप्त होने वाली 70 प्रतिशत राशि इस खाते में जमा की जाती है। यह राशि इसलिए जमा की जाती है कि अगर कॉलोनाइजर समय पर परियोजना का कार्य पूरा नहीं करता है तो रेरा इस राशि का उपयोग काम पूरा कराने में कर सके। हाल ही में भोपाल के एक बड़े कॉलोनाइजर द्वारा इस खाते में परियोजना की 70 प्रतिशत राशि जो लगभग 80 करोड़ रुपए थी, को गैर-परियोजना उद्देश्य के लिए व्यय कर दिया। रेरा ने इस प्रकरण में संबंधित कॉलोनाइजर के विरूद्ध लगभग 4 करोड़ 50 लाख रुपए का अर्थदण्ड लगाया है। साथ ही परियोजना का पंजीयन भी निरस्त किया है।

रेरा जहां एक और कॉलोनाइजर से नियमानुसार कार्य की अपेक्षा रखता है, वहीं दूसरी और आवंटितियों के हितों के संरक्षण का दायित्व भी निभाता है। इस वर्ष 41 प्रकरणों में कारण बताओं सूचना-पत्र जारी किए गए हैं। रेरा के इस कदम से जहाँ आवंटितियों को संरक्षण प्राप्त होगा, वहीं दोषी कॉलोनाइजर के नए परियोजनाओं में पंजीयन न करने का निर्णय लिया जा सकेगा।

रेरा में गत वर्ष की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक हुआ पंजीयन

नियमों को स्पष्ट एवं सुसंगत बनाने से रेरा में कॉलोनाइजर्स का बढ़ा विश्वास

भोपाल, मंगलवार, मार्च 1, 2022। रेरा में नियमों को स्पष्ट एवं सुसंगत बनाने से कॉलोनाइजर्स का विश्वास बढ़ा है। अब बड़े शहरों के साथ ही परियोजना पंजीयन के लिए डिण्डौरी, झाबुआ, कटनी, अलीराजपुर, राजगढ़, बैतूल एवं शाजापुर जैसे छोटे नगरों के भी आवेदन-पत्र प्राप्त हो रहे हैं। इसी का परिणाम है कि रेरा के परियोजना पंजीयन कार्य में इस वर्ष विगत वर्ष की तुलना में आशातीत वृद्धि हुई है। वर्ष 2020-2021 में पंजीकृत परियोजनाओं की संख्या 232 थी, जबकि इस वर्ष अभी तक 352 परियोजनाओं का पंजीयन किया जा चुका है। यह विगत वर्ष की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक है। यह इसलिए भी उल्लेखनीय है कि वित्तीय वर्ष 2021-2022 में कोरोना की दूसरी एवं तीसरी लहर के कारण भी कार्यालयीन कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव रहा है।

सचिव भू-सम्पदा विनियामक प्राधिकरण (रेरा) श्री नीरज दुबे ने बताया है कि रेरा अधिनियम प्रभावशील होने के समय पूर्व से चल रही परियोजनाओं में संक्षिप्त परीक्षण के बाद लगभग 1706 पंजीयन हुए थे। बाद के लगभग चार वर्षों में लगभग 1116 और कुल 2822 परियोजनाएं पंजीकृत हुई हैं। चार वर्ष के नवीन परियोजना पंजीयन का औसत लगभग 279 है, जबकि अकेले पांचवें वर्ष में पंजीयन की संख्या बढ़कर 352 हो गई है।

परियोजना पंजीयन के लिए प्राप्त होने वाले आवेदन-पत्रों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है। पहले इसका औसत लगभग 35-40 प्रतिमाह होता था, जबकि अब 70 का औसत प्रतिमाह आ रहा है। वर्ष 2021-22 के अप्रैल में 25, मई 8, जून 35, जुलाई 37, अगस्त 52, अक्टूबर 64, नवम्बर 65, दिसम्बर 62, जनवरी 2022 में 60 एवं फरवरी में 50 आवेदन-पत्र प्राप्त हुए हैं। विगत वर्षों में सिर्फ फरवरी 2021 में सर्वाधिक 55 आवदेन-पत्र प्राप्त हुए थे।

पूँजी निवेश में तेजी लाने हेतु लघु एवं मध्यम उद्यमों को सहायता (एराइज़)

उद्देश्य

वित्तीय सहायता ब्राउनफील्ड / मौजूदा इकाइयों को अपने उसी व्यवसाय में विस्तार / आधुनिकीकरण / पूँजीगत व्यय करने हेतु प्रदान की जाएगी।

मुख्य विशेषताएं

- आकर्षक ब्याज दर
- 25% तक एफडी (ब्याजयुक्त) के आधार पर ₹3 करोड़ तक के ऋणों हेतु 100% वित्तपोषण
- शीघ्र मंजूरी
- सावधि ऋण / विदेशी मुद्रा सावधि ऋण की सुविधा उपलब्ध

पात्रता

- न्यूनतम 2 वर्ष का परिचालन और लेखापरीक्षित लेखे (कम से कम पूरे दो वर्ष के)
- पिछले लेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों में नकद लाभ
- मानक मानदंड लागू होंगे (सिबिल/सीएमआर, सम्यक
- सावधानी आदि)

लक्ष्य समूह • उच्च वृद्धि वाले तथा प्राथमिकता क्षेत्रों (सनराइज़ क्षेत्रों सहित) के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम

ऋण राशि • ₹ 700 लाख तक का सावधि ऋण परंतु परियोजना लागत के 80% से अनधिक

योजना की वैधता • मंजूरियों के लिए 31 मार्च 2022 तक

ब्याज दर और चुकौती

- ब्याज दर - 5.5% से 6.8% वार्षिक पहले वर्ष के लिए, जिसे बाद में पुनर्निर्धारित किया जाएगा (आंतरिक रेटिंग के अनुसार)
- चुकौती - सामान्यत: 7 वर्ष तक अधिस्थगन - 2 वर्ष तक

Assistance to Re-Energize Capital Investments by SMEs (ARISE)

Objective:

- Financial assistance shall be provided to brownfield / existing entities for undertaking expansion / modernization / capital expenditure in the same line of business.

Key Features:

- Attractive RoI
- 100% financing for loans upto 3 crore, based on FD upto25% (interest bearing)
- Quicker sanction
- Facility of TL/FCTL available

Eligibility:

- Minimum two years of operation and audited accounts [for at least two full years]
- Cash profits in last audited financial results
- Standard Norm apply (CIBIL/CMR, due diligence etc.

Target Group: • MSMEs engaged in high growth and priority sectors (including sunrise sectors)

Loan Amount: • TL upto 700 Lakh, subject to maximum of 80% of the project cost

Validity of Scheme:

- Upto March 31, 2022 for sanctions

Interest Rate and Repayment:

- Interest Rate- 5.50% to 6.80% pa for first year with reset applicable thereafter (as per internal rating)
- Repayment - Generally upto 7 years moratorium- upto 2 years

नए उद्यमों में पूँजीगत आस्तियों की खरीद हेतु सिडबी की विशिष्ट सहायता (स्थापन)

उद्देश्य

- वित्तीय सहायता ग्रीनफील्ड इकाइयों को नई इकाइयों की स्थापना के लिए दी जाएगी, जिसमें शामिल हैं-
  - › भूमि की खरीद
  - › फैक्टरी भवन का निर्माण
  - › उपकरण, प्लांट, एमएफए आदि की खरीद

मुख्य विशेषताएं

- आकर्षक ब्याज दर
- शीघ्र मंजूरी

पात्रता

- नई इकाइयाँ अथवा ग्रीनफील्ड इकाइयाँ पात्र हैं
- प्रवर्तक को कम से कम 5 वर्ष का व्यवसाय-अनुभव होना चाहिए।
- प्रवर्तक अंशदान - न्यूनतम 25%
- मानक मानदंड लागू होंगे (सिबिल/सीएमआर, सम्यक सावधानी आदि)

ऋण राशि

- ₹ 2000 लाख तक का सावधि ऋण परंतु परियोजना लागत के 75% से अनधिक

योजना की वैधता

- मंजूरियों के लिए 31 मार्च 2022 तक

लक्ष्य समूह

- उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत निर्धारित क्षेत्रों (भारत सरकार द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार), उच्च वृद्धि / सनराइज क्षेत्रों तथा अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में इकाइयाँ स्थापित करने वाले सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम

ब्याज दर और चुकौती

- ब्याज दर - 6.00% से 7.30% वार्षिक पहले वर्ष के लिए, जिसे बाद में पुनर्निर्धारित किया जाएगा (आंतरिक रेटिंग के अनुसार)
- चुकौती - सामान्यत: 7 वर्ष तक
  अधिस्थगन - 2 वर्ष तक

SIDBI Thematic Assistance for Purchase of capital Assets in New Enterprises (STHAPAN)

Objective:

- Financial assistance to Greenfield Units for setting up new units which includes:
  - * purchase of land,
  - * construction of factory building
  - * purchase of equipment, plant & MFA etc.

Key Features:

- Attractive RoI
- Quicker sanction

Eligibility:

- New Entities or Greenfield units are eligible
- Promoters should have minimum 5 years of business experience
- Promoters Contribution - Minimum 25%
- Standard Norm apply (CIBIL/CMR, due diligence etc.

Loan Amount:

- TL upto 2000 Lakh, subject to maximum of 75% of the project cost

Validity of Scheme:

- Upto March 31, 2022 for sanctions

Target Group:

- MSMEs setting up units in identified sectors under Production Linked Incentive Scheme (as per the list identified by GoI), high growth / sunrise sectors and other important sectors

Interest Rate and Repayment:

- Interest Rate- 6.00% to 7.30% pa for first year with reset applicable thereafter (as per internal rating)
- Repayment - Generally upto 7 years moratorium-upto 2 years

सुर्खियों में सेडमैप

पीपुल्स समाचार भोपाल, बुधवार, 09 मार्च 2022 | 05

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शहर में विभिन्न जगहों पर आयोजित हुए कार्यक्रम

शक्ति का सम्मान; महिलाएं कमजोर नहीं, खुद के दम पर हर फील्ड में बढ़ रहीं आगे

रिपोर्टर • IamBhopal

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के अवसर पर शहर में कई आयोजन हुए। इसमें उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप), ऑरिएंटल ग्रुप, रवींद्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी, आरडी मेमोरियल, सेंट जेवियर को-एड स्कूल और अन्य संस्थानों में आयोजन हुए। सभी कार्यक्रमों में महिलाओं के उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। इसमें स्कूल से लेकर यूनिवर्सिटी में सम्मान समारोह आयोजित हुए।

महिला से बड़ा दुनिया में कोई उद्यमी नहीं: डॉ. मनीषा श्रीवास्तव

पिता से मिली आजादी के कारण पूरा हुआ स्वप्न: चंदना कुमारी

पीपुल्स समाचार

Date 10 Mar, 2022 - Newspaper - page5

महिला उद्यमियों का विकास होना देश के विकास के समान है: ऊषा ठाकुर

पत्रिका

Bhopal Wednesday 09/03/2022

महिलाओं को आगे बढ़ाने में पुरुषों की भी अहम भूमिका: डीआईजी मिश्रा

सच कहने का साहस और सलीका

राज एक्सप्रेस

ग्रामीण विकास से आत्मनिर्भर होगा देश: नन्दिता

सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी में विशिष्ट अतिथि

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 7 मार्च 2022 को सैम ग्लोबल यूनिवर्सिटी में उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) की कार्यकारी संचालक श्रीमती अनुराधा सिंघई विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहीं।

नव भारत

सैड-मैप में महिला सशक्तिकरण

भोपाल, 8 मार्च. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सेंटर ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप सैडमैप में विशिष्ट अतिथि डीआईजी भोपाल रुचिवर्धन मिश्र ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि महिला दिवस महिलाओं का नहीं सभी नागरिकों का दिवस है. यह अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं के सशक्तिकरण और उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है. मध्यप्रदेश की धरा महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश को बनाने में अपना योगदान दे रही है. इस अवसर पर रक्तदान संस्था की प्रमुख और एम्स में सचिव डॉ. मनीषा, प्रसिद्ध ख्याति प्राप्त चित्रकार श्रीमती वंदना के मुख्य आतिथ्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला सशक्तिकरण पर कार्यक्रम में सहभागिता की. डीआईजी श्रीमती रुचि वर्धन ने कहा कि हमें अनुशासित रहकर अपने-अपने क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां अर्जित कर देश और प्रदेश को एक सूत्र में पिरोना है, डॉ. मनीषा श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में कहा कि महिलाओं को अपने क्षेत्र में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, यही चुनौतियां उन्हें मजबूत बनाती है. उन्होंने कहा कि यह दिन महिलाओं के लिए ऐतिहासिक है.

पीपुल्स समाचार www.peoplessamachar

सिटीएक्टिविटी

सेडमैप के कैंप में 27 लोगों ने किया रक्तदान

भोपाल। उद्यमिता विकास केंद्र मप्र (सेडमैप) अरेरा हिल्स स्थित उद्यमिता भवन में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। कार्यकारी संचालक अनुराधा सिंघई ने कहा कि सभी स्वस्थ व्यक्ति रक्तदान कर सकते हैं। इसमें 27 से अधिक लोगों ने रक्तदान किया। मप्र औद्योगिक विकास निगम तथा निर्वाचन आयोग के अधिकारियों-कर्मचारियों ने भी सहयोग किया। हमीदिया अस्पताल के डॉ. अनुराग गुप्ता, डॉ. अनुभूति जैन, फरीद खान, श्याम पटेल, पंकज बैरागी, मनीष और नारायण इस टीम में शामिल रहे।

दैनिक जागरण — भोपाल, 09 मार्च 2022 www.djmp.in/epaper

महिलाओं को सेडमैप ने किया सम्मानित

जासं। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 के अवसर पर उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप) की कार्यकारी संचालक अनुराधा सिंघई ने डीआईजी, पुलिस रुचि वर्धन मिश्रा, एम्स की अधीक्षिका डॉ. मनीषा श्रीवास्तव एवं अंतर्राष्ट्रीय कलाकार वंदना कुमारी को उत्कृष्ट कार्य के जरिए समाज में अपना उल्लेखनीय योगदान देने के लिए सम्मानित किया। श्रीमती सिंघई ने कहा कि समाज को नई चेतना से अपने कार्यों के द्वारा जागृत करने वाली महिला अधिकारियों को सुनना और उनका सम्मान करना अपने आप में गौरवपूर्ण क्षण है।

स्वामी उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप), भोपाल के लिए आर.के. सेक्यूप्रिंट प्रा.लि. पिपलानी, भोपाल मप्र द्वारा मुद्रित और **उमाशंकर दुबे, उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप), भोपाल** द्वारा प्रकाशित तथा आर.के. सेक्यूप्रिंट प्रा.लि. पिपलानी, भोपाल से मुद्रित और **उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश (सेडमैप)**, 16-ए, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011 मध्यप्रदेश से प्रकाशित। संपादक : **उमाशंकर दुबे**